दिसम्बर 2025 रु.20/-

गाँव गिराँव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

मोदी मैजिक : एनडीए राज
नीतीश को ताज

विश्वास करेंगे एक बार, इस्तेमाल करेंगे बार-बार...

SRI HARIVANSH ENTERPRISES

Corp. Of Goel Tower Anura Kala, Chinhat Lucknow-226028 (U.P.)
Production Unit: Sandauli Umarpur, Safedabad, Barabanki - 225003 (U.P.)
Customer Care No.: +91 9415867528

गाँव गिराँव

वर्ष : 15, अंक : 1, दिसम्बर 2025, पृष्ठ 44, मूल्य : 20/-

सलाहकार सम्पादक - योगेन्द्र नारायण, दिनेश चंद्र
सम्पादक - श्रीधर द्विवेदी
समाचार सम्पादक - डॉ. पंकज कुमार ओझा
प्रबन्ध सम्पादक - गुरु प्रसाद शुक्ल
सहायक सम्पादक - कमलेश पाण्डेय, रविन्द्र प्रताप सिंह गोपाल मौर्य, महेश कुमार यादव
उप सम्पादक - वीरेन्द्र कुमार विन्द नागेश्वर सिंह, रामप्रसाद यादव
विज्ञापन प्रबन्धक - उमेश चन्द जैन
डिजिटल एग्जिक्यूटिव - इ. अमित पटेल
लेआउट व डिजाइन - मंजीत कुमार गुप्ता

नेशनल मीडिया एक्जक्यूटिव
महेन्द्र प्रसाद गांधी-9415874679

राज्य प्रभारी - दिल्ली - यश सिंह 8882678591
चंडीगढ़ - ओ.पी. राय 8009069795
लुधियाना - गुरदीप सिंह-9815453958
पटना - अमित मिश्रा- 9263056540
पूर्वी उ0प्र0 - प्रदीप राय- 8546055042
पश्चिमी उ0प्र0- अनिल कुमार बाजपेयी-8052159000
लखनऊ - डा. विजयकांत पाण्डेय - 8795506060
प्रयागराज- मनोज पाण्डेय - 9140410568
मिर्जापुर - राजेश कुमार मिश्र- 6393139610
म0प्र0 - प्रहलाद पटेल - 7566126043
रीवा- नन्दलाल पाण्डेय- 9981962439

विशेष प्रतिनिधि- अरविन्द सिंह (वाराणसी) 9919442266 कालीदास त्रिपाठी (चन्दौली) 9838454120, ओमकार नाथ- 9415698795, अशोक जायसवाल- 9451891800, मनोज यादव- 9598155820

कार्पोरेट आफिस

गाँव गिराँव मीडिया प्रा0लि0
मिथिलेश कुमार (ब्यूरो चीफ)
सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309
मो0 - 9811191394, 9910768136
ई-मेल – gaongiraw@gmail.com
बेवसाइट - www.gaongiraw.in

मुम्बई ब्यूरो- 704/25 सोनम मारी गोल्ड, राम मन्दिर के पास, ओल्ड गोल्डेन नेस्ट-3 मीरा भयन्दर रोड भयन्दर, (ईस्ट) थाणे महाराष्ट्र-401105 8850955358, 9930046946

हेड ऑफिस पत्राचार- 13, दीपशिखा अपार्टमेंट गांधीनगर, सिगरा, वाराणसी, उप्र-221010 मो.- 9450825966, 7525825966

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीधर द्विवेदी द्वारा युग सत्य प्रिंटिंग प्रेस, शिवपुर वाराणसी उ0प्र0 से मुद्रित व शि.15/137 भरलाई शिवपुर, वाराणसी (उ0प्र0) 221009 से प्रकाशित।

RNI No - UPHIN/2012/41296

भीतर के पन्नों पर

विचार बिन्दु :
एसआईआर ऐसा मुद्दा नहीं जिस पर बहस की जरूरत हो... 2
कवर स्टोरी :
मोदी मैजिक : एनडीए राज, नीतीश को ताज 3-9
कहानी
अनमोल उपहार 10-11
गाँव की गलियों से 12-13
संस्कारी पुड़िया 14-15
लघुकथा
अशोक वाधवाणी की दो लघुकथाएं 16
पवन शर्मा की दो लघुकथाएं 17
कविता 18
व्यंग्य
ईमानदारों का सम्मेलन 19
मुद्दा
स्मार्ट मीटर की मार्फत... 20-21
शख्सियत
अजय शेखर : सच्चे लोहियावादी 22-25
पुस्तक समीक्षा
लोक भूषण की मानस प्रसंग 26
पथ के पन्ने 27
स्मृति शेष 28-30
पर्यटन
बादलों का घर मेघालय 31
ब्यूटी फैशन
सर्दियों में बालों की.. 32
उद्योग
मधुमक्खी इकाई की स्थापना 33-35
ज्योतिष 36
स्वास्थ्य-
डिजिटल युग में पशु चिकित्सा 37-38
खेल-खिलाड़ी 38
सिने-जगत 40

पाठकों से– पत्रिका के लिए आपके प्रतिक्रिया, सुझाव, विचार आमंत्रित हैं। ई मेल–gaongiraw@gmail.com पर भेजें। – सम्पादक

नोट– पत्रिका में प्रकाशित लेख, विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में दिये गये पद अवैतनिक हैं। समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र वाराणसी न्यायालय क्षेत्र में ही मान्य होगा।

एसआईआर ऐसा मुद्दा नहीं जिस पर बहस की जरूरत हो...

आनन फानन में चल रहे इस कार्यक्रम में बहुत से बीएलओ ड्यूटी पर सतर्क नहीं है तो कहीं महिला बीएलओ घर बैठे फार्म बॉट रही हैं। पोलिंग बूथों पर कोई टीम सही ढंग से काम नहीं कर रही है। निश्चित रूप से यह काम संतोष जनक नहीं होने वाला है। वोटर लिस्ट की हकीकत यह है कि ग्राम पंचायतों, नगर पंचायतों के चुनाव में वोटर लिस्ट, विधानसभा और लोकसभा चुनावों के वोटर लिस्ट से भिन्न हो जाती है एक वोटर लिस्ट आज तक नहीं बना पाया चुनाव आयोग।

विपक्ष के पास राष्ट्रीय सुरक्षा और हित के लिए मुद्दों की कमी नहीं है फिर भी वह केवल मतदाता गहन पुनरिक्षण पर बहस चाहता है जो औचित्यहीन है। देश के भीतर फर्जी मतदान की प्रक्रिया चल रही है तो इसको ठीक करने के लिए मतदान पत्रों का पुनरिक्षण आवश्यक है। यह कार्य पहले नहीं हुआ जो होना चाहिए था। सीमावर्ती राज्यों में लम्बे समय से निवास कर रहे घुसपैठियों को नागरिक मानकर देश में मताधिकार देना कहीं से भी उचित नहीं समझा जा सकता। मगर वोट की राजनीति करने वाले इस पर ध्यान नहीं दिये। अब इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

मतदाता गहन पुनरिक्षण में आ रही खामियों को दूर करने के लिए चुनाव आयोग को सुझाव देने के लिए राजनीतिक दलों के साथ केन्द्र, राज्य, जिला स्तरीय बैठकें आयोजित की गयी जिसमें सुझाव आमंत्रित किए गए थे। अब आगे की चल रही प्रक्रिया में शामिल होकर आ रही खामियों को दूर करने के बजाय अनावश्यक चर्चा की मांग की जा रही है। उत्तर प्रदेश में पुनरिक्षण कार्य में लगे कर्मचारियों पर समय के अभाव में अनावश्यक दबाव बनाने के कारण कुछ अप्रिय घटनाएं घटी है जो चिन्तनीय है। चुनाव आयोग समय बढ़ाने के साथ साथ पोलिंग बूथों पर सुरक्षा की व्यवस्था उसी तरह करे जैसे चुनाव के समय होता रहा है। खानापूर्ति करने से चुनाव आयोग की मंशा पूरी नहीं होगी। जिन राज्यों में पंचायत चुनाव, विधानसभा चुनाव सन्निकट हैं उनमें पहले भले ही यह प्रक्रिया चल रही है मगर कोई राज्य वंचित नहीं रहना चाहिए। आनन फानन में चल रहे इस कार्यक्रम में बहुत से बीएलओ ड्यूटी पर सतर्क नहीं है तो कहीं महिला बीएलओ घर बैठे फार्म बॉट रही हैं। पोलिंग बूथों पर कोई टीम सही ढंग से काम नहीं कर रही है। निश्चित रूप से यह काम संतोष जनक नहीं होने वाला है। वोटर लिस्ट की हकीकत यह है कि ग्राम पंचायतों, नगर पंचायतों के चुनाव में वोटर लिस्ट, विधानसभा और लोकसभा चुनावों के वोटर लिस्ट से भिन्न हो जाती है एक वोटर लिस्ट आज तक नहीं बना पाया चुनाव आयोग। दावे आपत्तियों का भी ठीक ढंग से निस्तारण नहीं हो पाता। आनलाइन आवेदन करने पर वोटर कार्ड आ गया पर वोटर लिस्ट में नाम शामिल नहीं हुआ। बीएलओ को फार्म भर कर देने के बाद भी नाम नहीं जुड़ा। ऐसी शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई नहीं हुई तो इस गहन पुनरिक्षण का क्या औचित्य है। वही सरकारी अमला काम कर रहा है जिसके कारण ऐसे प्रकरण यक्ष प्रश्न बने हैं। काम करने के बजाय खानापूर्ति की आदत समस्या की जड़ है। चुनाव आयोग को चाहिए कि पर्याप्त समय देकर खुद इस गहन पुनरिक्षण कार्य को सही ढंग से विना किसी दबाव में सम्पन्न कराये जैसे इस कार्य के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

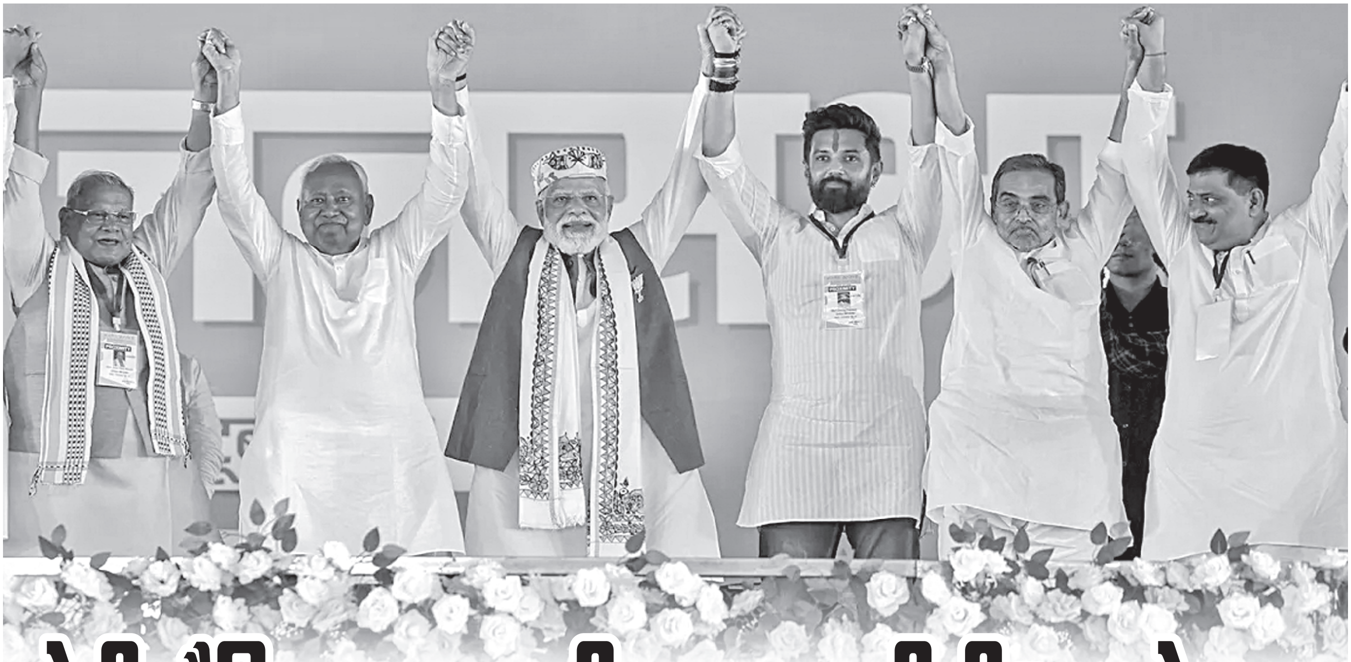

मोदी मैजिक : एनडीए राज, नीतीश को ताज
बिहार ने फिर सुशासन बाबू को दिया जनादेश

बिहार चुनाव में रोजगार, पलायन, शिक्षा, स्वास्थ्य, आरक्षण आदि के मुद्दे गौण हो गए। चुनाव पर यथास्थितिवाद प्रभावी रहा। वही नितीश, वही सम्राट चौधरी और वही विजय कुमार सिन्हा सिंहासन पर विराजमान हो गए। 20 साल की नितीश की सत्ता का दुष्प्रभाव भी जनता के मन पर नहीं देखा गया। जनता ने राजनीतिक दलों द्वारा उठाए गए दीर्घकालिक मुद्दों के बदले 10,000 रुपए को महत्व दिया। प्रस्तुत है हरिमोहन मिश्र की रिपोर्ट।

तय था कि बिहार चुनाव का नतीजा समूचे देश की राजनैतिक धारा का रुख मोड़ने-बदलने वाला है। तैयारी भी हर तरफ से ऐसी थी, जो हाल के दौर में कम या नहीं देखी गई। कुछ तो यकीनन ऐतिहासिक थी, सत्तारूढ़ और विपक्ष की ओर से ही नहीं, अंपायर ने तो जैसे खुद को इतिहास में दर्ज कराने की जिद ही ओढ़ ली कि हम ही सबसे संवैधानिक, हम ही सबसे सही। और यही बड़ा मुद्दा बन गया। बाकी राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक मुद्दे-मसले तो बिहार की शोक कही जाने वाली कोसी नदी की प्रलयंकारी बाढ़ की तरह तटबंध तुड़ा रहे थे। उनकी धार तीखी थी और 2020 के चुनावों से ही उसमें इस कदर उफान दिख रहा था कि एक नए किरदार में सियासत को सिरे से बदल डालने और नई बड़ी लकीर खींचने की उम्मीदें छलांग लेने लगी थीं। वोट डालने के आंकड़े (67.4 प्रतिशत) भी आजाद बिहार के इतिहास में चोटी छू गए। लेकिन ईवीएम से जो निकला, वह इस कदर ''अस्वाभाविक, समझ को मात देने वाला'' था कि बड़े से बड़े राजनैतिक, चुनावी पंडितों की उंगली दांतों तले पहुंच गई, सिर चकरा गया।

नतीजा ऐसा निकला, जैसे उफनती बाढ़ का यू-टर्न हो गया, ज्वार मैनेज हो गया हो। मुद्दे-मसले फना हो गए। बेरोजगारी, पलायन, नौकरी, रोजगार, पेपर लीक, भ्रष्टाचार, लुंजपुंज लुढ़कती शिक्षा-स्वास्थ्य व्यवस्था, आरक्षण, दलित और स्त्री उत्पीड़न, बढ़ती अपराध की घटनाएं सब शांत हो गईं या कर ली गईं। बीपीएससी और रेलवे भर्ती में पेपर लीक के मुद्दे ने तो राजधानी पटना और बिहार की सड़कों पर महीनों तक कोहराम मचाए रखा था। नौजवानों को पुलिस की जोरदार लाठियां खानी पड़ीं। लेकिन जब जनादेश आया, तो लगा मानो कुछ हुआ ही नहीं था। मुख्यमंत्री

नीतीश कुमार और बड़े 'सुशासन बाबू' बनकर उभरे और पूरे एनडीए कुनबे को नए मुकाम पर पहुंचा दिया। यह सब जीत की विशाल संख्या (243 में 202 सीटें, 83 फीसदी स्ट्राइक रेट) में ही नहीं, 1952 के चुनावों से लेकर अब तक के सबसे अधिक मार्जिन में भी दिखा, जबकि बिहार में लगभग हमेशा ही कांटे की टक्कर दूसरे राज्यों के मुकाबले अधिक होती रही है।

रोजी रोटी के लिए दूसरे प्रदेशों में जाते प्रवासी बिहारी बाशिंदे

रोजी रोटी के लिए दूसरे प्रदेशों में जाते प्रवासी बिहारी बाशिंदे इसी को विपक्षी महागठबंधन के एक घटक भाकपा (माले) के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ''अस्वाभाविक, समझ से परे'' कह रहे हैं। हालांकि राजद या कांग्रेस के बड़े नेताओं की ओर से कोई प्रतिक्रिया देखने को नहीं मिली। मुख्यधारा की राजनीति को चुनौती देने और रोजगार, पलायन तथा बिहारी स्वाभिमान को मुद्दा बनाने वाली नई-नवेली जन सुराज का ऐसा सूपड़ा साफ हुआ कि उसके संरक्षक प्रशांत किशोर प्रेस कॉन्फ्रेंस मुल्तवी करते रहे। पार्टी अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने जरूर बताया कि एनडीए सरकार ने हाल के महीनों में 40,000 करोड़ रुपये की खैरात बांटी, जो राज्य पर बढ़ते कर्ज में इजाफा कर गया, जो चुनाव आचार संहिता का घोर उल्लंघन है।

तो, क्या बिहार के वोटरों को 'स्वाभिमान' के बदले 'खैरात' ज्यादा पसंद आई? यह दलील दी जा रही है कि ऐन मतदान के दिन महिलाओं को मुख्यमंत्री रोजगार सहायता योजना के मद में एकमुश्त 10,000 रुपये डालने से बाजी पलट गई। आंकड़ों के मुताबिक महिलाओं (करीब 72 फीसदी) ने पुरुषों (63 फीसदी) की तुलना में ज्यादा वोट डाले। अंपायर यानी चुनाव आयोग महिलाओं को पैसा बांटने पर आंखें मूंदे रहा। विपक्ष और दूसरे राजनैतिक विश्लेषक आलोचना करते रहे। आयोग पर एसआइआर के दौरान 30 सितंबर तक आखिरी सूची से 69 लाख वोटरों के नाम कटने, करीब 22 लाख नाम जोड़ने (उसके प्रेस नोट के मुताबिक करीब 14 लाख नई अर्जी थी) पर भी सवाल उठे। इसके अलावा 30 सितंबर की सूची के 6 अक्टूबर को प्रकाशन के बाद मतदान के बाद जारी आंकड़ों में करीब 3 लाख लोगों के नाम और जोड़ने पर भी सवाल उठाए गए। पहले बिहार में वोटरों की संख्या 7.42 करोड़ बताई गई, जो 11 नवंबर के प्रेस नोट में 7.45 लाख हो गई।

दलील यह भी है कि राष्ट्रीय जनता दल (राजद) बीस साल पहले अपने 'जंगल राज' के पिछले रिकॉर्ड के कारण बुरी तरह हार गया, और कि नीतीश कुमार को पिछले दो दशकों के सुशासन और गिरते स्वास्थ्य की वजह से मिले सहानुभूति वोटों ने एनडीए को बढ़त दिला दी। लेकिन इन दोनों में से कोई भी कारण इस भारी जनादेश की व्याख्या करने के लिए काफी नहीं है। 2020 के चुनाव में महागठबंधन का महज 0.03 फीसदी या 12,000 वोटों से पीछे रह जाना यह नहीं बताता कि दो दशक पहले की धारणा आज भी जोरदार बनी हुई है। इसके अलावा जिस तरह इस साल पिछले कुछ महीनों में पटना और कई जगहों पर अपराध की घटनाएं हुईं, वे भी नई कहानी कह रही हैं।

जहां तक आर्थिक मोर्चे की बात है, तो क्या 2020 के बाद से बिहार का प्रदर्शन बेहतर रहा है? इसके कोई प्रमाण तो नहीं मिलते। बेशक, सड़कों और बिजली में सुधार हुआ है। यह कई साल से चल रहा है। लेकिन भ्रष्टाचार के कारण, बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता काफी खराब है। मसलन, नए बने या निर्माणाधीन पुल ढह रहे हैं। तब, क्या बुनियादी ढांचे में मामूली सुधार ही लोगों को सत्तारूढ़ एनडीए को इतने बड़े पैमाने पर वोट देने के लिए पर्याप्त है?

बिहार देश का सबसे गरीब राज्य बना हुआ है। बेरोजगारी दर सबसे ज्यादा है और बढ़ती जा रही है। रोजगार के लिए कृषि पर निर्भरता बनी हुई है, उद्योग-धंधे घट रहे हैं। रोजगार की तलाश में बड़ी संख्या में लोग दूसरे राज्यों में पलायन करने को मजबूर हैं। कोविड-पूर्व अनुमान के अनुसार, 65 प्रतिशत परिवार बाहर की कमाई पर निर्भर हैं। इस पलायन की शुरुआत बड़े पैमाने पर अस्सी-नब्बे के दशक से हुई, जब खेती-

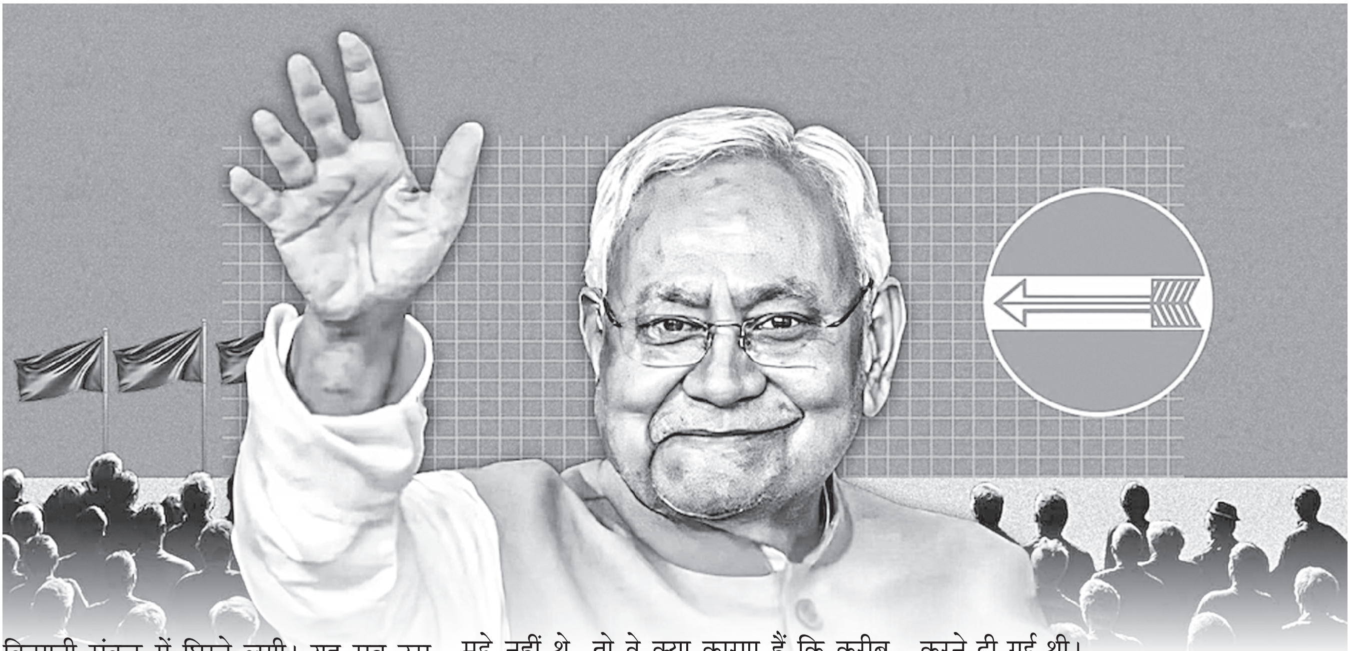

किसानी संकट में घिरने लगी। यह सब उस दौर के चर्चित साहित्यकार अरुण कुमार की कहानी भईया एक्सप्रेस में दर्ज है। मंडल के बाद के दौर के बाद लालू प्रसाद हों या नीतीश कुमार उसका हल कुछ रेलगाडियां चलाकर ही करते रहे और पलायन को मुद्दा मानने से इनकार करते रहे। उसके दशक भर बाद पढ़ाई और इलाज के लिए भी बड़े पैमाने पर पलायन होने लगा है। 2014 के बाद इन स्थितियों में कई गुना इजाफा है।

तो, 2020 और 2025 के बीच ऐसा क्या बदला, कि जो चुनाव पहले कांटे की टक्कर माना जा रहा था, वह विपक्ष की करारी हार में बदल गया? सबसे बढ़कर यह कि ये मुद्दे कैसे लोगों के जेहन से उतर गए। बिहार में औसत व्यक्ति की स्थिति में कोई खास बदलाव भी नहीं आया। लेकिन सत्तारूढ़ एनडीए का वोट 37.3 फीसदी से बढ़कर 46.6 फीसदी हो गया है, जबकि महागठबंधन का वोट 37.2 फीसदी से बमुश्किल 37.9 फीसदी तक बढ़ा।

इसके अलावा, 2020 के विधानसभा चुनाव (57.3 फीसदी) और 2019 के लोकसभा चुनाव (57.3 फीसदी) के मुकाबले 2025 (67 फीसदी) में मतदान बढ़ गया। अगर वोटरों के जेहन में बुनियादी मुद्दे नहीं थे, तो वे क्या कारण हैं कि करीब दस प्रतिशत ज्यादा संख्या में लोग वोट देने निकले। कांग्रेस के एक नेता के मुताबिक, यह बात भी गौर करने लायक है कि 2020 में देर शाम तक कतारें लगी दिखी थीं, लेकिन इस बार मतदान में भारी इजाफे के बावजूद शाम को बड़ी लाइनें कम देखी गईं।

इस बार यह फर्क जरूर था कि एनडीए सरकार ने चुनावों से ठीक पहले और चुनाव के दौरान दोनों ही वक्त लोगों के लिए मुफ्त योजनाओं की भरमार कर दी। विपक्ष, खासकर तेजस्वी यादव ने भी हर परिवार में एक सरकारी नौकरी का वादा किया, लेकिन वह तो सिर्फ वादा था, जबकि सरकार तो रकम बांट रही थी।

चुनाव से ठीक पहले एकमुश्त रकम खाते में डालने का यह मॉडल इससे पहले मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में सरकारी दल ने पेश किया था, जहां विपक्ष बुरी तरह पराजित हुआ। उसके पहले 2019 के लोकसभा चुनावों से ऐन पहले किसान सम्मान निधि के तहत 6,000 रुपये की रकम पिछले महीनों से देश भर के किसानों के खाते में डाली गई थी। हालांकि दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार को चुनाव से पहले महिलाओं के खाते में रकम डालने की योजना चालू नहीं करने दी गई थी।

यही नहीं, ये चुनावी नतीजे बिहार की खासकर मंडल सियासत के साढ़े तीन दशकों के बाद एक बदलाव की तस्वीर भी पेश करते हैं। सबसे अहम तो आरक्षण का मामला है। 2023 में नीतीश की अगुआई में महागठबंधन की सरकार ने जाति सर्वेक्षण कराया और आरक्षण की सीमा 65 प्रतिशत करने प्रस्ताव केंद्र को भेजा, जो अदालत में अटक गया। ऐसा लगता है कि वह मुद्दा भी इस बार गौण हो गया। इसके अलावा, नब्बे के दशक के बाद करीब 12 फीसदी अगड़ी आबादी के विधायकों की संख्या 58 तक पहुंच गई, जबकि 13 प्रतिशत से ज्यादा आबादी वाले यादवों के 28 विधायक ही जीते। इसी तरह अति पिछड़े, दलितों के विधायकों की संख्या भी घटी। इस तरह मुद्दों का मर जाना लोकतंत्र और सियासत पर जनमत के असर का बेमानी होना है। इससे पहले हरियाणा चुनावों के नतीजों से किसानों की एमएसपी की कानूनी गारंटी का मुद्दा भी हवा-सा हो गया है। तो, क्या चुनाव लोगों के दीर्घकालिक मुद्दों के बदले सिर्फ तात्कालिक रियायतों की बानगी बनकर रह जाएंगे, यह सवाल सबसे तीखा होकर बिहार के जनादेश से उठा है।

बिहार चुनाव : पलायन के मुद्दे पर राजनीति

बिहार चुनाव में पलायन के मुद्दे को सभी विपक्षी दलों ने उठाया और चिंता जाहिर की। बिहार के मजदूर तमिलनाडू, केरल सहित देश के कई राज्यों में जाकर जीविका कमाते हैं, यह सही है। प्रधानमंत्री और गृहमंत्री पलायन पर बात करने के बदले उन्होंने गैर भाजपा शासित राज्यों पर यह आरोप लगाया कि उनके यहाँ बिहार के मजदूरों का अपमान होता है और तरह-तरह की यातना उन्हें सहनी पड़ती है। इस प्रकार पलायन जहाँ विपक्षी दलों के लिए चिंता का सबब था वहीं प्रधानमंत्री और भाजपा के नेताओं के लिए विपक्षी दलों को बदनाम करने का माध्यम रहा। इस मामले की रिपोर्ट कर रहे हैं वरिष्ठ पत्रकार एन.के. भूपेश।

तमिलनाडु और बिहार के बीच 2,000 किलोमीटर से भी ज्यादा की दूरी है, और पहली नजर में दोनों के बीच तुलना करने लायक कुछ खास नहीं लगता। फिर भी, दोनों राज्यों में एक अहम वैचारिक विरासत की समानता है, दोनों ही सामाजिक न्याय की राजनीति की प्रयोगशाला रहे हैं। तमिलनाडु में स्वाभिमान आंदोलन द्रविड़ राजनैतिक परंपरा के रूप में विकसित हुआ, जबकि बिहार में पिछड़ी जाति की राजनीति के उदय ने सकारात्मक कार्रवाई और सामाजिक सशक्तिकरण को राजनैतिक विमर्श के केंद्र में ला दिया। लेकिन उसे ही एक-दूसरे के बरक्स खड़ा करके मुद्दा पलटने की कोशिश हाल के बिहार विधानसभा चुनाव में दिखी। नतीजों पर चाहे जो असर पड़ा हो, मगर यह घटनाक्रम आगे की सियासत के लिए अहम संदेश है।

बिहार में चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह दोनों ने तमिलनाडु और उसके मुख्यमंत्री का जिक्र किया, दोनों दूर के राज्यों के बीच किसी वैचारिक समानता के लिए नहीं, बल्कि कथित तौर पर अपमानजनक टिप्पणी के लिए। प्रधानमंत्री ने आरोप लगाया कि बिहार के प्रवासी मजदूरों को तमिलनाडु में द्रमुक कार्यकर्ता परेशान करते हैं। यह आरोप द्रमुक या मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन को रास नहीं आया कि तमिल लोग हिंदी भाषी बिहारियों से बुरा बर्ताव करते हैं।

तमिलनाडु के नेताओं की तीखी प्रतिक्रियाओं के बावजूद भाजपा ने आक्रामक रुख जारी रखा। राजद नेता तेजस्वी यादव पर कटाक्ष करते हुए शाह ने कहा कि तेजस्वी के ''पसंदीदा मुख्यमंत्री'' एम.के. स्टालिन ने बिहारियों की तुलना बीड़ी से कर उनका अपमान किया है। शाह ने एक चुनावी रैली में कहा, ''किसी ने लालू के बेटे से पूछा कि उनका पसंदीदा मुख्यमंत्री कौन है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री, द्रमुक के स्टालिन हैं। क्या आप जानते हैं कि वे कौन हैं? उनकी पार्टी बिहारियों की तुलना बीड़ी से करती है और उनका अपमान करती है।''

इन दोनों बयानों पर द्रमुक और उसके सहयोगियों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने प्रधानमंत्री को तमिलनाडु दौरे के दौरान ऐसी ''अपमानजनक'' टिप्पणी दोहराने की चुनौती दी। उन्होंने कहा कि बिहारी मेहनती लोग हैं और राज्य में प्रवासी मजदूरों पर लक्षित हमलों की कोई घटना नहीं हुई है।

स्टालिन ने एक समारोह के दौरान पत्रकारों से कहा, ''यह भाईचारे और सिर्फ भाईचारे का राज्य है, जो यहां आने वालों का स्वागत करता है और उनका ख्याल रखता है। फिर भी, मोदी भूल गए कि वह सभी के प्रधानमंत्री हैं और उन्होंने बिहार में झूठ फैलाना चुना। मैं उन्हें यहां आकर ऐसा ही भाषण देने की चुनौती देता हूं।''

तमिलनाडु राज्य योजना आयोग के अनुसार, राज्य में लगभग 35 लाख प्रवासी मजदूर हैं। उनमें 2.5 लाख से ज्यादा बिहार

से हैं। इस तरह वे ओडिशा के मजदूरों के बाद दूसरा सबसे बड़ा प्रवासी समूह है।

आयोग की 2024-25 की रिपोर्ट के मुताबिक, चेंगलपट्टू, चेन्नै, कांचीपुरम और तिरुवल्लूर जिले वाले चेन्नै जोन में अधिकांश प्रवासी मजदूर पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों, खासकर बिहार, ओडिशा और असम से हैं।

प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के तमिलनाडु में प्रवासी श्रमिकों के साथ दुर्व्यवहार के आरोप लगाने से पहले कुछ तत्वों ने उनके खिलाफ हमलों की झूठी कहानियां फैलाने की कोशिश की थी। सोशल मीडिया में देश के अन्य हिस्सों की संबंधित 2023 की कुछ घटनाओं के वीडियो प्रसारित किए गए, जिनमें बिहार के प्रवासी श्रमिकों पर हमले का झूठा दावा किया गया। तमिलनाडु और बिहार दोनों सरकारों की फौरी कार्रवाई, पुलिस जांच से इन अफवाहों पर विराम लगा।

द्रमुक सांसद डॉ. पी. गणपति राजकुमार कहते हैं, ‘‘दुर्भाग्यपूर्ण है कि प्रधानमंत्री और गृह मंत्री जैसे पदों पर बैठे नेता उस राज्य के बारे में झूठी अफवाहें फैला रहे हैं जो प्रवासी मजदूरों को अवसर प्रदान करता है।’’ उन्होंने कहा, ‘‘मेरे निर्वाचन क्षेत्र कोयंबत्तूर में हजारों प्रवासी मजदूर हैं और मुझे उनके साथ दुर्व्यवहार का एक भी मामला देखने को नहीं मिला।’’ वे आगे कहते हैं, ‘‘यही बात पूरे राज्य में लागू होती है। हम भाषा, धर्म या नस्ल के आधार पर किसी भी पूर्वाग्रह के बिना सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं। हमारा विरोध केवल हिंदी थोपने पर है, हिंदी बोलने वालों के खिलाफ नहीं।’’

द्रमुक बनाम भाजपा

द्रमुक के 2021 में सत्ता में आने के बाद से तमिलनाडु केंद्र सरकार की कई नीतियों का मुखर विरोध करता रहा है, जिसे वह राज्य के अधिकारों का अतिक्रमण बताता है। द्रमुक सरकार लगातार केंद्र सरकार पर फंड रोकने से लेकर विधानसभा से पारित विधेयकों को मंजूरी देने में राज्यपाल की हीला-हवाली के लिए निशाना साधती रही है। उसने सुप्रीम कोर्ट का भी दरवाजा खटखटाया और आरोप लगाया कि केंद्र ने समग्र शिक्षा योजना के तहत 2,000 करोड़ रुपये की शिक्षा निधि जारी करने में अड़चन डाली है। राज्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) और त्रि-भाषा फॉर्मूले का विरोध जारी रखे हुए है। सुप्रीम कोर्ट ने विधानसभाओं से पारित विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए राज्यपालों के लिए एक समय सीमा निर्धारित की है। इसे न केवल राज्यपालों के लिए, बल्कि केंद्र सरकार के लिए भी झटका माना जा रहा है, जिस पर राज्य के मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए राज्यपालों का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया गया है। इसके जवाब में, केंद्र ने अदालत ने राष्ट्रपति संदर्भ दायर किया है, जिस पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आना बाकी है।

दुर्भाग्यपूर्ण है कि प्रधानमंत्री और गृह मंत्री जैसे पदों पर बैठे नेता उस राज्य के बारे में झूठी अफवाहें फैला रहे हैं जो प्रवासी मजदूरों को अवसर प्रदान करता है। –डॉ.पी. गणपति

इन मामलों से तमिलनाडु की द्रमुक सरकार और भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के बीच कटुता को और गहरा कर दिया है।

भाजपा का दक्षिणी राज्यों के प्रति सौतेला रवैया कोई नया नहीं है। 2016 के विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केरल की तुलना सोमालिया से की थी। भारत के मानव विकास सूचकांक में लगातार शीर्ष पर रहने वाले राज्य की उस तुलना को गलत और अपमानजनक दोनों ही माना गया था।

व्यापक पैटर्न का हिस्सा?

क्या भाजपा के दक्षिणी राज्यों को बार-बार निशाना बनाए जाने के पीछे कोई वैचारिक कारण है? राजनैतिक सिद्धांतकार तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के राजनैतिक अध्ययन केंद्र में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अजय गुडावर्ती इसे व्यापक राजनैतिक पैटर्न का हिस्सा मानते हैं।

डॉ. गुडावर्ती ने आउटलुक से कहा, ‘‘केरल और तमिलनाडु पर मौजूदा केंद्र सरकार के निशाना साधने की कोशिशें उसी रवैए का विस्तार है, जो पंजाब में सिख किसानों को खालिस्तानी, लद्दाख में बौद्ध और मणिपुर में ईसाई आदिवासियों को राजद्रोही बताने या फिर आम मुसलमानों, खासकर कश्मीरियों को बदनाम करने में दिखता है। इससे मौजूदा सरकार की ध्रुवीकरण की कोशिश और हिंदी पट्टी में हिंदू वोट बैंक को मजबूत करने की व्यापक रणनीति जाहिर होती है।’’

वर्षों से, दक्षिणी राज्य केंद्रीय निधियों के आवंटन के मानदंडों पर चिंताएं जताते रहे हैं। उनका तर्क है कि जनसंख्या नियंत्रण और शिक्षा में उनकी सफलता को ही उनके खिलाफ खड़ा किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप केंद्रीय निधि से उन्हें कम हिस्सा मिलता है। आने वाले वर्षों में संसदीय क्षेत्रों का प्रस्तावित परिसीमन इस बेचैनी को और बढ़ाने वाला है। आबदी में स्थिरता प्राप्त करने के बाद, इन राज्यों को डर है कि उनकी लोकसभा सीटों की संख्या घट सकती है, जिससे संसद में उनका राजनैतिक प्रतिनिधित्व कम हो सकता है।

फिलहाल, प्रवासी मजदूर, जिनके नाम पर राजनैतिक लड़ाइयां लड़ी जा रही हैं, इन आरोपों से काफी हद तक अछूते हैं। वे दूर-दराज के राज्यों में शांतिपूर्वक रह रहे हैं और काम कर रहे हैं। साथ ही वे राजनैतिक द्वंद्व में फंसे इन राज्यों की अर्थव्यवस्था में चुपचाप योगदान दे रहे हैं।

बिहार जनादेश '25 : कुछ तथ्य

बिहार देश के सभी राज्यों में प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से सबसे निचले पायदान पर है। नितीश के 20 साल के शासन के बावजूद स्थिति यही है। इसके अलावा अन्य मामलों में भी राज्य की स्थिति बदतर है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि जैसे तमाम स्तरों पर यह फिसड्डी राज्यों में गिना जाता है। 2010 में इसके नतीजे ऐसे थे जिसका कारण लालू का 15 साल का शासन था। पर आज 2025 में जो नतीजा आया है, वह चौंकाने वाला है और इन नतीजों पर संदेह होना लाजमी है। चुनाव आयोग भाजपा के लिए काम कर रहा है। यह चिंताजनक है। लोकतंत्र पर खतरा मड़रा रहा है फिर भी जनादेश को लोकतंत्र के पक्षधर स्वीकार कर रहे हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) भारी जीत हुई है।

इस चुनाव में एनडीए ने 243 सदस्यों वाली बिहार विधानसभा में 202 सीट जीत कर न सिर्फ चुनाव विश्लेषकों, बल्कि जमीनी हकीकत का आकलन करने गए राज्य में हफ्तों से घूम रहे पत्रकारों और ओपिनियन-एग्जिट पोल करने वालों को हतप्रभ कर दिया। किसी को यह अनुमान ही नहीं था कि चुनाव में एनडीए और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेतृत्व वाली महागठबंधन के बीच का मुकाबला इतना एकतरफा होगा, एनडीए के घटक दलों के नेताओं को भी नहीं। लेकिन, तमाम अटकलों और आकलनों के विपरीत चुनाव का नतीजा बिलकुल 2010 के विधानसभा चुनाव परिणामों की तरह आया, जब भाजपा-जदयू गठबंधन ने 206 सीट जीत कर सरकार बनाई थी।

हालांकि अभी के चुनाव और पंद्रह साल पहले हुए चुनाव की परिस्थितियां बिलकुल अलग थीं। नीतीश उस समय बुलंदी पर थे, उनकी सरकार का पांच साल का प्रदर्शन शानदार था और जनता दल-यूनाइटेड (जदयू) की सरकार भाजपा के साथ बेहतरीन तालमेल के साथ चल रही थी। नीतीश इस बार उस 'फॉर्म' में नहीं थे, न ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ गठबंधन में उनके दल की हैसियत पहले जैसी थी। लेकिन दोनों चुनावों में एक बड़ी समानता यह थी कि महिला मतदाताओं ने इस बार भी एनडीए के पक्ष में जबरदस्त वोटिंग कर उसे प्रचंड बहुमत से जिताया। दरअसल, जिस उत्साह से इस बार नीतीश सरकार के पक्ष में नारी समर्थन देखने को मिला, वह पूर्व में प्रदेश के किसी लोकसभा या विधानसभा चुनाव में देखने को नहीं मिला था। यही वजह थी कि इस चुनाव में महिलाओं का वोट पुरुषों से करीब आठ प्रतिशत अधिक रहा, जो अपने आप में प्रदेश के चुनावी इतिहास में एक रिकॉर्ड है।

वैसे, विपक्षी दलों का आरोप है कि नीतीश सरकार के महिलाओं को मतदान से ठीक पहले दस हजार रुपये की राशि देने के निर्णय का महिलाओं पर काफी असर हुआ, जिसके कारण दो चरणों में संपन्न हुए चुनाव में मतदान केंद्रों के बाहर महिलाओं की लंबी कतार देखी गई और मत प्रतिशत में जबरदस्त इजाफा दर्ज किया गया। आम तौर पर अनुभवी चुनाव विश्लेषक किसी भी चुनाव में वोट प्रतिशत में अप्रत्याशित उछाल को 'एंटी-इन्कंबेंसी' लहर के रूप में देखते हैं। इसलिए इस बार भी उन्हें लगा कि बिहार के मतदाताओं ने नई सरकार को चुनने का मन बना लिया है। लेकिन परिणाम ठीक उलटा आया। अंतिम नतीजों से साफ हुआ कि महिलाओं के मत प्रतिशत में इजाफा, नीतीश सरकार को सत्ता में बरकरार रखने के लिए था, न कि उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिए।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि चुनाव पूर्व बड़ी संख्या में महिलाओं को दस हजार रुपये की राशि देने के फैसले ने एनडीए के पक्ष में माहौल बनाया, लेकिन यह भी नहीं कहा जा सकता कि सिर्फ एक फैसले के कारण बिहार चुनाव में बाजी रातोरात पलट गई। दरअसल पिछले 20 वर्षों के शासन काल के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की महिलाओं के बीच लोकप्रियता निरंतर बढ़ती ही रही है, जिसका मुख्य कारण उनकी सरकार के महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विकास के लिए किए गए अनेक कदम हैं। नवंबर 2005 का विधानसभा चुनाव जीतने के तुरंत बाद नीतीश ने पंचायत और स्थानीय निकाय के चुनावों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देकर एक क्रांतिकारी कदम उठाया। बिहार ऐसा करने वाला पहला राज्य था, जिसका अनुसरण बाद में कई प्रदेश सरकारों ने किया। नीतीश ने स्कूली छात्राओं को न केवल सरकार की ओर से मुफ्त यूनिफार्म, किताब और वजीफा दिलाया, बल्कि उन्हें घर से विद्यालय आने-जाने के लिए नई

साइकिल भी दी। नीतीश शासन के शुरुआती वर्षों में साइकिल चलाती लड़कियों की तस्वीर देश भर में महिला सशक्तीकरण की प्रतीक बन गईं। इसके अलावा, महिला स्वयं सहायता समूह की बड़े पैमाने पर स्थापना से लेकर शराबबंदी जैसे कदमों की वजह से नीतीश ने महिला मतदाताओं के बीच ऐसी पैठ बना ली, जैसा प्रदेश में पूर्व के किसी नेता ने नहीं किया था। उसके कारण उन्हें हर चुनाव में महिलाओं का भारी संख्या में वोट मिलने लगा। उल्लेखनीय यह है कि महिलाओं के वोट उन्हें जाति या धर्म के आधार पर नहीं मिले, वह उन्हें उनके समावेशी विकास के कार्यों के लिए मिले।

साल 2010 के चुनाव के पहले बिहार में महिलाओं को कोई अलग वोट बैंक नहीं समझा जाता था। आम तौर पर यह धारणा थी कि वे उसी को वोट देती हैं जिसे उनके पति, पिता या पुत्र देने को कहते हैं। लेकिन उस चुनाव के बाद महिलाओं ने जाति और धर्म ही नहीं, बल्कि परिवार से भी ऊपर उठकर नीतीश के समर्थन में खुलकर वोट दिए। नीतीश के राजनैतिक करियर की यह सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि थी। वर्षों से 'सामंती' कहे जाने वाले बिहार के 'पितृसत्तात्मक' समाज में उसके कारण एक क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिला, जिसका फायदा नीतीश को चुनाव दर चुनाव मिला।

इस बार तो मानो सारे रिकॉर्ड टूट गए। महिलाओं की ऐसी ताकत को समझने में नीतीश को देर नहीं लगी। इसलिए जब महिलाओं के एक समूह ने 2016 में पटना में एक भरी सभा में शराबबंदी लागू करने का अनुरोध किया, तो उन्होंने उसकी घोषणा करने में तनिक भी देर नहीं की। हालांकि उनके आर्थिक सलाहकारों ने उन्हें ऐसा न करने की सलाह दी थी, क्योंकि शराब से प्रदेश को बहुत ज्यादा राजस्व मिलता था। उन्हें यह भी बताया गया कि शराबबंदी दुनिया में शायद ही कहीं सफल हुई, लेकिन नीतीश ने वही किया, जो महिलाओं की मांग थी। नतीजतन, बिहार जैसे गरीब प्रदेश को करोड़ों रुपये के राजस्व से हाथ धोना पड़ा, लेकिन नीतीश के निर्णय ने उनके लिए समर्थकों का ऐसा सशक्त वर्ग तैयार किया, जिसे उनका 'वीमेन वोट बैंक' कहा गया। यही 'वोट बैंक' इस चुनाव में भी उनके काम आया, जबकि उनके स्वास्थ्य और अन्य कारणों से विरोधियों द्वारा उनके नेतृत्व पर सवाल उठाए जा रहे थे।

किस दल को विधानसभा चुनाव 2025 में कितने वोट

दल	वोट	कुल वोट
राजद	23%	1,15,46,055
भाजपा	20.08%	1,00,81,143
जदयू	19.25%	96,67,118
कांग्रेस	8.71%	43,74,579
लोजपा (रावि)	4.97%	24,97,358
जनसुराज	3.34%	16,77,583
भाकपा (माले)	2.84%	14, 50, 622
एआइएमआइएम	1.85%	9,30,504
नोटा	1.81%	9,10,730
बसपा	1.62%	8,13,553
वीआइपी	1.37%	6,89,484
हम (से)	1.17%	6,87,056
रालोमो	1.06%	5,33,313
निर्दलीय	5.01%	25,16,297
अन्य	3.90%	19,57,368

विचारधारा के स्तर पर लालू प्रसाद और भाजपा एक दूसरे के धुर-विरोधी रहे हैं। राजनीति में वैसे तो कुछ भी असंभव नहीं लेकिन आज के दौर में विपरीत विचारधारा होने के कारण राजद और भाजपा के बीच गठबंधन होने की संभावना नहीं बची है। बिहार में भाजपा ने हमेशा लालू पर हमलावर होकर अपनी राजनीति की है, जबकि लालू भाजपा के हिंदुत्व एजेंडे के सबसे मुखर विरोधी रहे हैं। इन दोनों के बीच नीतीश ऐसे नेता रहे हैं, जो दोनों को स्वीकार्य रहे हैं। पिछले दो विधानसभा चुनावों (2015 और 2020) में उनकी पार्टी जदयू अपने गठबंधन में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर नहीं आई लेकिन मुख्यमंत्री का ताज उन्हें ही मिला। इस बार भी जदयू को भाजपा से कम सीट मिलीं, लेकिन नीतीश को चुनाव पूर्व ही सरकार के शीर्ष पद के लिए योग्य समझा गया। यह नीतीश की राजनैतिक हैसियत को रेखांकित करता है।

जदयू ने इस चुनाव में 85 सीट जीतीं, जो 2020 के चुनावों से 42 सीट अधिक हैं। इस बार की सफलता इसलिए उल्लेखनीय है कि चुनाव पूर्व उनके स्वास्थ्य को लेकर कई आशंकाएं सामने आई थीं। कहा जा रहा था कि वे ढलते स्वास्थ्य के कारण मुख्यमंत्री पद संभालने में सक्षम नहीं हैं। भाजपा ने भी चुनाव प्रचार की शुरुआत में स्पष्ट रूप से उन्हें गठबंधन के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं किया, जिसके कारण अटकलें लगनी लगीं कि शायद भाजपा उनके स्थान पर मुख्यमंत्री पद के लिए अपना उम्मीदवार सामने लाएगी। लेकिन जैसे ही तेजस्वी यादव और प्रशांत किशोर जैसे विरोधी नेताओं ने इसे चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश, भाजपा ने यह स्पष्ट किया कि नीतीश ही चुनाव के बाद मुख्यमंत्री बनेंगे। हालांकि चुनाव परिणामों के बाद भी ऐसे कयास लगाने वालों की कमी नहीं है, जो यह कहते हैं कि नीतीश के बाद भाजपा के किसी नेता के मुख्यमंत्री बनाने का रास्ता अब साफ हो गया है।

–गिरधर के साथ हर्षवर्धन

'अनमोल उपहार'

पूजा गुप्ता

कमला देवी विकास के सिरहाने बैठकर बड़े प्यार से सिर पर हाथ फेरने लगीं। उनकी आँखें विकास के मुरझाए चेहरे से चिपक गईं और उनमें से मातृत्व का झरना झर-झर बहने लगा। विकास ने माँ का ममतामयी स्पर्श पाकर आहिस्ते से आँखें खोलीं।

माँ का करुणामय चेहरा दिखाई दिया। क्षण भर माँ के चेहरे को देखने के बाद विकास की आँखों में पीड़ा उमड़ आई। उस पीड़ा में कई प्रश्न झिलमिलाने लगे, जो होंठों पर आकर ऐसे लौट जाया करते जैसे कोई नन्हा सा बालक बैठने के प्रयास में गिर जाया करता हो। पुत्र की मनोदशा पर माँ के हृदय में शूल चुभ रहे थे। बड़ी कठोरता से माँ अपने को संभाले थी। लेकिन पानी की भयंकर लहरें बाँध पर धक्के दे रही थीं। बाँध टूटेगा कि रहेगा, पता नहीं।

'कब आई माँ?' विकास ने शुष्क स्वर में पूछा।

'अभी आई हूँ, बेटा।' माँ की आवाज़ में नमी थी।

'प्रिया कैसी है माँ?'

'वह तो ठीक है, परन्तु तुम्हारी चिंता उसे खाए जा रही है।'

'माँ, उसे समझाओ। मेरी चिंता न करे। अपने शरीर पर ध्यान रखे, तनाव से मुक्त रहे... माँ, तुम्हें तो सब पता है औरत की मानसिक और शारीरिक स्थितियों का प्रभाव होने वाले बच्चों पर भी पड़ता है... माँ, देखना, इस बार लड़का होगा। मैंने उसका नाम भी सोच रखा है.. अर्णव! अनन्या का भाई अर्णव। विकास का बेटा अर्णव। तुम्हारा पोता अर्णव। नाम अच्छा है न माँ?' विकास हाँफने लगा।

'हाँ बेटा, बहुत अच्छा नाम है।'

'माँ, तुम प्रिया को समझाओ, वह मेरी चिंता छोड़ दे।'

'मैं तुमको समझाऊँ या उस पगली को। उसके पास जाती हूँ तो वह कहती है, 'माँ, मैं बीमार नहीं हूँ। माँ बनने वाली हूँ। औरत के जीवन की यह महान उपलब्धि है। एक महान पुरस्कार है यह। यह पुरस्कार तब अच्छा लगेगा माँ, जब पुरस्कृत करने वाला पति सूर्य के समान चमकता रहे और मैं उनके प्रकाश में अपने जीवन और पुरस्कार पर इठलाती रहूँ... माँ, वे हैं तो मैं हूँ। उनका जीवन मेरा जीवन है। उनका दुःख, मेरा दुःख, उनकी खुशी, मेरी खुशी, उनकी उपस्थिति, मेरा आलंबन। आपको क्या समझाऊँ माँ, आप तो स्वयं एक नारी हैं। नारी के जीवन में पति का क्या स्थान है, आप खूब समझती हैं। जाइए माँ, उनके पास रहिए। मेरे पास तो अस्पताल की नर्सें हैं। मैं दूसरी बार माँ बनने जा रही हूँ। कुछ अनुभव भी है मेरे पास...

'अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ! किसको समझाऊँ? किसके पास रहूँ?'

'माँ, तुम बहुत भोली हो। प्रिया ने जैसा समझा दिया, तुमने वैसा मान लिया। माँ, तुम जानती नहीं, सरकारी अस्पताल की नर्सें कितनी लापरवाह होती हैं। उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता... मैं बीमार हूँ, उसको बीमार बनाने से क्या फायदा? वह तो ऐसे ही बहुत कमजोर है। अनन्या के जन्म के समय कैसे मौत के मुख से बची थी।' विकास फिर हाँफने लगा। बीच-बीच में खाँसी भी आने लगी। हृदय की गति बढ़ गई। कमला देवी बेचैन हो गईं। विकास ने हाथ से इशारा किया कि घबराने की कोई बात नहीं है, ऐसा तो होता ही रहता है। यही तो बीमारी है। क्या कर सकते हैं। इलाज तो चल ही रहा है।

जब कुछ राहत महसूस हुई तो बोला, 'माँ, तुम प्रिया के पास जाओ। अपने इस लाचार बेटे की बात मानो माँ! तुमने मेरी हर बात को माना है। मेरे हर आग्रह को सहर्ष स्वीकार किया है। मेरी हर जिद को पूरा किया है। इस बार भी पूरा कर दो, माँ।' विकास ने कमला देवी की ओर इस तरह देखा जैसे कोई भिखारी दाता की ओर देखता है।

कमला देवी सोचने लगीं, 'किसको अपनी स्नेह की छाया में रखें? किसको अपने स्नेहिल स्पर्श से सहलाएँ? किसको धीरज बँधाएँ? किसको मातृत्व की संजीवनी घुट्टी पिलाएँ? हाय! दोनों ने मुझे टाल दिया।'

फिर सोचने लगीं, 'आहा! कितना प्यार है दोनों में। कितनी समर्पण की भावना है एक-दूसरे के प्रति। अपनी चिंता नहीं, जीवन साथी की चिंता है। हे ईश्वर, इन दोनों की रक्षा करना।'

कमला देवी दृढ़ इरादे के साथ प्रिया के पास चल दीं। उन्होंने मन-ही-मन कहा, 'अब मैं प्रिया के पास से नहीं हटूँगी। चाहे वह मुझे कितना ही विकास के पास जाने के लिए क्यों न कहे। विकास के जीवन की डोर तो उसके पास है।'

कमला देवी जब प्रिया के वार्ड में पहुँची तो पता चला, प्रिया प्रसूति गृह में है। उसने एक पुत्र को जन्म दिया है। माता और पुत्र दोनों स्वस्थ हैं। सभी कार्य सामान्य तरीके से संपन्न हो गए।

कमला देवी के चिंतित चेहरे पर खुशी की आभा दौड़ गई। वह कुछ क्षण के लिए भूल गईं कि उनका पुत्र एक खतरनाक बीमारी के चंगुल में है। सुस्ती उनके शरीर से निकल भागी। वह चंचल हो उठीं। उनकी चिर संचित अभिलाषा पूरी हो गई थी। वह पोते को देखने के लिए बेचैन हो उठीं।

प्रिया को प्रसूति गृह से निकालकर नवजात शिशु के साथ उसके वार्ड के बेड पर लाया गया। कमला देवी पोते को देखकर निहाल हो गईं। फिर उन्होंने गौर से पोते के चेहरे का निरीक्षण किया। वहाँ विकास की सूरत झलक पड़ी। फिर विकास का पीला चेहरा, धँसी आँखें उस शिशु के चेहरे में दिखाई देने लगीं। अपने पुत्र की दशा का आभास होते ही कमला देवी का चेहरा उदास हो गया। प्रिया बोली, 'वे कैसे हैं माँ?'

'वैसा ही है बहू, जैसा था। कुछ सुधार नहीं हुआ है।'

'मुझे ले चलो माँ, मैं उनके पास रहना चाहती हूँ।'

'अभी तुम बहुत कमजोर हो। जरा धीरज रखो।'

'नहीं माँ, मैं अभी चलूँगी। अब एक पल भी उनसे दूर नहीं रह सकती।'

प्रिया ने जिद पकड़ ली। डॉक्टर से अनुनय-विनय करके इजाजत ले ली गई। कमला देवी शिशु को गोद में लिए और एक हाथ से प्रिया को

सहारा देते हुए, विकास के पास चल पड़ीं। साथ में एक नर्स भी थी।विकास और प्रिया की शादी को तीन वर्ष ही हुए थे। विकास इंजीनियर था और प्रिया एक पढ़ी-लिखी कुशल गृहिणी। बड़ी अच्छी जोड़ी थी।

शादी के एक वर्ष बाद प्रिया ने एक खूबसूरत बच्ची को जन्म दिया। पति-पत्नी ने मिलकर उसका नाम अनन्या रखा। अनन्या से घर-आँगन महक उठा। कमला देवी दादी बन चुकी थीं। लेकिन पोते की दादी बनने की अभिलाषा अभी पूरी नहीं हुई थी। जो कभी-कभी उनके होंठों पर अनायास ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आ जाया करती थी। विकास और प्रिया भी पुत्र वाली मानसिकता से अछूते नहीं थे।

अनन्या के दो वर्ष पूरे करते ही प्रिया फिर से माँ बनने वाली थी। माँ बनने में दस-बारह दिन बाकी थे कि विकास फेफड़े की एक भयंकर बीमारी के चंगुल में फँस गए। विकास को एक सरकारी अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। प्रिया और कमला देवी विकास के साथ अस्पताल में रहने लगे। विकास की हालत डॉक्टरों के इलाज के बावजूद दिन-प्रतिदिन बिगड़ने लगी। कुछ दिन बाद उसी अस्पताल के महिला वार्ड में प्रिया को भी भर्ती होना पड़ा, जहाँ उसने एक पुत्र को जन्म दिया।

प्रिया ने जब विकास को देखा तो उसका कलेजा काँप गया। पुत्ररत्न की प्राप्ति तो हो चुकी थी, परन्तु सुहाग खतरे में नजर आया। क्या ये वही विकास हैं, जिनके चेहरे पर प्रसन्नता की लहरें हमेशा दौड़ा करती थीं, आज वह कहाँ चली गई है? इनकी सूरत में कितना परिवर्तन हो गया है। वह चमकता ललाट, वे चंचल आँखें, वह सुडौल शरीर कहाँ चला गया? केवल शरीर के रूप में हड्डियों का ढाँचा ही रह गया है। उसका अंतःकरण रो उठा, 'हाय! मेरे पति की ऐसी दशा।'

विकास, प्रिया को देखकर मुस्कराए, लेकिन वह मुस्कराहट नहीं थी। उसमें विवशता, दीनता और पीड़ा की झलक थी।

'बेटा हुआ है, बेटा।' कमला देवी विकास से बोलीं और गोद में रखे नवजात शिशु को उसके सामने कर दिया।

'मैंने कहा था न माँ कि बेटा ही होगा, प्रिया ने मेरी इच्छा पूरी कर दी।' इतना बोलकर विकास खाँसने लगा।

प्रिया को जैसे साँप सूँघ गया था। वह ठगी-सी खड़ी थी। विकास की खाँसी जब रुकी तो उन्होंने अपनी दोनों निर्बल बाहें शिशु की ओर फैला दीं। कमला देवी ने शिशु को उनकी बाँहों में दे दिया। शिशु नींद में था। 'इसका नाम अर्णव रहेगा। मैंने इसका नामकरण कर दिया है।'

विकास प्रिया की ओर देखकर बोला, 'प्रिया, तुमने मेरी अंतिम इच्छा पूरी कर दी।'विकास जोर-जोर से हाँफने लगा।

प्रिया मानो नींद से जागी। वह बोली, 'आप ठीक हो जाएँगे।' बस, इतना ही बोल पाई। विकास के हाथ काँपने लगे। साँसें तेज चलने लगीं और खाँसी भी आने लगी। विकास ने शिशु को प्रिया की ओर बढ़ा दिया। लगता था शिशु उसके हाथों से छूट जाएगा। प्रिया ने अपने हाथ बढ़ाए। दोनों के हाथ परस्पर छू गए। एक अजीब-सी अनुभूति उन दोनों के शरीर में हुई। शिशु प्रिया की बाँहों में आ गया। कमला देवी डॉक्टर को बुलाने दौड़ पड़ीं। प्रिया की ओर देखते-देखते विकास के प्राण पखेरू उड़ गए।

प्रिया का सूर्य हमेशा के लिए उसकी आँखों के सामने अस्त हो गया। उपवन में दो फूल खिलाकर माली उपवन छोड़ चला। उपवन उजड़ गया, फूल अनाथ हो गए। प्रिया विलाप करने लगी। हृदय को दहला देने वाला दृश्य था।

कमला देवी डॉक्टर को लेकर आईं। विलाप और तेज हो गया। प्रिया कमला देवी के पैरों से लिपटकर रोने लगी। कमला देवी अपना होश-हवास खो बैठीं। डॉक्टर ने विकास को मृत घोषित कर दिया।

दिन बीते, महीने बीते, वर्ष बीते। प्रिया की सास कमला देवी भी चल बसीं। ससुराल के अन्य सदस्यों की नजरों में प्रिया अब खटकने लगी। वह ससुराल से मायके आ गई। पर उसकी स्थिति ज्यों की त्यों बनी रही। पिता ने समझाया, 'प्रिया, ऐसा कब तक चलेगा? अभी पूरी जिंदगी पड़ी है। अपने भविष्य के बारे में सोचो। अपने बच्चों के बारे में सोचो।'

प्रिया जब अपने पिता की ओर देखती तो वे उसकी आँखों में खामोशियों को देखकर निरुत्तर हो जाते। वे एकांत कोठरी में बैठकर घंटों रोते। फिर दोबारा हिम्मत नहीं होती कि कुछ कहें या समझाएँ।

कुछ सगे-संबंधियों ने प्रिया के सामने शादी का प्रस्ताव रखा, 'अभी उम्र ही क्या है? मात्र तेईस वर्ष। दूसरी शादी कर लो। आगे की जिंदगी आराम से गुजर जाएगी।' लेकिन बच्चे कहीं उपेक्षित न पड़ जाएँ, यह सोचकर प्रिया ने साफ इनकार कर दिया।

शादी का प्रस्ताव जब प्रिया द्वारा ठुकरा दिया गया तो कुछ लोगों ने उसके पिता से कहा, 'उसे पूजा-पाठ में लगा दीजिए।' इस प्रस्ताव को प्रिया के पिता ने साफ इनकार करते हुए कहा, 'मैं अपनी बेटी को साध्वी नहीं बनने दूँगा। वह विधवा है तो क्या हुआ। उसे भी एक आम जिंदगी जीने का हक है।'

प्रिया हमेशा शून्य में खोई रहती। उसे बच्चों का अहसास था परन्तु उनसे लगाव नहीं रहता था। एक दिन प्रिया के चाचा ने बड़ी भावुकता से समझाया, 'बेटी, कल्पना करो, मैं तुमको मेला घुमाने ले गया हूँ। वहाँ पर हमारी मुलाकात एक अनजान आदमी से होती है, जो बाद में अपना हो जाता है। मैं तुमको उसके साथ लगा देता हूँ। वह तुझे मेला घुमाने लगता है। नई-नई चीजें दिखाता है। नई-नई बातें बताता है। तुम उसके साथ बहुत खुश रहती हो। वह तुम्हारा बहुत ध्यान रखता है। तुम्हारी हर इच्छा को पूरा करता है। जो चाहती हो, खरीदता है, जो खाना चाहती हो खिलाता है। तुम भी उसे बहुत चाहती हो। तुम्हारी इच्छा रहती है कि उसका साथ हमेशा बना रहे। लेकिन बेटी, वह आदमी तुम्हें छोड़कर चला गया... बहुत दूर। परंतु जाते समय तुम्हारे आँचल में दो 'अनमोल खिलौने' रख गया, तुम्हारा मन बहलाने के लिए। बेटी, इन अनमोल खिलौनों के साथ तुम खेलो, अपना मन बहलाओ। तुम्हारी जिंदगी अच्छी तरह से गुजर जाएगी। ये अनमोल खिलौने उसके प्यार की निशानी हैं। इन्हें संभालो।'

चाचा की बातों का असर प्रिया पर हुआ। उसके दोनों बच्चे, अनन्या और अर्णव उसके पास ही खड़े थे। प्रिया ने उनकी ओर देखा, दोनों बच्चे हँस रहे थे। प्रिया भाव-विह्वल हो उठी। मातृत्व जाग उठा। वह दोनों बच्चों को हृदय से लगाकर बोली, 'हाँ, ये मेरी जिंदगी के अनमोल उपहार हैं। मैं अपनी सारी जिंदगी इनके सहारे गुज़ार दूँगी।' प्रिया के चाचा अपने आँसुओं को रोक नहीं पाए। परन्तु ये आँसू प्रिया के लौटने की खुशी में बह रहे थे।

मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश), पिन कोड - 231001
फोन नंबर - 7007224126

गाँव की गलियों से...

वीना सिंह

गाँव की कच्ची पगडंडियों पर जो कदम सबसे तेज़ चलते थे, वे रधिया के थे।

लोग कहते–

'रधिया मोर-सी चाल चलती, पर मेहनत बैल से भी ज़्यादा करती है।'

सुबह होते ही वह सबसे पहले घर के आँगन में झाड़ू लगाती, फिर तालाब से पानी लाती, चूल्हा सँभालती, और माँ के सभी कामों मेँ हाथ बटाती।

धूप कहीं भी हो, रधिया की आँखों में हमेशा चमक रहती–जैसे भीतर कोई सपना टिमटिमा रहा हो।

रधिया की माँ गाँव की सबसे संतुलित और चुप रहने वाली महिला थीं।

सारी दुनिया उन्हें साधारण समझती रही, पर रधिया जानती थी कि माँ के भीतर एक पूरा समुद्र छिपा है।

माँ चूल्हे पर रोटी सेंकते हुए अक्सर कहतीं–

'बेटी, दुनिया में सबकी थाली में समान दाल नहीं पड़तीष्ठ

पर जिद उतनी रख, जितनी भूख–तभी जिंदगी बनती है।'

रधिया मज़ाक करती–

'माँ, तुम्हारे मुहँ से दार्शनिक बातें सुनके पूरा गाँव दंग हो जाए!'

माँ हँस देतीं ...

माँ की यही हँसी रधिया के भीतर साहस भरती थी।

पिता जो पूरे गाँव के मास्टर जी थे, साथ ही खेत के छोटे किसान भी।

पर दिल के सबसे बड़े आदमी।

रधिया की हर बात सुनते, हर चोट पर हाथ रखते, हर सपने को जगह देते।

गाँव के कई लोग ताना मारते–

हद हो गई मास्टर जी! लड़की को इतना सिर चढ़ा दिए हो!'

पर पिता बस मुस्कुरा कर कह देते–

'हम सिर पर नहीं चढ़ा रहे, आगे बढ़ा रहे हैं।

रधिया को पढ़ाई से बेहद लगाव था।

चूल्हे की राख झाड़ते-झाड़ते भी वह किताब का कोई न कोई शब्द याद करती रहती।

अपनी जिद और लगन से पड़ोस के गाँव के स्कूल से वह इंटर तक पहुँच गई–

बारिश में पैदल, धूप में पैदल, कीचड़ में फिसलते हुए,

पर पीछे नहीं मुड़ी।

इंटर पास करते हुए रधिया ने एक दिन घर में सबको चौंका दिया–

माँ, बाबा... हम डॉक्टर बनेंगे।

घर में जैसे सन्नाटा छा गया। परिवार के लोग सकते मेँ आ गए।

मुखिया के घर का दालान हो या खेत की मेड़–गाँव ने कभी किसी लड़की को डॉक्टर बनते नहीं देखा था।

लोगों ने सोचा भी नहीं था।

माँ ने सबसे पहले पूछा–

बेटी, पढ़ाई में बहुत मेहनत लगेगी, तरह तरह की परेशानियां आएंगी, डरोगी तो नहीं, डिगोगी तो नहीं ?

रधिया बोली– नहीं माँ , आप हमारी ताकत हैं, मैं नहीं डिगूंगी। बस आगे बढूंगी।

पिता ने बेटी की इच्छा का मान रखते हुए बड़ी धीमी आवाज़ में कहा–

'बेटी, हम तो तेरे ही साथ हैं, पर बात सिर्फ हमारी कहाँ है। गाँव क्या कहेगा, शायद तेरा फैसला स्वीकार ही नहीँ करेगा। और सच पूछो तो हमारा भी मन संशय से भर रहा है...

'डॉक्टर? पर खर्चा? पढ़ाई? बड़ा शहर? लड़की जात का जीवन आसान तो नहीं होगा ''ऊपर से गाँव वालों के कड़ूए बोल?

गाँव सचमुच बोल ही रहा था–

कभी खुले में, कभी बंद कमरों में।

सबसे बड़ी समस्या पढ़ाई नहीं थी–

समस्या यह थी कि रधिया को शहर जाकर रहना होगा।

वहाँ लड़के-लड़कियों के साथ क्लास चलेगी।

अलग माहौल, अलग दुनिया, अलग रीति-रिवाज।

गाँव और परिवार के लोग अब खुल कर विरोध पर उतर आए थे, कुछ ने कहा- मास्टर जी, लड़की हाथ से निकल जाएगी। उसे बाहर जाने से रोकिए।

पिता का विश्वास हिल गया।

उन्होंने पहली बार कठोर स्वर में कहा–

'रधिया, पढ़ाई-लिखाई अब बंद कर...रधिया चुप रह गईं।

माँ ने शांत स्वर में कहा–

लड़की की पढ़ाई खर्चा नहीं, निवेश है।

और रधिया में काबिलियत है।

जाने दो, पढ़ने दो इसे। दूसरों की बातों मैँ आकर अपनी रधिया पर शक ना ही करो जी।

माँ ने चूल्हे की आँच धीमी की और समझाते हुए बोलीं–

'बोलना लोगों का काम है।

बेटी को रोकना या न रोकना हमारा काम है।

देखो जी, आज तुम डरे तो रधिया कभी न उठ पाएगी।'

पिता ने सिर झुका लिया–

माँ की शांत दृढ़ता घर की सबसे मजबूत दीवार थी। जो रधिया को दहलीज पार कराने मैँ काम कर गईं।

पिता ने अनमने मन से अनुमति दे दी,

पर गाँव ने नहीं।

चौपाल पर चर्चा होने लगी–

'लड़की अकेले कस्बे जाई?'

'बहुत उड़ने लगी बा।'

'पढ़-लिख के का कर लेई?'

माँ सब सुनतीं, पर उनका मन ज़रा भी नहीं डोला वे अडिग रहीं।

उन्होंने बस इतना कहा–

बेटियाँ फूल होती हैं

बस उन्हें मुरझाने से पहले संभालना पड़ता है।'

जब रधिया ने जाने की तैयारी की,

माँ देर रात तक उसके कपड़े तह करती रहीं। तरह तरह के व्यंजन बनाती रही।

थोड़ी देर बाद चुपचाप उठीं, आँगन में गईं, तारों को देखा और कहा–

'भगवान, रधिया को बस मन का उजाला देनाष्ठ

बाकी अँधेरा तो हम दोनों सँभाल लेंगे।'

रधिया शहर तो गईं पर अपना गाँव नहीं भूली, अपना संकल्प भी नहीं भूलीं रधिया पढ़ती रही, बढ़ती रही,

माँ-पिता खेत-बाड़ी में जुटे रहे।

कभी-कभी चिट्ठियाँ आतीं, तो माता-पिता विहवल हो उठते। रधिया पूरे गाँव का हाल पूछती।

फिर एक दिन पूरे गाँव को चौंका देने वाली आवाज़ आई–

डॉक्टर रधिया अपने गाँव आ रही है

चौपाल से लेकर पगडंडी तक लोग जमा हो गए।

रधिया सबसे बिना शिकायत के मिली।

गाँव के अस्पताल की हालत देख रधिया की आँखें भर आईं–

'इतने सालों में कुछ नहीं बदला?'

मुखिया बोले–

'कई डॉक्टर लोग आए-गए पर टिके कोई नहीं।'

रधिया ने कहा–

'मैं टिकूँगी।

क्योंकि यहाँ मेरी जड़ें हैं।'

माँ गर्व से भर उठी. ..

माँ रधिया को देखकर रो भी रही थीं, हँस भी रही थीं।

उन्होंने धीरे से कहा–

'देख बेटी

तेरा सपना पूरा हुआ।

अब मेरा सपना तू पूरा कर–

इस गाँव की और लड़कियों को डरना बंद करा दे।'

रधिया ने माँ-बाबूजी का हाथ पकड़कर कहा–

मैं आज जो हूँ न

आपकी वजह से हूँ।

आपने बस जन्म नहीं दिया–

हिम्मत दिया, आकाश दिया, पंख दिए।'

मैं आपकी हर इच्छा का मान रखूंगी।

अब गाँव की आँखें अब खुल गईं थीं, लड़कियां केवल चूल्हा-चौका करना नहीं जानती, डॉक्टर भी बन सकती हैं।

अगले दिन, रधिया ने चौपाल में लड़कियों का पहला स्वास्थ्य शिविर लगाया।

औरतें पहली बार बिना डर डॉक्टर के सामने खड़ी हुईं। रधिया ने सभी से यही कहा- अपनी बच्चियों को जरूर पढ़ाना, आगे बढ़ाना।

अब गाँव में कोई भी सवाल नहीं उठाता कि लड़कियां क्या कर सकतीं हैं। क्योंकि मिट्टी गवाही देती है–

कि एक लड़की जब रास्ता बनाती है,

तो गली छोटी नहीं पड़ती–

गली बड़ी हो जाती है।

जन सहायता हास्पिटल

अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त

(आकस्मिक सेवा निःशुल्क उपलब्ध)

24/7 EMERGENCY SERVICE

कटरियाँ (इन्डस्ट्रियल एरिया के सामने, नेशनल हाइवे-2) रामनगर मार्ग, वाराणसी

मो0- 9984499616, 9415441990

संस्कारी पुड़िया

-श्यामल बिहारी महतो

शाम होते होते सगरो गाँव में ढिंढोरा सा पिट गया- ' गोपला ने गणेशवा की बहू को ले भागा...!'

' सुना तुमने,भौजी देवरवा के साथ भाग गयी...!'

जिसने सुना, वही दोनों को गरियाते नज़र आये-

' छि : छि : कैसन युग आ गया, बोडो-छोटो की कोई ख्याल नाय..! ' औरतों को खुराक मिल गया।

' आज के लौंडा- छौंडा से इससे बेहतर उम्मीद नहीं कर सकते हो..!' बूढ़े कुढ़ने लगे।

' न रिश्तों की प्रवाह है न लाज लिहाज..!' हर किसी का मुंह बजने लगा था।

खिसियायी सुशीला देवी कपार पर हाथ धरे आंगन में बैठी अपनी तकदीर को कोसने लगी-' भतार भी ढंग का नहीं मिला, बेटा भी उसी के रंग निकला..!'

सुशीला देवीगाँव के आदर्श आंगनबाड़ी केन्द्र में बच्चों कोआदर्श की पाठ पढाती थी। गाँव में लोग उसे मास्टरनी कहा करते हैं थे। भारी भरकम शरीर की मालकिन सुशीला देवी को फाड़ देने से पैंतीस पैंतीस की दो औरतें निकल आती। उसी को उसके छोटे बेटे ने उसके जीवन का जैसे दो फाड़ कर दिया था । उसके बाद गाँव में जो दुर्गन्ध फैली !वो गूह मुंह होने जैसा था।

सुशीला देवी बहुत ही संस्कारी महिला थी। प्यार दुलार के साथ उसकी माँ ने बचपन में ही उसे संस्कार की जन्मघुटी पीला दी थी। लेकिन वही जन्मघुटी सुशीला देवी अपने दोनों बेटों को पिलाने में नाकाम रही थी । अगर पिला पाती तो जीवन का ऐसा कचरापन उसे देखना नहीं पड़ता ।

घर में क्या हो रहा है, गाँव में क्या हो रहा है,कौन क्या कर रहा है, उसके पति भालचंद महतो का उससे कोई मतलब नहीं था। और न पत्नी से कोई मतलब था न उसके प्यार से कोई वास्ता था । न बेटों के भविष्य को लेकर उसके दिमाग में कोई योजना थी। न उन दोनों की पढ़ाई से भी उसका कोई सरोकार, कोई लेना देना था। उनकी अनुपस्थिति में दोनों बेटे जैसे तैसे बढ़ रहे थे और पढ़ रहे थे। और वह गोमिया प्रखण्ड में एक सरकारी कर्मचारी के रूप में पैसे बटोर रहा था, कहें तो पैसे पीट रहा था। एक बार महीने में घर आने की बात कहने पर पत्नी को एडे.मुक्के मार कर बुरी तरह घायल कर दिया था। उसके गुप्तांग को सूजा देख डॉक्टर मीरा जैन ने गुस्से मेंकहा था ' वह आदमी है कि कोई दरिंदा ! पत्नी को इतनी बेरहमी से कोई पीटता है क्या..?'

उस दिन के बाद सुशीला देवी ने पति के साथ कोई समझौता नहीं की और अपनी जिंदगी अपने ढंग जीने का फैसला कर लिया। आंगनबाड़ी उसके जीवन का केंद्र बन गया ।

यधपि अब तक जिये जिन्दगी में सुशीला देवी कभी सकून के दो पल नहीं जी पाई थी। वो समझ नहीं पा रही थी कि उसके जीवन में इतना उठा पटक क्यों है? बड़ा बेटा गणेश आंख चिपता हुआ पैदा हुआ था। वह हमेशा आंख चिपता रहता। शरीर बाप सा काला और चूल भालू सा। शक्ल से भी और अक्ल से भी बाप जैसा। पैदा भी हुआ था विचित्र स्वभाव का। बचपन में तो प्रायः सभी बच्चे घिसिर घिसिर कर चलते हैं। लेकिन गणेश पेट के बल पर चलता था। जहाँ बैठता उसी दिशा में लंबे समय तक टकटकी लगाये देखता रहता था। बोलता कम और खाता ज्यादा। गोबर गणेश जैसा। ठीक उसके विपरीत सुशीला देवी का छोटा बेटा गोपाल पैदा हुआ था। पर यह भी शक्ल से बाप पर गया था। लेकिन अक्ल उसने बाप से तेज़ पाया था। बचपन में ही औरतों की साडियां खींचना जैसेपेट से ही सीख कर आया था। जब वह सात आठ साल का था तभी उसने एक दिन साड़ी खींच कर माँ को ही नंगी कर दिया था। माँ को लगा था बेटा शरारत कर रहा है, लेकिन जब पूरी तरह नंगी हो गई, तो बेटे को जोर का थप्पड़ मार दी ' बाप जैसा बनेगा क्या तू भी ?'

सुशीला देवी पति भालचंद् को भी कहां समझ पाई थी। जब घर आता। पूरा जानवर बना हुआ होता। आते ही सुशीला देवी पर अय्यास की तरह टूट पड़ता। न दिन देखता न रात। न घर देखता और न आंगन। पत्नी की शरीर को नोचना शुरू कर देता। बड़े हो रहे बच्चों तक नज़र अंदाज कर दिया जाता था। एक दिनभालचंद ने घर में कदम रखते ही आंगन में बाल संवार रही सुशीला देवी को पीछे से दबोच लिया और आगा पीछा देखे बगैर सर्रर.से साड़ी खीच कर पत्नी को नंगा कर दिया और उसी तरह उठा कर सीधे अंदर विस्तर पर ले गया था। यह सब गोपाल ने अपनी चंचल आंखों से भरा पुरा रूप में देखा । तब वह आंगन के एक कोने में बैठा लुडू खेल रहा था ।

वही गोपाल बचपन से ही औरतों के साथ लुकाछिपी खेलना शुरू कर दिया था। नहाती हुई औरतों को दीवार के पीछे से छिपकर देखना, लघु शंका कर रही को टकटकी लगाये देखना, गोपाल ने पैदा होते ही जैसे सीख लिया था। पर सुशीला देवी को यह बच्चों का बचकाना से ज्यादा कुछ नहीं लगता । ' बच्चे बचपन में ऐसी शरारतें करते ही हैं !' किसी के उल्हाने की जवाब में वह कहा करती थी।

उधर गोपाल जैसे जैसे बड़ा होता गया, उनकी हरकतों के पांव भी बड़े होते चले गये थे ।

अब उसे जब मौका मिलता, औरतों की जमात में घुस जाता और उनकी बातों को बड़ा गौर से सुनता। कभी कभी औरतें उसे डांट कर भगा देती ' चल भाग यहाँ से, हमारी बात क्या सुनता है, जनीमेहरा (चुपके चुपके औरतों की बात सुनने वाला) कहीं के..!' वह उठ कर थोड़ी दूर जाता, फिर लौट आ चुपके से किसी के पीछे चिपक जाता। उसे देख मुझे अपने बचपन के दोस्त दौलत की याद रही थी। ' पक्का जनीमेहरा है !'औरतों ने उसे उपाधि दे रखी थी। वह भी अक्सर औरतों की भीड़ में पाया जाता था। अब इस दुनिया में नहीं रहा ।

इधर गणेश सोलह साल की उम्र में भी वैसा का वैसा ही था। शरीर से बड़ा हो गया था।

लेकिन हुलकने का भाव- अंदाज वही था,बचपन वाला ! बोर्ड परीक्षा में गांधी डिवीजन से उसने पास किया था- इसी साल। पर घर में किसी ने उसे बधाई तक नहीं दी। माँ ने कहीं से आधा किलो लड्डू लाकर दी और कहा ' बांट दो अपने दोस्तों के बीच, ताकि सबको पता चल जाएं कि तू पास कर गया है..!'

उसने वही किया। परन्तु यहाँ भी किसी दोस्त ने उसे बधाई नहीं दी थी। उसने बुरा नहीं माना। बाद में बकरीयों को लेकर जंगल की ओर निकल पड़ा था। बकरियाँ चराना उसका रोज का काम था।

दो साल बाद सुशीला देवी के दूसरे बेटे गोपाल ने बोर्ड परीक्षा लिखी। बाप के डिविजन मार्क से पास किया। बाप भालचंद सेकेंड होल्डर था। इस रिजल्ट के बाद गोपाल का एक और रिजल्ट सामने आया - लड़की अगवा करने का !

बिमला कुमारी पडोस गाँव की थी। नावाडीह हाई स्कूल में नवमी की छात्रा थी। हर दिन पैदल स्कूल आती जाती थी। सुनसान तेतरिया मोड़ में एक दिन गोपाल ने उसे उठा लिया। सोचा था यह भी मान जायेगी, जैसे पहले के दो लडकियां मोबाइल रिचार्ज के पैसे लेकर मान गयी थीं। लेकिन बिमला नहीं मानी, उसने बवाल मचा दी। पडोसी गाँव में खूब हल्ला मचा। लडकों ने गोपाल को खूब दौडाया। दस बजे रात वह पकड़ में आया। दोनों गाँव के बीच चबूतरा पर पंचायत बैठी। गोपाल का बाप भालू की तरह पंचायत में आकर खड़ा हो गया। जहाँ गोपाल की माँ सुशीला देवी ने पंचायत में अपनी बात रखी -' मैं लड़की को अपने घर की बहू बनाने को तैयार हूँ..!'

लड़की के बाप ने एतराज़ किया। कहा -' मेरी लड़की अभी नाबालिग है, और फिर इस म्लेछ से! कौन अपनी बेटी का ब्याह दे। इसे पुलिस के हवाले कर देना चाहिए ताकि फिर यह गंदी हरकत न करे..!'

इसके बाद बड़ी देर तक पंचायत शोर गुल में डूबा रहा। उसी बीच मुखिया ने हस्तक्षेप करते हुए कहा ' हम किसी के भविष्य को बर्बाद करना नहीं चाहते है, इसकी पहली गलती समझ माफ़ किया जा सकता है। लेकिन फिर दूबारा ऐसा हुआ तो सीधे पुलिस के हवाले कर दिया जायेगा..।'

सुशीला देवी को समझ में आ चुका था। छोटा बेटा बुरी तरह बिगड़ चुका है। उसे सुधारना उसके बस की बात नहीं है। तभी उसका ध्यान बड़े बेटे गणेश की ओर गया। वह इक्कीस साल का हो चुका था। एक दिन उसने गणेश से कहा ' मैं तुम्हारी शादी कर देना चाहती हूँ..!'

गणेश बहुत कम बोलता था। तब भी उसने कम ही बोला-' कर दो, तुम्हारे कामों में मदद कर देगी..!'

पर गणेश की शादी, सुशीला देवी के जीवन में बडा ही बुरा और गुड़ गोबर करने वाला साबित हुआ ! ' मास्टरनी, मरते दम तक इसे भूला नहीं पायेगी.।' ऐसा लोगों का मानना था। और इसका कारण बना कौन, वही कपूत बेटा गोपाल !

आषाढ़ माधे गणेश की शादी पडोसी गाँव के दिनबंधु महतो की बेटी सुमित्रा कुमारी के साथ समाजिक रीतिरिवाज से कर दी गई। इस शादी से सुमित्रा खुश नहीं थी। उसे गणेश पसंद नहीं था। ' बिना तिलक दहेज के आज कल कौन लड़का शादी करता है..? बोलो !' माँ बाप ने समझाया

इस तरह माँ बाप के दबाव के आगे उसे झूकना पडा था। सुमित्रा थोड़ी चंचल स्वभाव की तो थी ही, आजाद ख्याल की भी थी। चटर पटर खाने और अच्छे कपड़े पहनने का शौक़ भी रखती थी। लेकिन अभाव ने उसके हाथ पैर बांध रखे थे। शादी होते ही उनकी दबी अकाक्षांओं ने जोर मारना शुरू कर दिया था। हर दिन पति के सामने नयी नयी फरमाइश करने लगी। गणेश कुछ ला देता, कुछ नहीं ला पाता। सुमित्रा उल्हाना देने लगती ' कैसन मरद हो, आपन पत्नी की इच्छा पूरी नहीं कर पाते हो..? ' और रूठ जाती थी। गणेश उसको उसी हाल में छोड़ बकरियों को लिए जंगल की ओर निकल जाता। तब यही गोपाल भाभी की बाकी इच्छाओं को लाकर पूरी कर देता और कहता ' लाकर तो दे रहा हूँ। पर देवर हूँ, पति मत समझ लेना..!'

' लाकर दे तो रहे हो, पर भाभी हूँ, पत्नी मत समझ लेना..! ' सुमित्रा हंस कर जवाब देती।

इस तरह की बातें उस घर की दीवारों से हर दिन टकराने लगी थीं। जो सुमित्रा इस शादी से नाराज थी। वही गोपाल का सान्निध्य पाकर सूर्यमुखी लगने लगी थी। वक्त दबे पाँव आगे बढता रहा। देवर भाभी की युगल जोड़ी से घर का कोना कोना खिलखिलाने लगा। सुमित्रा भूल चुकी थी कि गोपाल उसका मरद नहीं बल्कि देवर है। हर वक़्त उसी के बारे सोचती रहती थी। सुशीला देवी को अच्छा भी लगता और नहीं भी लगता ' देवर भाभी में इतना सब कुछ तो होता है..!' वह सोचती थी।

सुमित्रा करम परब में नैहर गयी थी। दस दिन रही। सुशीला देवी ने गणेश को उसे लाने भेजा। सुमित्रा ने आने से मना कर दी। गणेश लौट आया। उल्टे सुमित्रा ने गोपाल को अपने पास बुला ली। गोपाल पंद्रह दिन सुमित्रा के साथ रहा। सोलहवें दिन गोपाल के साथ ससुराल चली आई। परन्तु रात को वह गणेश के कमरे में जाने की बजाय गोपाल के कमरे में घुस गयी और अंदर से हुडकी (कुण्डी) लगा दी। सुबह सुशीला देवी ने उसे बहुत खरी खोटी सुनाई ' तुम्हारा मरद गोपाल नहीं गणेश है, यह लछन ठीक नहीं है, लोग सुनेंगे तो थूकेंगे तुम पर। मरद बदनाम नहीं होता, औरतें बदनाम होती हैं..! ' और वह अपने आंगनबाड़ी चली गई।

शाम को सुशीला देवी लौटी तो, घर में न सुमित्रा मिली और न गोपाल मिला। आंगन में गणेश माटी की मूरत की भांति एक कोने में लुटे-पिटे हालत में बैठा हुआ था। उसकी सुदामा हालत देख सुशीला देवी को उस पर बड़ा क्रोध आया। आगे बढकर उसने उसकी गाल पर एक जोरदार चांटा जड़ दी। कहा -' तुम्हारी औरत किसी दूसरे मरद के साथ भाग गयी और तुम यहाँ माटी का माधवबना बैठा है। उसकी हाथ पैर नहीं तोड़ सका..!'

उधर गोपाल का फोन लगातार 'स्वीच आफ' आ रहा था।

सुशीला देवी आंगन में ही बडबडाते हुए चक्कर काटने लगी ' वाह रे बेटा ! बाप काजन्मघुटी तुमने भीपी ली..!'

ग्राम- मुंगो, पोस्ट- गुंजरडीह, थाना-
नावाडीह, जिला- बोकारो, झारखंड
पिन कोड-829132

अशोक वाधवाणी की दो लघुकथाएं

पलटवार

अट्टालिका और आलिशान बंगलों से घिरी धनाढ्य कालोनी की एक अट्टालिका की पहली मंज़िल पर मैं किराएदार के रूप में रहने आया। हमारी अट्टालिका से जुड़ा एक पुराना, जर्जर मकान था। उस में मजदूर दंपति रहते थे। रविवार छुट्टी का दिन छोड़कर, हर सुबह दोनों इकट्ठे काम पर निकलते। शाम को पहले मजदूरन काम निपटाकर घर लौटती और पति थोड़ी देर बाद दारू पीकर घर लौटता। लगभग रोज़ाना उनके घर से कहा-सुनी, लड़ाई-झगड़े की आवाज़ें निकलती। आस-पास के रहिवासियों को उनका घर टाट में पैबंद समान लगता।

आज फिर मजदूर पति नशे में घर लौटा। आते ही पति-पत्नी में किसी बात पर वाद-विवाद शुरू हुआ। पति ने गाली-गलौच करने के बाद पत्नी को मारना-पीटना शुरू किया। पत्नी गुस्से से आगबबूला होकर पति पर गुर्राई, 'बाज आओ अपने जंगलीपन से। मैं तुम्हारी पत्नी हूं, कोई ख़रीदी हुई गुलाम नहीं। तुम्हारी नशाखोरी, झगड़ालू प्रवृति के कारण ही पास-पड़ौस वाले सीधे मुंह मुझसे बातें करना पसंद नहीं करते। हमारे बीच के झगड़े को अपनी खिड़कियों से ताक-झांक कर, हमारा मज़ाक उड़ाते हैं। अगर किसी दिन मेरी सहनशक्ति ने जवाब दे दिया तो फिर तुम्हारी खैर नहीं।' पत्नी की जली-कटी सुनने के बाद, उसके अंदर का सोया हुआ पुरूष रूपी अहंकार जाग उठा। दुबारा पत्नी को मारकर ही संतुष्ट हुआ। पत्नी के सिसकने की आवाज़ें, धीरे-धीरे शांति में बदल गई।

रविवारिय छुट्टी के कारण, मैं अपनी बाल्कनी में बैठा अख़बार पढ़ने में व्यस्त था। इतने में मेरे कानों में बचाओ! बचाओ!! की चीख- पुकार वाला पुरूष स्वर सुनाई पड़ा। मैंने अपनी आंखों से जो दृश्य देखा, वो अचंभित करने वाला था। मजदूरन पत्नी अपने हाथ में लकड़ी का डंडा लिए अपने पति को मारने के लिए उसके पीछे दौड़ रही थी। पति ख़ुद को बचाने के लिए, चीखते-चिल्लाते हुए दौड़ रहा था। आस-पास के लोग खिड़कियों, दरवाज़ों पर खड़े होकर, पति-पत्नी के बीच का तमाशा देखकर हंस रहे थे। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि कल तक जिसे मैं अबला, असहाय, लाचार, मजबूर औरत समझ रहा था, आज उसने प्रतिकार स्वरूप डंडे को अपना हथियार बनाकर, रणचंडी का रूप कैसे धारण कर लिया था ?

संयुक्त परिवार

आत्माराम अपनी पत्नी और तीन बेटों, तीन बहुएं, पोतियों, पोतों के साथ सुखमय जीवन बिता रहे थे। उनकी दो बेटियाँ भी पति, बच्चों के साथ सुखी थीं। घरवाले उनके विवाह की 50 वीं वर्षगाँठ मनाना चाहते थे, लेकिन वे नहीं माने थे। बाद में उन्हें उसका पछतावा भी हुआ था। इसलिए अब उनके विवाह की 60 वीं वर्षगाँठ मनाने का परिवार ने निर्णय सुनाया तो उन्होंने सब के अनुरोध को हंसी-ख़ुशी स्वीकार कर लिया। गर्मियों का मौसम और बच्चों के स्कूल की छुट्टियां होने से सभी जी जान से जुट गए, कार्यक्रम को अविस्मरणीय बनाने के लिए। सभी रिश्तेदारों और चुनिंदा मित्रों, शुभचिंतकों को भी निमंत्रण भेज दिया। एक बड़ा हॉल भी बुक किया गया। सारी तैयारियाँ ऐसे हो रहीं थी, मानो दोनों का पुनर्विवाह होने वाला हो।

रोज़ाना पैंट-शर्ट पहनने वाले आत्माराम आज रंग-बिरंगे कुर्ते और सफेद धोती में दूल्हे समान सजे-धजे, सुंदर दिख रहे थे । शांति हमेशा सलवार-कुर्ता पहनती हैं, उन्हें भी दुल्हन की तरह संवारा गया था। लाल साड़ी पहने वे ख़ूबसूरत लग रहीं थी। दोनों को बड़े स्टेज पर बिठाया गया था। घर के सभी सदस्य बढ़-चढ़कर मेहमानों की आव-भगत करने में व्यस्त थे। चतुरमल और आत्माराम की मित्रता तभी से है, जब दोनों कुंवारे थे। चतुरमल पत्नी जानकी संग पधारे थे। घर के सभी सदस्यों का आपस में भरपूर स्नेह, प्रेम, अपनत्व, सामंजस्य और भाईचारा देखकर, दंपत्ति अभिभूत हुए। ऐसा मनोहारी दृश्य देखकर, जानकी से रहा नहीं गया। उन्होंने तीनों बहुओं की प्रशंसा के पुल बांधते हुए उनसे कहा, ' आप लोगों का आपस में प्यार देखकर, अत्यधिक आनंद आया। आत्माराम और शांति भाग्यशाली हैं जो उनको ऐसा प्यारा परिवार नसीब हुआ है। ' जानकी के मुंह से अपनी स्तुति सुनकर सभी बहुओं के चेहरे ख़ुशी से खिल उठे, गुलाब फूल का पंखुड़ियों की भांति। उनकी प्रतिक्रिया के पहले वहाँ उपस्थित आत्माराम की पोतियों, पोतों, नातियों, नातिनों ने एक साथ ख़ुशी से चहकते हुए कहा, ' वे नहीं, हम सब सौभाग्यशाली हैं। ' कहते हुए उन्होंने स्टेज पर टंगे बड़े बैनर को दिखलाया। उसपर छपा था, ' हम सब सौभाग्यशाली हैं जो हम परदादा जी / परदादी जी, दादा जी / दादी जी के साथ रहते हैं। '

उसके नीचे सारे बच्चों के नाम छपे थे। चतुरमल ने जाना कि बहुओं, बेटों, बच्चों में आपसी तालमेल, मिल

-जुलकर रहने की प्रवृति, परिवार में मिले बड़े-बुज़ुर्गों के आशीर्वाद के साथ-साथ बिना शर्त स्नेह और समव्यवहार का भी सुपरिणाम है।

गांधी नगर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र
संपर्क : 421216288

पवन शर्मा की दो लघुकथाएं

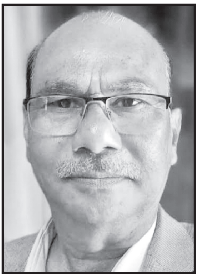

दादी का संदूक

बरसों बाद गांव का वह कमरा खोला गया जहाँ दादी का सामान रखा था।

सब कुछ धूल में लिपटा हुआ था – जैसे वक़्त वहीं सोया हो।

कोने में वही लकड़ी का संदूक रखा था – भारी, लोहे की पट्टियों वाला, ऊपर से थोड़ा उखड़ा हुआ।

नेहा ने धीरे से उसे छुआ।

नेहा मुस्कुराई, 'मांष्ठ ये वही संदूक है न, जिसे दादी हर रात बंद करके उस पर बैठ जाती थीं?'

मांधीरेसे मुस्कराते हुए बोलीं, 'हाँष्ठ वही। उसमें उनका सब कुछ था – चिट्ठियाँ, पायल, तुलसी के बीज, और जाने क्या-क्याष्ठ'

नेहा बोली, 'खोल सकते हैं क्या?'

मां चुप रहीं, फिर झुककर ताले में चाभी डाली। क्लिक की आवाज़ हुई – संदूक खुला।

भीतर तह लगाए हुए कपड़े थे – पुराने, हल्के रंगों केष्ठ

एक डिब्बा खोला तो भीतर सूती रूमालों में बंधी चिट्ठियाँ थीं – स्याही धुँधली पड़ गई थी, मगर शब्द अब भी जिंदा हैं।

नेहा ने एक चिट्ठी पढ़ी, 'ये तो बाबूजी की लिखी लगती हैष्ठ 'मेरे बिना नींद ठीक से आती है कि नहीं?'ष्ठ ओहष्ठ'

मां ने चिट्ठी हाथ में ली और धीरे से आँखों से लगाई और धीरे से बोलीं, 'जब बाबूजी रेलवे की नौकरी में बाहर रहते थे, दादी उन्हें हर महीने चिट्ठी भेजती थीं और फिर जवाब मिलने तक इसी संदूक पर बैठकर इंतज़ार करती थीं।'

नेहा ने संदूक के नीचे एक और कपड़ा हटाया – वहाँ पायल थी और एक छोटी सी गुड़िया। नेहा ने आश्चर्य कहा, 'ये तो मेरी है! जब मैं पांच साल की थी, दादी ने बनाई थी।'

'दादी कहती थीं – 'संदूक में रखो, ताकि समय चुरा न ले'... ' माँ रुकीं, फिर थोड़ी देर बाद आगे कहा, 'सुन, ये संदूक तू रख लेना। जब तेरी बेटी बड़ी हो, तब खोलना।'

नेहा ने संदूक को देखा – अब वह महज़ लकड़ी का बक्सा नहीं था।

वह एक लोरी थाष्ठ पीढ़ियों से गाया गया।

बगीचे की मिट्टी

नेहा अपने आठ वर्षीय बेटे ईशान के साथ ननिहाल आई थी – माँ का पुश्तैनी घर। आँगन अब सीमेंट से ढँक गया था, लेकिन कोने में एक छोटा सा बगीचा अब भी बचा था – वही, जहाँ कभी नेहा ने अपने पहले गुलाब बोए थे।

ईशान उत्साहित होकर बोला, 'मम्मा! यहाँ तो असली मिट्टी है! मैं इसमें खेल सकता हूँ?'

नेहा मुस्कुराई, 'हाँ बेटा, यहीं तो मैं भी खेली हूँ ष्ठ जब तुम्हारी उम्र की थी। ही थी।'

ईशान मिट्टी में हाथ डालने लगा – उंगलियाँ गीली होकर भीनी गंध छोड़ रही थीं। नेहा पास बैठ गई, वहीं जहाँ एक बार उसकी नानी तुलसी के पास दीपक रखा करती थीं।

'मम्मा, मिट्टी से इतनी अच्छी खुशबू क्यों आती है?'

'क्योंकि इसमें यादें उगती हैं और यादों की भी अपनी महक होती हैष्ठ'

'मम्मा, आपने क्या बोया था यहाँ?'

नेहा मुस्कुरा कर बोली, 'गुलाबष्ठ और एक दिन एक मिर्ची भी। नानी हँसती थीं – कहती थीं, 'ये लड़की फूलों में आग बोती है'।'

ईशान ने एक छोटी सी क्यारी बना ली, 'मम्मा, मैं यहाँ एक बीज बोऊँगा – फिर जब हम अगली बार आएँगे तो देखेंगे क्या उगा?'

एक बीज बोऊँगा – फिर जब हम अगली बार आएँगे तो देखेंगे क्या उगा?'

नेहा ने पास पड़ी छोटी सी कटोरी से तुलसी के बीज उठाए – वही जो संदूक में रखे थे, 'ले इशू, इन्हें बो देष्ठ ये नानी की छोड़ी हुई मिट्टी है और उनके छोड़े हुए बीज।'

ईशान ने मिट्टी में हल्की सी खरोंच बनाई और बीज बो दिए और धीरे से बुदबुदाया, 'उग जाना, ओ.के....मैं फिर मिलने आऊँगा।'

नेहा ने ईशान का माथा चूमा –

....और बगीचे की मिट्टी में फिर एक रिश्ता गाढ़ा हो गया।

विद्या भवन, वार्ड नंबर-17, सुकरी चर्च, जुन्नारदेव, जिला- छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश), पिन-480551
मोबाइलः 9425837079 / 8319714936

महर्षि दयानन्द वन्दना

–डॉ. केवलकृष्ण पाठक

हे महर्षि!
भावपूर्ण प्रणाम मेरा
आपने धरती पे आकर
तोड़ डाली धर्म-रूढ़िगत परम्परा
मिथ्या को मिथ्या कहा
और वेद का प्रचार करके
कर दिया स्थापित
साम्राज्य उसका।
आपका विश्वास था
है अनादि ईश्वर और प्रकृति
है पूज्य नारी जाति भी।
कर्म का फल सबको मिलता
पाप क्षय होते नहीं व्रत पूजा से
मोक्ष तो मिलता है अपने शुभ कर्मों से।
मूर्ति पूजा,भूत प्रेत, मत मतान्तर
पतन के हेतु हैं सब ये
और मानव के विरोधी।
आप का मन्तव्य था कि
कृपा प्रभु की पा के मानव
छोड़ दुर्गुण -दोष सारे
अर्चना परमात्मा की कर
प्रेममय जीवन बिताए
और मानव जो मिले पीड़ित
जीव-जन्तु की भी पीड़ा दूर करके
आत्मिक शांति को पाए।
ओम ही परमात्मा है
ओम ही जग का विधाता
ओम का ही जाप करके
जीवन को सुखी बनाए।
धर्म -अर्थ -काम -मोक्ष की सिद्धि करके
उन्नत आनन्द का जीवन बिताए।

जींद, मो. 09518682355

मैं औरत हूँ...

–डॉ. हंसमीत कौर

जब जनम तुझे देती हूँ, तब मैं माँ कहलाती हूँ।
बेटी बनकर तेरे मैं आँगन को भी महकाती हूँ।
भाई की कलाई पर चाँद तारों को सजाती हूँ,
सावित्री जैसी दृढ़ता से यमराज से भी लड़ जाती हूँ।
मैं वो हूँ जो हर किरदार में मजबूती को दर्शाती हूँ।
मैं औरत हूँ, हाँ औरत हूँ, हाँ औरत मैं कहलाती हूँ।

मैं ही सरस्वती, मैं ही आदि शक्ति हूँ,
किस्मत से जो वरदान मिले, वैसी वाली भक्ति हूँ।
चाँद तारों को छूने की कल्पना हूँ,
मैं ही तो रानी लक्ष्मी हूँ।

फिर क्यों आज मेरे जनम पर रोक है,
मेरी पैदाइश एक शोक है।
क्यों बेटी बेटे जितनी प्रिय नहीं,
आखरि क्यों उजड़ती बेटी वाली कोख है?

मेरे पाँव में जन्नत कहते हो,
पर मेरी जड़ों को ही मिटाते हो।
नवरात्रों में पूजते हो जिसे,
फिर उसे ही अभिशाप बताते हो।

मुझे बोझ समझने वालों, सुनो —
तुम्हारा बोझ उठाया है मैंने।
पहले नौ माह तक, फिर गोद में तुमको सहलाया है मैंने।
तुम्हारा कण कण कर्ज़दार है मेरा,
ज़रा सोच के तू देख भला —
जो मैं न होती, क्या तू होता?
अपनी मूर्खता तू दे जला।
बेटा अगर एक कुल का दीपक है,
मैं तो दो को रोशन कर जाती हूँ।

मैं औरत हूँ...

अरे क्यों डरे हैं मेरे जीवन से?
थोड़ा प्यार दे, थोड़ी दे शिक्षा,
फिर देख कली से जब वृक्ष बने,
कैसे निखरे सफलता की दीक्षा।

पीछे नहीं हूँ बेटों से...
हर बार मैं अव्वल आती हूँ।
घर भी, कारोबार भी संतुलित मैं चलाती हूँ।
जीवन का हर बोझ मैं मुस्कुराते हुए उठाती हूँ,
क्योंकि... मैं औरत हूँ...

बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा

ईमानदारों का सम्मेलन

पहली बार जिला मुख्यालय में 'ईमानदारों का राष्ट्रीय सम्मेलन' आयोजित हुआ। स्वागत द्वार पर बड़े अक्षरों में लिखा था–'सच्चाई ही हमारी पहचान है।' नीचे छोटा अक्षर में लिखा था–'प्रायोजकः यूनिवर्सल कंस्ट्रक्शन कंपनी (जिस पर सीबीआई की जांच जारी है)।' मुख्य अतिथि, माननीय मंत्री जी, जिन्होंने हाल ही में अपनी तीसरी पत्नी के नाम पर पाँच एकड़ ज़मीन रजिस्टर कराई थी, मंच पर पहुँचे तो तालियाँ गूँज उठीं। भीड़ में से किसी ने कहा–'यही सच्चे ईमानदार हैं, सब कुछ खुलेआम करते हैं!' मंत्री जी मुस्कुराए। उन्होंने भाषण में कहा–'देश को अब ईमानदारी की कमी नहीं, बस पहचानने की ताकत चाहिए।' भाषण समाप्त होते ही मंच संचालक ने घोषणा की–'अब ईमानदारी सम्मान समारोह होगा।' पुरस्कार स्वरूप मंत्री जी ने हर प्रतिनिधि को घड़ी भेंट की, जिस पर उनका चुनाव चिन्ह खुदा था। पत्रकारों ने पूछा–'घड़ी असली है या नकली?' आयोजक बोला–'घड़ी असली है, बस समय नकली बताती है।'

दूसरा सत्र 'नैतिकता के नए मानदंड' पर था। एक वक्ता, सरकारी बाबू, बोले–'पहले रिश्वत को अपराध माना जाता था, अब यह सहयोग शुल्क कहलाने लगी है। समाज विकासशील है, शब्दावली भी होनी चाहिए।' दूसरे वक्ता, प्राइवेट स्कूल के संचालक, बोले–'हम बच्चों में नैतिकता लाने के लिए जीना कठिन बना देते हैं। फिर जब बच्चा नियम तोड़ने लगे, तो वही असली नागरिक कहलाता है।' सभागार तालियों से गूंज उठा। तभी मंच के पीछे से आवाज़ आई–'कृपया चोरी गई कुर्सियाँ वापस करें।' प्रतिनिधि मुस्कुराए–'ईमानदारी का सम्मेलन है, कुर्सियाँ कहाँ जाएँगी?' कुछ देर बाद पाया गया कि दर्जनभर कुर्सियाँ पार्किंग में बिक्रय हेतु रखी थीं। आयोजक ने घोषणा की–'यह व्यवस्था शुल्क है।' बाबू जी बोले–'वाह, देश आगे बढ़ रहा है!'

तीसरे सत्र में 'डिजिटल ईमानदारी' पर चर्चा हुई। एक युवा अफ़सर ने कहा–'अब सब ऑनलाइन है। भ्रष्टाचार भी पारदर्शी हो गया है। ट्रांजैक्शन सीधे खाते में आती है, दलालों की ज़रूरत नहीं रही। यह डिजिटल इंडिया की सफलता है।' एक और विद्वान बोले–'ईमानदारी अब ऐप में मिलती है, वेरिफाई करके डाउनलोड करनी पड़ती है।' तभी मंच के सामने एक गरीब व्यक्ति अपनी फ़ाइल लेकर आया–'बाबू जी, दो महीने से आवेदन लंबित है।' बाबू ने मुस्कुरा कर कहा–'भाई, यह ईमानदारी का सम्मेलन है, सुविधा केंद्र नहीं। यहाँ सिर्फ भाषणों की अनुमति है, काम की नहीं।' वह आदमी चुप हो गया, लेकिन पौधे के पास खड़ा एक बच्चा बोला–'अगर यह ईमानदार हैं, तो हमारे गाँव में झूठे कौन रहते हैं?' सभा मौन हो गई। पंखे की आवाज़ में ईमानदारी की झिल्ली सी फड़फड़ाने लगी।

सम्मेलन के अंत में अध्यक्षीय वक्तव्य हुआ। अध्यक्ष महोदय बोले–'हम सब अपने-अपने क्षेत्र के ईमानदार लोग हैं। मैं डॉक्टर के नाम पर दवा बेचता हूँ, शिक्षक नकली प्रमाणपत्र देता है, अफ़सर काम न करके फ़ाइल दबाता है, नेता जनता को भरोसा देता है–और यही राष्ट्रीय एकता का आधार है।' सभागार ठहाकों से भर गया। उन्होंने कहा–'अगले वर्ष हम 'सच्चाई दिवस' मनाएँगे, बशर्ते प्रायोजक मिल जाए।' बाहर निकलते हुए किसी ने पूछा–'क्या सम्मेलन सफल रहा?' आयोजक हँसा–'पूरा बजट खर्च हो गया, अब तो ईमानदारी साबित है!' रात को शहर लौटने वाले प्रतिनिधियों की बसें चलीं। सड़क किनारे एक ठेला वाला बैठा था, धीरे से बुदबुदाया–'साहब लोग ईमानदार हैं, इसलिए गरीब अब भी ज़िंदा है।' सड़क की बत्तियाँ झिलमिलाईं–शायद वे भी इस नई ईमानदारी पर मुस्कुरा रही थीं।

स्मार्ट-मीटर की मार्फत बिजली का निजीकरण

–सुनील कुमार

बिजली के निजीकरण की ताजा तरकीब है, स्मार्ट-मीटर। इसमें ठीक मोबाइल फोन की तरह जरूरत-भर बिजली को रीचार्ज करके उपयोग किया जाएगा। कहा जा रहा है कि इससे बिजली की चोरी रोकी जा सकेगी, लेकिन क्या यह तरकीब आम, गरीब उपभोक्ताओं के हाथ से बिजली छीनने की तरकीब नहीं होगी? इसे आम नागरिक किस तरह से देख रहा है? बता रहे हैं, सुनील कुमार।

भारत में बिजली एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है। जिस तरह रोटी, कपड़ा, मकान की जरूरत है उसी तरह से बिजली की जरूरत हो गई है। बिजली नहीं रहने से घर में रोशनी नहीं होती, मोबाईल से लेकर टीवी,पंखा, कूलर, फ्रिज कुछ नहीं चल सकता। इसको बढ़ावा देने का काम भारत सरकार ने किया है। वह राशन दुकान पर मिलने वाले मिट्टी के तेल को बहुत पहले बंद कर चुकी है जिससे शहरों से लेकर सुदूर ग्रामीण इलाकों में भी रोशनी के लिए लोगों को बिजली पर निर्भर होना पड़ता है।

खाना बनाने के लिए लकड़ी के बाद केरोसिन ऑयल था जिससे लोग स्टोव पर खाना बना लिया करते थे। सरकार ने 2019 में राशन की दुकानों पर केरोसिन की बिक्री पूरी तरह से बंद कर दी और उस पर मिलने वाली सब्सिडी को खत्म कर दिया। केरोसिन ऑयल छीनकर शहर से गांव तक लोगों

को बिजली पर निर्भर बना दिया गया।

बिजली को बढ़ावा देने के लिए 25 सितम्बर, 2017 को प्रधानमंत्री ने दीनदयाल ऊर्जा भवन में 'प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना- सौभाग्य' का शुभारंभ किया था। इसका उद्देश्य हर घर तक बिजली पहुंचाना है। इस योजना के तहत 31 दिसम्बर 2018 तक राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को घरेलू विद्युतीकरण कार्य पूरा करना था जिससे कि 2019 तक हर घर में बिजली पहुंचाई जा सके।

इस योजना की विशेषता बताते हुए सरकार ने कहा है कि यह केरोसिन का विकल्प है। इससे सभी इच्छुक घरों तक बिजली की पहुंच, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, संचार में सुधार, सार्वजनिक सुरक्षा में सुधार, नौकरी के अवसरों में वृद्धि, दैनिक कार्यों में, विशेषकर महिलाओं के लिए बेहतर गुणवत्ता मिलेगी। सरकार के तेजी से बिजली उत्पादन करने के चक्कर में एक नवम्बर, 2017 को 'एनटीपीसी' के 'ऊंचाहार प्लांट' में बॉयलर विस्फोट में तीस से अधिक कर्मचारी, इंजीनियर मारे गये और करीब 200 घायल हो गये।

आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस : इंसान से आगे मशीन

हम मोबाईल के उदाहरण से इसको समझ सकते हैं कि किस तरह से मोबाईल के रिचार्ज को कम्पनियां बढ़ाती जा रही हैं। आपका नेटवर्क रहे या नहीं, उनका दिन कम होता जाता है। पहले सरकार ने हर काम के लिए आपको मोबाईल पर निर्भर किया। बैंक का काम हो, बच्चों को फार्म भरना हो, स्कूल में दाखिला हो या कोई भी काम आपके मोबाईल पर ओटीपी आता है जिसके कारण आपको हर महिना करीब 300 रू. चार्ज कराना होता है। इसी तरह घरों तक बिजली पहुंचाकर लोगों से बिजली के सामान पंखा, कूलर, टीवी इत्यादि के सामान खरीदवाकर पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाया गया।

'विद्युत (संशोधन) विधेयक 2022' की मार्फत बिजली का निजीकरण कर लोगों पर बिजली के बोझ लादे जाने की तैयारी है। इस बात को जनता समझ गई है और देश में कई जगह स्मार्ट-मीटर का विरोध हो रहा है।

पश्चिमी उत्तरप्रदेश में लोगों ने मेरठ जिला कार्यालय में जाकर विरोध जताया तो बिहार में 'राष्ट्रीय जनता दल' ने स्मार्ट-मीटर को मुद्दा बनाया। उड़ीसा के बरगढ़ जिले के पदमपुर में 8 नवम्बर को स्मार्ट-मीटर के खिलाफ 'संयुक्त कृषक संगठन' द्वारा 'कृषक गर्जन समावेश' का आयोजन किया गया। 'कृषक गर्जन समावेश' में जानकारी दी गई कि उड़ीसा में 15000 से अधिक स्मार्ट-मीटर उखाड़कर ग्रिड कार्यालय और 'टीपीडब्ल्यूओडीएल' के कार्यालय के सामने फेंक दिया। लोगों ने बताया की उपभोक्ताओं और विशेष रूप से किसानों की सहमति के बिना स्मार्ट-मीटर लगाने से भारी आक्रोश है। स्मार्ट-मीटर का विरोध करने वाले किसान नेताओं पर सरकार झूठे केस लगा रही है। किसान नेता रमेश महापात्रा को आदतन अपराधी बता रही है जिसका उड़ीसा हाईकोर्ट बार एसोसिएशन और बरगढ़ जिला बार एसोसिएशन ने विरोध किया है। इस आन्दोलन का असर यह रहा कि बरगढ़ जिला कलेक्टर को घोषणा करना पड़ी कि बकाया राशि के कारण किसी की बिजली नहीं काटी जायेगी। इस लड़ाई को मजबूती देने के लिए 'एसकेएम' से पी. कृष्णाप्रसाद और 'किसान-मजदूर परिषद' से अफलातून और राजेन्द्र चौधरी ने भाग लिया। बिजली का मुद्दा इतना महत्वपूर्ण है कि सभी चुनावी पार्टियां, खासकर राष्ट्रीय स्तर की भाजपा, कांग्रेस और आप हर चुनाव में 300 यूनिट बिजली फ्री देने का वादा कर रही है। एक तरफ बिजली फ्री देने का वादा तो दूसरी तरफ सरकार बनने के बाद बिजली के निजीकरण और स्मार्ट मीटर लगाकर जनता की जेब काटने की योजना बनाई जा रही है।

सेंधमारी से सुरक्षित नहीं है, 'डाटा' की पूंजी

सरकार ने 8 अगस्त, 2022 को 'विद्युत (संशोधन) विधेयक, 2022' को लोकसभा में पेश कर पास भी करवा लिया। इससे बिजली का निजीकरण आसान हो गया। इससे पहले सरकार ने एक दिसम्बर, 2021 को 'संयुक्त किसान मोर्चा' (एसकेएम) को पत्र लिखकर आश्वासन दिया था कि 'बिजली बिल में किसान पर असर डालने वाले प्रावधानों पर पहले सभी स्टेकहोल्डर्स/'एमकेएस' से चर्चा होगी। चर्चा के बाद ही बिल संसद में पेश किया जायेगा। ' सरकार बिजली के निजीकरण की जल्दबाजी में किसानों से की गई लिखित बातों से भी मुकर गई और बिना चर्चा के संसद में बिल पेश कर दिया। इसके विरोध में बिजली विभाग के कर्मचारियों ने कई राज्यों में प्रदर्शन किया जिसमें उत्तरप्रदेश के कर्मचारियों का मार्च 2023 में 73 घंटे का आन्दोलन प्रमुख था।

सरकार ने बिजली कम्पनियों को लाभ पहुंचाने के लिए 'प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना- सौभाग्य' में सभी तरह के इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए भारी धन मुहैय्या कराया। बिजली कम्पनियों की आसानी के लिए स्मार्ट-मीटर देश भर में लगाये जाने लगे जिसका काम सरकार ने निजी कम्पनियों को ही दे दिया। स्मार्ट-मीटर से लोगों पर बिजली का बोझ बढेगा, क्योंकि स्मार्ट-मीटर स्पार्क होने वाली जगह को भी यूनिट में जोड़ देगा, यहां तक बोर्ड में लगने वाला इंडीकेटर भी जोडेगा। भविष्य में इसको मोबाईल फोन की तरह बनाया जा सकता है, यानि पहले रीचार्ज करो फिर उपयोग करो। इससे रोजगार बढ़ने की बजाय पहले से बढ़ती बेरोजगारी में इजाफा होगा।

हम जानते हैं कि भारत की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है जहां फसल होने के समय ही उनके पास पैसा आता है। ऐसे में उन घरों में बिजली नहीं मिल पायेगा। इसका और भी प्रभाव होगा। 'उत्तरप्रदेश पॉवर कॉरपोरेशन' के प्रबंधन ने आईटी विशेषज्ञों की कमेटी बनकार स्मार्ट बिजली मीटर की जांच कराई तो सभी वितरण-निगमों की ओर से लगाए गए मीटरों में खामियां पाई गईं। मीटर गलत रिकॉर्ड करने के साथ ही आरटीसी दो घंटे में ड्रिप कर रही है जिसका असर बिलिंग पर पड़ेगा। कॉरपोरेशन के वाणिज्य निदेशक निधि कुमार नारंग ने मीटर लगाने वाली कम्पनी जीएमआर, इटली स्मार्ट और पोलरिस को नोटिस जारी किया है।

हम मोबाईल के उदाहरण से इसको समझ सकते हैं कि किस तरह से मोबाईल के रिचार्ज को कम्पनियां बढ़ाती जा रही हैं। आपका नेटवर्क रहे या नहीं, उनका दिन कम होता जाता है। पहले सरकार ने हर काम के लिए आपको मोबाईल पर निर्भर किया। बैंक का काम हो, बच्चों को फार्म भरना हो, स्कूल में दाखिला हो या कोई भी काम आपके मोबाईल पर ओटीपी आता है जिसके कारण आपको हर महिना करीब 300 रू. चार्ज कराना होता है। इसी तरह घरों तक बिजली पहुंचाकर लोगों से बिजली के सामान पंखा, कूलर, टीवी इत्यादि के सामान खरीदकर पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाया गया। **(सप्रेस)**

अजय शेखर : सच्चे लोहियावादी

-नरेंद्र नीरव

अजय शेखर जी को मैं तब से जानता हूं जब मैं कक्षा-छः में मिडिल स्कूल का विद्यार्थी रावट्र्सगंज में था अर्थात अब से लगभग 60साल पहले। मेरे लिये सौभाग्यपूर्ण गौरव है कि वे आज भी मुझे उतना ही प्यार करते हैं। आज भी मुझे वे उतने ही आधुनिक और निश्छल मन के जीवंत लोहियावादी महसूस होते हैं। उन्हें आज भी उसी जिज्ञासा से सुनने, देखने और छूने की उत्कंठा रहती है। मेरा सर्वोत्तम सम्मान यही है कि शायद वे अपने शिष्यों में सबसे ज्यादा स्नेह मुझे देते हैं। मेरी कोशिश रहती है कि उनके विचार और कर्म के पथ पर चलता रहूं, उनके पदचिन्हों को देखते हुए कुछ कदम आगे बढ़ा सकूं। उनके शिष्यों और अनुयायियों की संख्या बहुत बड़ी है। प्रत्येक के पास अपने-अपने अविस्मरणीय अनुभव हैं ।

अजय शेखर जी का जीवन अध्ययन, चिंतन, लेखन और अन्याय के खिलाफ जूझते हुए निखरता रहा है जैसे आग में तप कर लोहा इस्पात बनता है ।साथ ही जो अतुलनीय काम उन्होंने किया वह अब दुर्लभ है ।वह एक सचल पाठशाला की भांति सैकड़ों कार्यकर्ताओं को लोहिया-विचारों का प्रशिक्षण दे चुके हैं ।संघर्ष की खराद पर कस चुके हैं ।इसी तरह सैकड़ों कलमकारों को लेखन की तकनीक सिखा चुके हैं ।मैं निजी तौर पर स्पष्ट करना चाहता हूं कि यदि अजय शेखर न होते तो नरेंद्र नीरव भी नहीं होते ।यही बात मेरी बड़ी बहन डां. शकुंतला शुक्ल, (सुविख्यात भाषाविद्, रंगकर्मी) भी कहती थीं ।बहन जी मृत्यु-पर्यंत शाम को हवन करती थीं और प्रसाद में काजू चढ़ाती थीं ।एक बार मैने पूछ लिया कि आप काजू ही क्यों चढ़ाती हैं? उन्होंने बताया कि एक बार रावट्र्सगंज में मैं गंभीर बीमार पड़ गयी ।मुझे देखने अजयशेखर जी, तेजबहादुर सिंह आदि घर आये ।वे अपने साथ काजू लेकर आये थे ।मैने ईश्वर का प्रसाद मान कर काजू ले लिया और स्वस्थ हो गयी ।तब से हर रोज हवन के समय काजू ही चढ़ाती रही हूं ।उनकी आंखें भीग गयी थीं...। हम अपनी लघुता पर भी गर्व करते हैं ।गुरू जी तथा उनके समकालीन समाजवादी नेता हरिशंकर सिंह, सूर्यबली सिन्हा, राकेश चतुर्वेदी आदि ने जो प्रशिक्षण दिया वह अनुपमेय है। इसे हम कह सकते हैं- 'रावट्र्सगंज स्कूल आफ लोहियावाद' और 'रावट्र्सगंज स्कूल आफ लिटरेचर'।

अजय शेखर जी के जीवन-संघर्ष पर महाकाव्य लिखा जा सकता है ।फिलहाल-चरण -स्पर्श के साथ स्नेह की कामना है। शुभ जन्म -दिन पर प्रणाम्! भावयामि!! 'तुमको हमारी उमरि लगि जाय ।'

अजयशेखर जी : एक साकार महाकाव्य हैं

गुरुत्व की प्रकृति पानी की तरह तरल होती है।जिस बर्तन में डाल दो उसी में समा कर समरस अंट जाती है।आदमी का कद उसके पद या वैभव से नहीं, उसकी संवेदनशीलता से ऊंचा उठता है।मेरे एक गीत की पंक्तियां हैं--

सूरज के कद से भी ऊंचा, दीपक के तल से भी सिमटा अंधियारा पीता रहता है, उजियारा झरता रहता है।

कुछ महीने पहले रावट्र्सगंज में एक साहित्यिक आयोजन में अजयशेखर जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि' लोग मुझसे कहते हैं कि मेरी अन्य पुस्तकें भी छपनी चाहियें।उन लोगों से मुझे कहना है कि मेरी पांडुलिपियां एक कमरे में रखी हुई हैं।दीमक भी खा रहे हैं। मेरी रुचि किताबें छापने में नहीं हैं क्योंकि मेरी बातें ,मेरी भावनायें और मेरे विचार आमलोगों तक सीधे संवाद से पहुंच चुके हैं।मैने युवजन, मजदूरों, वनवासियों और अपने सभी संवेदनशील श्रोताओं तक वे तथ्य पहुंचा दिये हैं जो किसी पुस्तक में लिखी जा सकती हैं।आमलोगों के साथ सीधे संवाद के द्वारा संवेदनाओं का संप्रेषण सबसे गहरा होता है '।

मैं उनकी बातों को सुनता और गुनता रहा।वास्तव में उनकी जिंदगी एक खुली हुई किताब है।उनकी सहजता-सरलता और संवेदनशीलता हमें मोहित करके समता की जमीन पर खड़ा कर देती है।हम अपना कद पहचान सकें तो कह सकते हैं--

साकी के मुहब्बत में दिल साफ हुआ इतना
जब सिर को झुकाता हूं, शीशा नजर आता है।(अज्ञात)

आइये, पूज्य गुरुवर अजयशेखरजी की कविता पढ़ें--

दिशायें कांप जाती हैं

दर्द भग्न प्रतिमा के चरण
जब पूजता है
खो बैठता-
हर शब्द अपना अर्थ।
वंदना अजन्मे गीत करते हैं
दिशायें कांप जाती हैं
स्वर जब कोई अफूटा--
गूंजता है।

सुनें एकांत गीत हम

ढोते--ढोते
सपनों का बोझ
थक बहुत गये हैं---
पांव।
दूभर है--

दो डग भी आगे चलना
आओ!
ऊब भरी गठरी उतार कर
कुछ क्षण बैठें
यहीं उगी धूप में,
सुस्ता लें
और सुनें एकांत गीत हम!

तुम आओगे

आज भी तो
सिंदूरी सांझ
कलमुहां अंधेरा--
निगल गया
पर
तिमिर की घाटियों में कैद
बुझी आहटों के
मिल रहे हैं संकेत--
कि टूटे सितारों की लेकर बारात
तुम आओगे।!

अजय शेखर की कविता

अजय शेखर जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का एक रोचक और अनुकरणीय उदाहरण यह है कि वे विगत 60 वर्ष से अधिक समय से अपनी संस्था 'मधुरिमा साहित्य गोष्ठी' द्वारा अखिल भारतीय कवि -सम्मेलन आयोजित कर रहें।यह उनके नाम एक कीर्तिमान है। उनके नाम अनेक कीर्तियां हैं जिन पर फिर कभी अपने पाठकों से विमर्श करेंगे। आयोजित सभी कवि-सम्मेलनों की स्मृतियां रावट्र्सगंज के काव्यरसिकों के पास हैं।इस मामले में रावट्र्सगंज भाग्यशाली है। हमें याद है- जनकवि नीरज जब तक जीवित थे तब तक अजयशेखर जी के बुलाने पर प्रतिवर्ष कवि-सम्मेलन में आते रहे।एक बार नीरज का साक्षात्कार मैने ओबरा में लिया।इस बातचीत में मैने उन्हें बताया कि अजयशेखर जी मेरे गुरु हैं।मैने महाकवि नीरज से पर्यावरण का प्रसंग उठाया तब उन्होंने अपने गीत की कुछ पंक्तियां सुनायीं--

खुशबू सी आ रही है कोई जाफरान की
खिड़की खुली हुई है तुम्हारे मकान की।
ऐ परकटे परिंदे जरा उड़ के देख तो
पांवों तले आ जायेगी छत आसमान की।

जब नीरज रावट्र्सगंज में अजयशेखर जी से मिले तब उन्होंने मेरी सराहना की और कहा 'तुम्हारे शिष्य ने मुझे बहुत परेशान किया'। अजयशेखर जी बहुत खुश हुए थे।

नीरज के साथ ही पं. भवानी प्रसाद मिश्र, डा.शंभूनाथ सिंह, पं. चंद्रशेखर मिश्र, पं. रूपनारायण त्रिपाठी,श्रीपाल सिंह क्षेम, बेकल उत्साही, डा. शिवमंगल सिंह सुमन, स्नेह लता स्नेह, बालकवि बैरागी, आशुतोष पांडेय, सोम ठाकुर, नजीर बनारसी, बैधड़क बनारसी,श्री कृष्ण तिवारी, दानबहादुर सिंह'सूंड़', कैलास गौतम, विभा मिश्र,दिनेश उपाध्याय, कृष्ण मोहन ,रिंद बनारसी,ओमप्रकाश आदित्य, माणिक वर्मा, नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, चकाचक बनारसी, उमाशंकर तिवारी, बनारसी लाल पंकज ,सूभी चुनारवी, रमेश रंजक,महेंद्र सिंह अधीर, माहेश्वर, रणबहादुर खान, हरीराम द्विवेदी,विष्णु जी(मिर्जापुर), सलीम शिवालवी, किशन लाल गुप्त, बुद्धिनाथ मिश्र.चतुरी चाचा, शिवप्रसाद 'कमल', वसीम बरेलवी आदि प्रतिष्ठित कविजन को लोग सुनते-गुनते रहे हैं ।मंच पर कोई चुटकुले बाजी और फूहड़पन नहीं संभव था।मुनीर बख्श आलम, पारसनाथ मिश्र, जगदीश पंथी,फरीद अहमद 'मधुरिमा' के अनन्य सहयोगी रहे हैं।आइये, अजयशेखर जी की कविता पढते हैं--

1- नमन मेरा

गरिमा तुम्हारी सिंधु
मैं स्वीकारता हूं!
पर नमन मेरा
बूंदों को,
जो मिटा कर अस्तित्व अपना
लीन तुममें हैं,
जिससे --
तुम सागर हो!

2- तुमने

अर्थहीन शब्दों के
जानें कितने अर्थ
तुमने गढ़ लिये
और
सर्द आहों के फ्रेम में
वह चित्र
मढ़ दिये
जिसे कितने ही
सिंदूरी सांझों ने
मिल कर
वर्षों में उतारा था!

3--जब तक जीते बना

जब तक जीते बना--
मंजिल की परवाह किये बगैर
राहों के संग-संग
---जिया।

सन्नाटों की गुजारिश पर
भर-भर अंजुरी कोलाहल---
पिया।

शताब्दियों की फटी चादर
लगा-लगा कर
अपनी उम्र की चकतियां
सिया।

अंधेरों की अदालत ने
मुझे मुजरिम करार कर
फैसला सजाये-मौत का दिया।

कसूर मेरा सिर्फ इतना था---
कि जो कुछ भी किया
सब उजाले में किया।

कवितायें : अजयशेखर जी के कविता-संकलन 'आकाश बंद है' से साभार ।

अतीत लौटा हेमंत की तरह देवता को जगाने!

प्रखर- कवि, दार्शनिक, राजनेता अजयशेखर जी का साक्षात्कार

हमने दुःख को जिया ,और सुख बांटा! शब्द अधरों पर आये अथवा पलकों पर आंसू बन जमीन पर बिखर गये...!

बचपन से मेरे गुरु, जीवनादर्श और प्रियतम मार्गदर्शक श्री अजयशेखर जी ओबरा आये।ओबरा इंटर कालेज के 45वें कविसम्मेलन में काव्यपाठ करने। मेरे घर अपना स्नेह लेकर एक घंटे रुके।मेरे पसंदकी मिठाई भी ले आये। पत्नी कुसुम बेटा तन्मय, बहू पूर्णिमा तथा छोटे बच्चे मस्त हो गये।मठरी और काफी के बाद मैने उनसे बात की।कुछ ऐसे सवाल जो काफी दिनों से मन में कसमसा रहे थे उनसे पूछे और उन्होंने जो बताया उन्हें नोट किया।इस साक्षात्कार से एक जुझारू लोहियावादी, व्यक्तिगत सत्याग्रही, मौलिक चिंतक, प्रखर कवि और अनासक्त कर्मयोगी का जीवनदर्शन अभिव्यक्त होता है। 85साल की उम्र में बिलकुल तरोताजा, स्वाभाविक रूप से समय और परिवेश के प्रति सतर्क गुरुजी शब्दों के साथ भी संयत और जागरुक हैं।मैं उन्हें तब से जानता हूं जब मैं कक्षा- छःका छात्र था।मैने उनकी उंगली थाम कर जीवन-पथ पर चलना सीखा।वे रावट्र्सगंज नगर के नोटीफाइड एरिया, नगर पंचायत और नगरपालिका के अध्यक्ष रह चुके हैं ।वर्तमान में विश्व की प्रतिष्ठित सामाजिक -संस्था वनवासी सेवा- आश्रम के अध्यक्ष हैं।उनके शिष्यगण यत्र-तत्र सर्वत्र साहित्य और समाज में नाम रौशन कर रहे हैं।इनमें स्व, डा. शकुंतला शुक्ल, (एम.ए. पीएच-डी, डी.- लिट, भाषाविद्, सुविख्यात रंगकर्मी), व्योमेश शुक्ल(कवि, समीक्षक, रंगकर्मी), जगदीश पंथी, कमलेश कमल, सहित अनेक समाजवादी योद्धा रहे हैं।सोनभद्र में अजयशेखर, स्व. मुनीरबख्श आलम पं.पारसनाथ मिश्र, डा.अर्जुनदास केसरी की ख्याति हिंदी के गगन -मंडप मे चमक रही है।आइये- अजयशेखर जी कासाक्षात्कार देखते हैं -

चित्र मेंः अजयशेखर जी, नरेंद्र नीरव और कुसुम त्रिवेद जी

प्रश्न- गुरूजी, कविता क्या है?

उत्तर- मनुष्य संवेदनशील प्राणी है।सुख-दुःख के जो क्षण हैं, इनमें जो भावानुभूति है, उसकी अभिव्यंजना ही कविता है।

प्रश्न--व्यक्तिगत स्तर पर सुख-दुःख की अनुभूति और मानव-समाज के प्रति संदनशीलता में क्या अंतर है?

उत्तर- संवेदनशील व्यक्ति जिंदगी के हर क्षण में, समाज के दुःख -दर्द को अंगीकार कर लेता है।समाज का दर्द भी वहअपना लेता है।संपूर्ण प्रकृति उसकी अनुभूतियों के केंद्र में समाहित है।वह किसी वनफूल का कुम्हलाना हो अथवा वृक्ष का विनाश।

प्रश्न-आपको कभी लगता नहीं कि अपनी अनुभूतियों को पूरा व्यक्त नहीं कर पाये?

उत्तर- हां। कुछ परिस्थितियों में स्वयं को एकाग्र नहीं कर पाया।व्यथा ने मुझे तोड़ा भी।कई खंडों में बांटा भी।कुछ शब्द अधरों पर आये, कुछ आंसू बन जमीन पर गिर पड़े। पीड़ा ने मुझे बेचैन किया तो संघर्ष चुन लिया।प्रसन्न जीवन के संग भावनाओं का प्रवाह चला लेकिन जब मजदूरों, वनवासियों, किसानों का दमन देखा तो संघर्ष चुन लिया।

प्रश्न- क्या आप अपने विचारों और भावनाओं को संपूर्णता में व्यक्त कर पाये?

उत्तर--मैने ईमानदारी से अपनी जिंदगी जी है।प्रसन्नता को बांटा है, दुःख को नहीं बांटा।दर्द में दवा की तलाश रही है।

प्रश्न-आप लोहिया जी के साथी और उनके विद्यार्थी रहे हैं। आज के दौर में विचारों की प्रतिबद्धता क्यों नहीं दीखती?

उत्तर-- मूल्यों ओर विचारों के गिरावट का प्रमुख कारण है- बाजारवाद। अर्थनियंत्रित सत्ता केंद्र।भावनाओं पर

भौतिक वर्चस्व।संबंध आज अनुबंध बन चुके हैं।लोहिया को समझ लेने के बाद मन और मस्तिष्क की जकड़न खुल जायेगी।उनके विचार युगांतरकारी हैं , उनका जीवन-दर्शन विराट।

प्रश्न--नयी पीढ़ी के रचनाकारों और सामाजिक-कार्यकर्ताओं से क्या अपेक्षा करते हैं?

उत्तर-- पहले अध्ययन, चिंतन और मनन करें। पुस्तकें खोज कर पढ़ें,जिज्ञासु बनें, लोगों को सुनना सीखें।संवेदनशीलता से सुन कर और पढ़ कर मानवीय दृष्टिकोण बनायें।निजी तौर पर वचन और कर्म में समता लायें-तब लिखें।बदलते हुए समय से सीखते हुए मानवीय समबोध, अन्यायके विरुद्ध व्यक्तिगत सत्याग्रह की शक्ति से सत्य को प्रतिष्ठित करना होगा तब बात असर करेगी।अनेक युवजन संजीदगी से लिख रहे हैं।

मैं वो गीत हूं, जो गाया न गया
मैं वो राग हूं जो किसी साज पे लाया न गया।
तुमने तो आंचल से सम्हाला ही था
बुझ गया दीप जो तूफानों से बुझाया न गया।
लाख कोशिश की चांदनी ने मगर
वो दाग हूं जो छिपाया न गया।

जिंदगी कोई प्यार का तोहफा तो नहीं
आरती है नवयुग के वंदन की।

समय के श्वांसों में समायी हुई
आवाज मुस्कानों के चंदन की।

भूख और गरीबी का अहसास इसमें
कितने सोये हुए सपनों के मजार भी हैं।

कारी कारी सी स्याह रातों में उतरती हुई
भोर -किरणों की तकरार भी है।

वार्ताकार : नरेंद्र नीरव / छायाः तन्मय

अजयशेखर जी की ' मधुरिमा' का 61वां कवि-सम्मेलन

चित्र में- अजयशेखर जी और नीरज

सुविख्यात कवि, चिंतक, श्रमिक नेता, जन-प्रतिनिधि और वनवासी सेवा आश्रम के अध्यक्ष मेरे जैसे अनेकों के गुरुवर श्री अजय शेखर जी को सादर प्रणाम् और हार्दिक शुभकामनायें। उनका फोन आया कि 2 जनवरी 2024 को रावट्र्सगंज में ' मधुरिमा' साहित्य-गोष्ठी का 61वां अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन है। यह एक कीर्तिमान है। महाकवि नीरज अजयशेखर जी के प्रियमित्र थे। किसी ने नीरज से पूछा कि रावट्र्सगंज कब तक आयेंगे? नीरज ने उत्तर दिया कि जब तक अजयशेखर बुलायेंगे।नीरज के देहांत के बाद भी सभी लोग उन्हें रावट्र्सगंज में याद करते हैं।अजय शेखरजी को हम साहित्य और राजनीति का स्कूल कहते हैं।उन्हें सादर चरणस्पर्श और बधाई।समस्त कविजन और श्रोतागण का अभिनंदन!

चट्टानों के बीच जन्मा साहित्य का बरगद : अजय शेखर

समाजवाद से साहित्य तक जीवन यात्रा

उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में ख्यातिलब्ध वैद्य पंडित राम रेखा के होनहार पुत्र अजय शेखर का जन्म 1 दिसम्बर 1938 को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा राबर्ट्सगंज से शुरू हुई और उच्च शिक्षा वाराणसी, कानपुर में पूरी हुई। शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त अजय शेखर ने मार्तंड माइनिंग कार्पोरेशन में वर्क्स मैनेजर के पद पर नौकरी शुरू की पर राजनीति और समाजवादी मन विचलित करता रहा और नौकरी से त्यागपत्र देकर डाक्टर राममनोहर लोहिया के साथ आ गये। उनके सानिध्य में राजनीतिक यात्रा शुरू हुई।हिन्द मजदूर पंचायत के प्रदेश मंत्री व शोसलिस्ट पार्टी में सक्रिय होकर श्रमिक आंदोलन, अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन,अनेक सामाजिक, राजनीतिक गतिविधियों में शामिल हो गए। अनेक बार जेल यात्रा भी करनी पड़ी। सामाजिक लोकप्रियता बढ़ने का परिणाम रहा कि 1971 में टाऊन एरिया राबर्ट्सगंज का चेयरमैन चुना गया। फिर 1995-2000 में नगर पालिका परिषद के चेयरमैन निर्वाचित हुए। आकाशवाणी में सलाहकार समिति के सदस्य के साथ साथ अनेक सरकारी, गैरसरकारी समितियों के सदस्य मनोनीत होते रहे। रचनाधर्मिता, समाज सेवा के क्षेत्र में उनके स्थापित योगदानों का कारवां आज भी जीवन्त है। वनवासी सेवा आश्रम गोविन्द पुर के अध्यक्ष, मधुरिमा साहित्य गोष्ठी के संस्थापक निदेशक, लोकवार्ता शोध पत्रिका के सम्पादन से लेकर काव्य रचना 'आकाश बन्द है' लोकविधा में संस्कृत निदेशालय उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित लोकसंगीत,लोकवाद्य, लोकनृत्य, पारंपरिक मेले, त्योहारों आदि पर शोध अध्ययन उनको माटी का पैरोकार बनाता है। सोनभद्र की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा प्रकाशित स्मारिकाओं का सम्पादन उनके साहित्यिक यात्रा में मील के पत्थर की तरह गड़ी हैं। जल, जंगल, जमीन की जीवनधारा से परिपूर्ण उनकी कृतियों की चर्चा के बिना सोनभद्र का कोई साहित्यिक आयोजन पूरा नहीं होता।

लोक भूषण की मानस प्रसंग की अच्छी कृति

डा0 जय प्रकाश मिश्र

प्रभु श्री राम जन जन में व्याप्त सर्वप्रिय ईश्वर तत्व के रूप में सदैव विख्यात रहे हैं । इस बीच इस बात की गवाही करती कृति डा0 जय प्रकाश मिश्र लोक भूषण की आदिवासियों के गीत मानस के प्रसंग स्पष्ट नजर आती है पुस्तक इस मामले में काबिले तारीफ है। कि इसमें श्री राम के संदर्भ में जो कुछ कहा गया है आदिकाल के निवासियों के मुंह से बोले गए बोलो यानी कथनों के आधार पर उनके परिवेश और उनकी परंपराओं के अनुरूप सप्रमाण कहा गया है । यूं तो श्री राम कथा विश्व मंच पर सर्वविदित सर्वमान्य कथा है। भारतवंशी जहां भी जैसे भी गए और रहे उन्होंने श्रद्धापूर्वक इसे सिर्फ जिया ही नहीं संपूर्ण तक आराध्या के रूप में उतारा और घोषित किया की चर अचर ब्रह्मांड समग्र प्रभु श्री राम का ही अंश है । लगभग 100 पृष्ठोंकी इस कृति में कुल 16 अध्याय प्रभु श्री राम पर केंद्रित आदिवासियों की पृष्ठभूमि पर सप्रमाण प्रदर्शित कर यह प्रमाणित किया गया है कि आदिपुरुष प्रभु श्री राम के अलावा और कोई नहीं है,।जंगलों आदवासी घरों में गाए जाने वाले अनेक गीतों में श्री राम ही आदि हैं। सृष्टि केऔर उन्हीं के कृपा पर ही च अचर सब आधारित है । पुस्तक कम पन्नो से विराट संदेश देती है, यह हम नहीं बल्कि संकट मोचन मंदिर के महंत प्रोफेसर विश्वभर नाथ मिश्र एवं पद्मभूषण विद्वान प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी स्वीकारते हैं । लोकभूषन डा0जयप्रकाश मिश्र के संदर्भ में महंत श्री मिश्र लिखते हैं इस पुस्तक में डॉक्टर जयप्रकाश मिश्र सोनभद्र के आदिवासियों के संदर्भ में अभूतपूर्व काम किया है प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी भी स्वीकारते हैं कि आदिवासी गीतों की प्रस्तुति महनीय एवं सराहनीय है । थोड़े में श्री राम कथा को विस्तार देकर आदिवासियों की श्रद्धा और भाव तले मानस की यह उत्तम कृति है ऐसा आभास कराने में सक्षम दिखती है मानस की चौपाइयों के कथ्य भाव आदिवासियों के गीतों में संदर्भानुसार वर्णित आकषर्णीय सरस में मानवीय मनोदशा की अनुपम में झांकियां हैं।

के0 इद्रजीत मिश्र

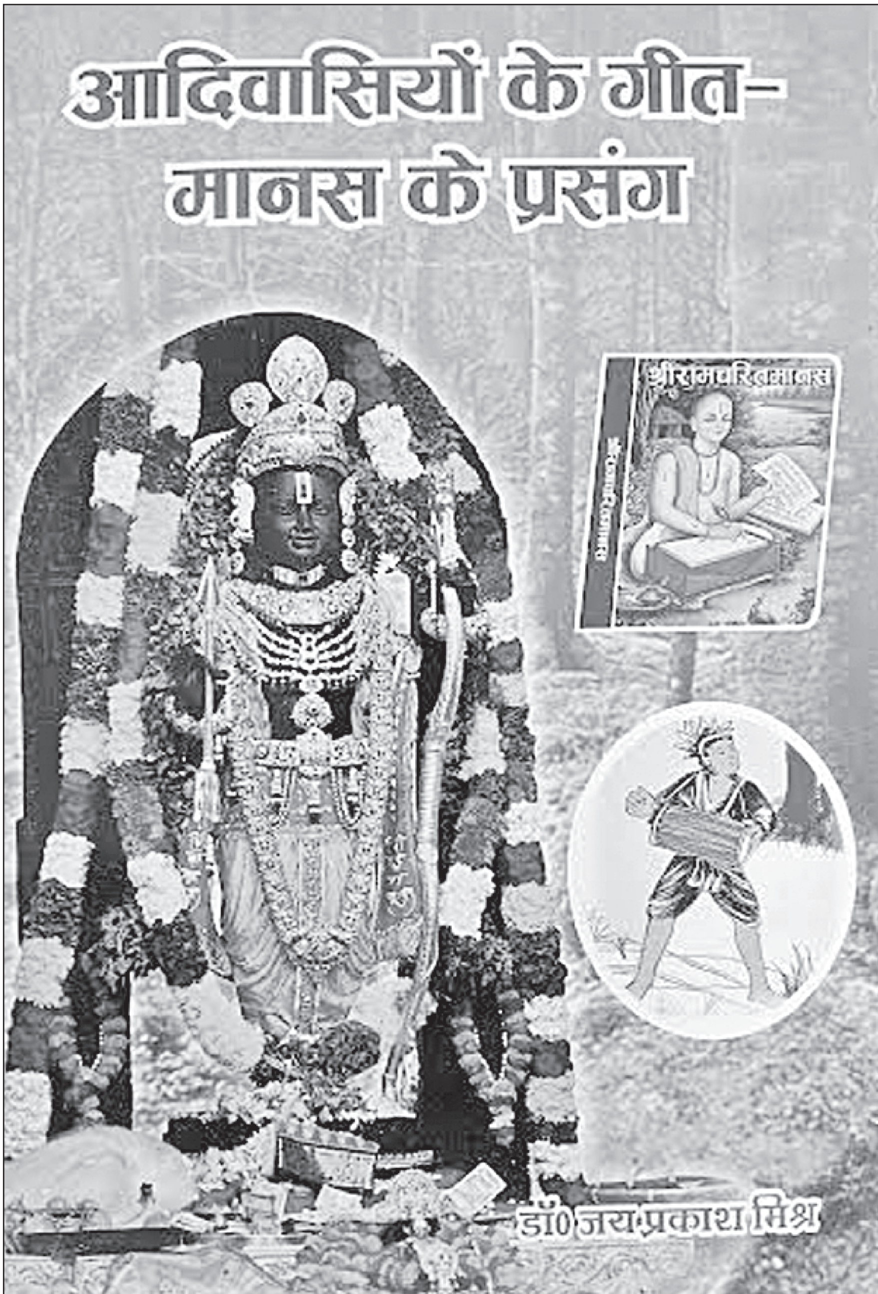

पथ के पन्ने

यात्रा वृत्तान्त

लेखिका डॉ यशोधरा भटनागर

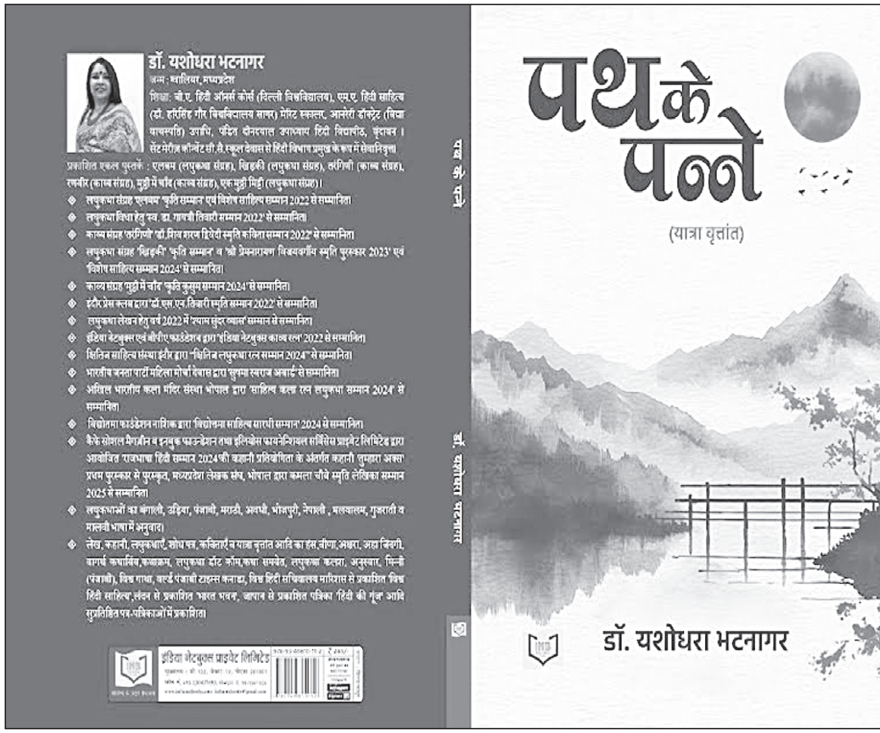

डॉ यशोधरा भटनागर की 'पथ के पन्ने' यात्रा वृत्तान्त विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाती हुई 'यात्रा साहित्य विधा' में एक महत्वपूर्ण दस्तक है। इस पुस्तक में उन्होंने अपनी विभिन्न यात्राओं के वर्णन को छःपन्नों में बाँट कर बड़े ही रोचक ढंग से विस्तार से प्रस्तुत किया है इन पन्नों को पलटता हुआ पाठक उन जगहों को घूम भी आता है, बिखरा हुआ प्राकृतिक सौंदर्य को देखता हुआ वहाँ के खान पान का आनंद भी उठा लेता है, जगह विशेष की आंचलिक बोली से भी थोड़ा परिचित हो जाता है।उस जगह से जुड़ी हुई लोककथाओं किवदंतियों को जानते हुए लोक से भी जुड़ जाता है ,कुछ जगहें दार्शनिकता का भाव जगाती हैं तो कहीं देशभक्ति से ओतप्रोत कर जाती हैं। हर यात्रा उस जगह के दृश्य से जन्मे भाव को भी पाठक तक सम्प्रेषित करने में सफल होती है।

'पथ के पन्ने' का पहला पन्ना 'अटारी बॉर्डर :यहाँ की हवाओं में है एक जूनून !'में देश की बॉर्डर पर होने वाले झंडा समारोह के जलसे से जुडी गर्व और देशभक्ति की भावना से प्रफुल्लित दृश्य का वर्णन हैं। आगे बढ़ते हुए 'स्वर्णाभ स्वर्ण मंदिर और जालियांवाला बाग!' में स्वर्ण मंदिर की निर्मल शांति ,गुरुबाणी की अंतर तक पहुँचती अलौकिक आवाज और गुरु का लंगर ग्रहण करते हुए कृतज्ञता का भाव दृष्टिगत होता है। इसी पन्ने में 'श्रीराम तीर्थ ' का ऐतिहासिक महत्व और 'साड्डा पिंड 'में पंजाब के ठेठ जीवन ,रहन सहन और खान पान को लेखिका ने जस का तस उतार कर रख दिया है।

दूसरा पन्ना 'उदयपुर : राजस्थान का कंठहार!' में राजस्थान से अपने विशेष जुड़ाव की बात कहते हुए वीरों की भूमि हल्दी घाटी, एकलिंग जी, नाथद्वारा, उदयपुर के बारे में कहते हुए राजस्थान की संस्कृति का सुन्दर चित्रण है।

तीसरा पन्ना 'नाथुला : कंचनजंगा का प्रहरी !'में पहाड़ी यात्रा की दुरूहता और रोमांच उतर आया है, कोहिमा वॉर मेमोरियल भारत की अखंडता की रक्षा में सैनिको की स्मृतियों को एक श्रद्धांजलि है।

किताब का चौथा पन्ना की यात्रा 'देवभूमि हिमाचल!'वहां की शुभ्र धवल बर्फीली चोटियों के दर्शन कराती है ,कभी चाय बागानों की सैर कराती हुई वहां के अप्रतिम सौंदर्य को प्रतिबिंबित करती हुई पांचवे पन्ने में बुंदेले हरबोलों की कहानी सुनाती हुई झांसी तक आ पहुँचती है।

आख़िरी पन्ना 'अजब गजब मध्यप्रदेश !'लेखिका के गृह राज्य मध्यप्रदेश के अजब गजब सौंदर्य से बावस्ता करता हुआ सतपुडा की रानी पचमढ़ी , चंदेरी में प्राचीन और प्रसिद्ध हस्तकरघा शिल्प ,श्रद्धा ,आस्था और अनूठे वास्तु शिल्प को समेटे हुए दतिया ,राजा राम की नगरी ओरछा का ऐतिहासिक वैभव के दर्शन कराते हुए संस्कारधानी जबलपुर में भेड़ाघाट के प्रपात के अवर्णनीय सौंदर्य को हमारे सामने प्रस्तुत करते हुए पातालपानी ,कालाकुंड जैसी जगहों के प्राकृतिक सौंदर्य को समेटते हुए अपनी यात्रा को विराम देती हैं।

डॉ यशोधरा भटनागर की 'पथ के पन्ने !' यात्रा के दौरान देखी हुई जगहों की सिर्फ दृश्यावली ही नहीं उन जगहों का धार्मिक ,सांस्कृतिक ,ऐतिहासिक महत्व बताते हुए वहां की परम्पराओं ,लोककथाओं को समेटते हुए चलती है। आर्मी ऑफिसर पिता की बेटी होने से फ़ौज और फौजियों के प्रति आदर यशोधरा जी के कहन में झलकता है। लेखिका का कविता लेखन में अच्छा खासा दखल है यह यात्रा वृत्तान्त के विवरण की भाषा शैली में साहित्यिक आलंकारिक भाषा के प्रयोग से सिद्ध होता है।

एक सौ तीन पन्नों की यह पुस्तक इन जगहों पर जाने की इच्छा भी जगाती है और देखी हुई जगहों को एक नई दृष्टि से दिखाती भी है।

महिमा वर्मा

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद

(जन्म 3 दिसम्बर 1884)

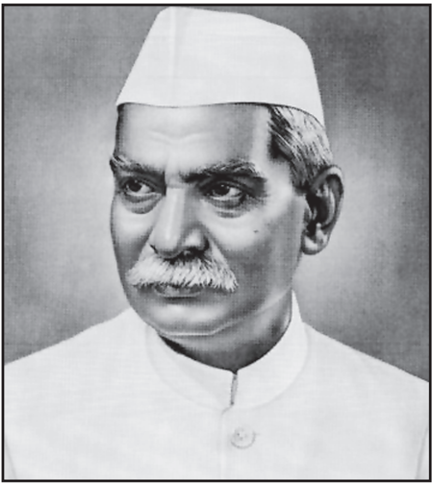

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसम्बर 1884 को बिहार प्रान्त के एक छोटे से गाँव जीरादेई में हुआ था। इनका विवाह 12 वर्ष की आयु में ही हो गया था। बचपन से ही होनहार और मृदुभाषी राजेन बाबू को होली, ताजिया का जुलूस और माता से रामायण की कथा सुनना बहुत पसन्द था। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद 1902 में कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज में प्रवेश लिये। इस दौरान उन्होंने वकालत का काम भी सीखा। स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन की गूंज अब इनके कानों में भी पड़ चुकी थी। गोपाल कृष्ण गोखले ने 1905 में सर्वेन्ट आफ इण्डिया सोसाइटी आरम्भ की थी। पारिवारिक चिन्ता के बावजूद वे उससे जुड़ गये और किसी तरह परीक्षा पास की थी। अस्पृष्यता का त्याग, गांधी जी का हरिजन आन्दोलन, सामाजिक कार्य में रुचि लेते हुए वे अब स्वतंत्रता आन्दोलन में पूरी तरह कूद चुके थे। तमाम नेता गिरफ्तार हुए। सविनय अवज्ञा आन्दोलन, नमक सत्याग्रह में पुलिस की पिटाई से घायल हो गये और 6 माह जेल में रहे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक से अधिक बार अध्यक्ष रहे। उन्होंने अनके पुस्तकें भी लिखीं और स्वतंत्रता उपरांत देश के प्रथम राष्ट्रपति बने जिनका कार्यकाल दो बार रहा, 12 वर्षों तक राष्ट्रपति भवन उनका घर रहा। 1962 में उन्हें भारत रत्न से नवाजा गया। जीवन के अंतिम वर्ष में सदाअत आश्रम पटना में 28 फरवरी 1963 को उनका निधन हो गया।

इलाचन्द्र जोशी

(जन्म 13 दिसम्बर 1903)

अल्मोड़ा उत्तर प्रदेश (अब उत्तराखण्ड) में 13 दिसम्बर 1903 को जन्मे इलाचन्द्र जोशी अपनी साहित्यिक यात्रा की शुरुआत काव्य रचना से ही की थी लेकिन उन्हें मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का आरम्भकर्ता माना जाता है। उनकी रचनायें पर्वतों, झील, झरनों, नदियों से ही होकर चलती है। जोशी जी एक उपन्यासकार के रुप में अधिक प्रतिष्ठित हैं।

हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं में उनकी पकड़ है। उनके कहानी संग्रह धूपरेखा, आहुति, खण्डहर की आत्माएं सर्वाधिक चर्चित हैं। साहित्य सर्जन, साहित्य चिन्तन, विश्लेषण उनके आलोचनात्मक ग्रंथ रहे। कई रचनाएँ कोलकाता समाचार, चांद, विश्ववाणी, सुधा, सम्मेलन पत्रिका आदि में छपीं। अपनी समस्त रचनाओं में उन्होंने समाज के उच्चतर मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया। 1982 में उनका निधन हो गया।

भिखारी ठाकुर

(जन्म 18 दिसम्बर 1887)

भोजपुरी के समर्थ लोक कलाकार, लोकगीत तथा भजन-कीर्तन के अनन्य साधक भिखारी ठाकुर का जन्म 18 दिसम्बर 1887 को बिहार के सारन जिले के कुतुबपुर (दियारा) गांव में एक नाई परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम दल सिंह ठाकुर व माता का नाम शिवकली देवी था। भिखारी ठाकुर का रचनात्मक संसार बहुत ही सरल है। इसमें विषमताएं, सामंती हिंसा, मनुष्य के छल प्रपंच भरे पड़े हैं। माटी के रचनाकार भिखारी ठाकुर ने लोक साहित्य और भोजपुरी को जन्म दिया है। संघर्ष इनकी लेखनी में ही झलकता है। इनके प्रमुख नाटक विदेशिया, भाई विरोध, बेटी वियोग, कलियुग-प्रेम, गंगा स्थान, विधवा विलाप, पुत्रवधू आदि हैं जो सुनने में सरल पर इनको पढ़ने में परत दर परत एक हाहाकार मचा देनेवाला कथानक भरा पड़ा है। रंगमंच पर इनके नाटकों की प्रस्तुति रोंगटे खड़ा कर देने वाली होती थी। इन्हें भोजपुरी साहित्य का भीष्म पितामह यूं ही नहीं कहा गया था। इनकी रचनाएं बहुत प्रसिद्धि तो नहीं पायीं मगर उनका कोई जवाब आज तक नहीं है। इनका निधन 84 वर्ष की उम्र में 10 जुलाई 1971 को हुआ।

मदन मोहन मालवीय

(जन्म 25 दिसम्बर)

महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद, समाज सुधारक पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर 1861 को इलाहाबाद में हुआ था। डिस्ट्रिक्ट स्कूल से पढ़ाई शुरु कर वकालत करने के बाद हाईकोर्ट में प्रैक्टिस शुरु की। 1886 में कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में भाषण के बाद राजनीतिक क्षितिज पर आये। 50 वर्षों तक कांग्रेस में सक्रिय रहे। विभिन्न राज्यों में कांग्रेस अध्यक्ष पद पर रहते हुए अनेक आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी निभाई। 1909 में इलाहाबाद से अंग्रेजी अखबर द लीडर की शुरुआत की। 1937 में राजनीति से सन्यास लेकर समाज सुधारक के रुप में ख्याति अर्जित की और अनेक महान कार्यों के कारण इनको महामना की उपाधि मिली। नागरी प्रचारिणी सभा की स्थाना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना और 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही वे इतिहास पुरुष बन गये, जिन्होंने राजनीतिक स्वार्थ नहीं सेवा का मार्ग चुना। भारत सरकार ने उन्हें मरणोपरान्त 24 दिसम्बर 2014 को भारत रत्न से नवाजा। महामना अपनी कृतियों के कारण सदैव जीवित रहेंगे।

त्रिलोचन शास्त्री

(पुण्यतिथि 9 दिसम्बर)

हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर त्रिलोचन शास्त्री का जन्म 20 अगस्त को उत्तर प्रदेश में सुल्तानपुर जिले के कठघरा चिरानी पट्टी नामक गांव में हुआ था। इनका मूल नाम वासुदेव सिंह था। त्रिलोचन शास्त्री ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एमए अंग्रेजी और लाहौर से संस्कृत में शास्त्री की डिग्री प्राप्त की थी। अपने छोटे से गांव से बनारस तक के सफर में इन्होंने दर्जनों पुस्तकें लिखीं और हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। आधुनिक हिन्दी कविता के 'त्रयी' कहे जाने वाले दो स्तम्भ नागार्जुन व शमशेर बहादुर में ये तीसरे थे।

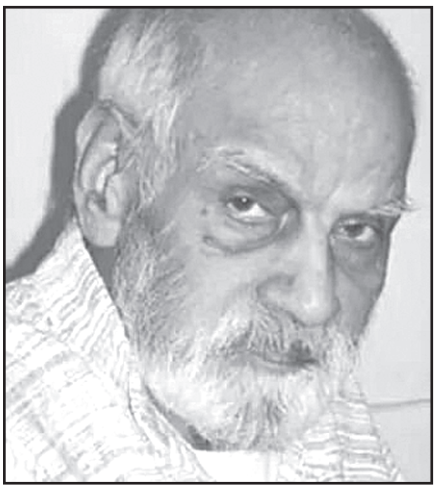

इनकी मुख्य रचनाएं 'गुलाब और बुलबुल', उस जनपद का कवि हूं, ताप के ताये हुए दिन, तुम्हें सौंपता हूं और मेरा घर आदि प्रमुख हैं। पत्रिकारिता के क्षेत्र में प्रभाकर, वानर, हंस, आज और समाज जैसी पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। सरकार ने साहित्य अकादमी पुरस्कार (1982), शलाका सम्मान 1989-90 प्रदान किया था।

आज मैं अकेला हूँ
अकेले रहा नहीं जाता
जीवन मिला है यह
रतन मिला है यह
धूल में कि फूल में
मिला है तो मिला है यह
मोल-तोल इसका
अकेले कहा नहीं जाता।
सुख आये दुख आये
दिन आये रात आये
फूल में कि धूल में
आये जैसे जब आये
सुख दुख एक भी
अकेले सहा नहीं जाता।।

त्रिलोचन शास्त्री का निधन 9 दिसम्बर 2007 को गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में हो गया।

रामानन्द सागर

(पुण्यतिथि 12 दिसम्बर 2005)

बहुमुखी प्रतिभा के धनी रामानन्द सागर का जन्म अविभाजित भारत के लाहौर जिले के असलगुरु गांव में 29 दिसम्बर 1927 को एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनका असली नाम चन्द्रमौली चोपड़ा था जिनको नानी ने गोद लिया था और इनका नाम बदलकर रामानन्द रख दिया।

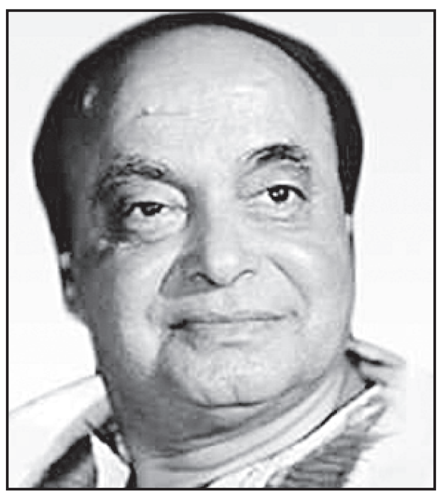

1947 में देश विभाजन के बाद सबकुछ छोड़कर रामानन्द भारत आ गये। उन्होंने विभाजन की जो भयावहता देखी थी उससे उनके मन को झकझोर दिया जिसे उन्होंने 'और इंसान मर गया' नामक संस्मरणों के रुप में लिपिबद्ध किया। धर्म, संस्कृति के प्रति उनके मन में असीम अनुराग और भक्तिभाव था। आगे चलकर कठिन संघर्षों से अपनी जिन्दगी की गाड़ी चलाते हुए वे धारावाहिक 'रामायण' से एक सफल निर्देशक के रुप में ख्याति अर्जित की और भारत में रामानन्द सागर के नाम से स्थापित हो गये। उनके अन्य धारावाहिक कृष्णा, विक्रम बेताल, जय गंगा मैया आदि प्रसिद्ध हुए। उनकी फिल्म इंसानियत, कोहेनूर, पैगाम, आंखें, ललकार, चरस, आरजू, गीत आदि सुपरहिट हुई। उनके नाम पद्मश्री, फिल्मफेयर पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ निर्देशक (आंखें), फिल्म फेयर पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ लेखक (पैगाम) के लिए दिया गया। उनके नाटक, कहानियां भी चर्चित हैं। 12 दिसम्बर 2005 को मुम्बई के एक अस्पताल में उनका निधन हुआ। 87 वर्षीय रामानन्द सागर अपने अमर कृतियों के साथा भारतीय फिल्म जगत में सदैव अमर रहेंगे।

राम प्रसाद विस्मिल

(पुण्यतिथि 19 दिसम्बर)

पंडित राम प्रसाद विस्मिल किसी परिचय के मोहताज नहीं। भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषाविद व साहित्यकार विस्मिल जी का जन्म 11 जून 1897 को मैनपुरी में हुआ था। इनके दादा और पिता ग्वालियर के निवासी थे। सम्भवतः इनका जन्म ननिहाल में हुआ था। बचपन से ही नटखट और शिक्षा पर ध्यान न देने के कारण मार भी पड़ती थी। विस्मिल जी को हथियारों का भी शौख था। आजादी की लड़ाई में भाग लेने और अंग्रेजों को मार गिराने की पीड़ा उन्हें सोने नहीं देती थी। एक बार माता के दिये पैसे से शाहजहां पुर के एक व्यक्ति से उन्होंने हथियार और बारुद भी खरीदा, मगर उसकी मारक क्षमता से दुखी हो गये। प्रसिद्ध कांतिकारी भाई परमानन्द से प्रभावित विस्मिल जी को अत्यंत पीड़ा हुई जब लाहौर काण्ड में 1915 में परमानन्द जी को फांसी की सजा हो गयी। उसका बदला उन्होंने 9 अगस्त 1925 को काकोरी काण्ड के रूप में लिया। सरफरोशी की तमन्ना जैसे अमर गीत ने हर भारतीय के दिल में जगह बनाई और अंग्रेजों से भारत की आजादी के लिए चिंगारी छोड़ी जिसने ज्वाला का रूप लेकर ब्रिटिश शासन के भवन को लाक्षागृह में बदल दिया। अपने जीवन के अंतिम दिनों में गोरखपुर जेल में उन्होंने आत्मकथा लिखी। 19 दिसम्बर 1927 को साढ़े छह बजे प्रातः उन्हें फांसी दी गयी और शरीर आम जनता को सौंपा गया, जिसे जयघोष के साथ पंचतत्व में विलीन किया गया।

विक्रम साराभाई

(पुण्यतिथि 30 दिसम्बर 1971)

डा. विक्रम अंबालाल साराभाई का जन्म 12 अगस्त 1919 को गुजरात राज्य के अहमदाबाद शहर में हुआ था। इनका परिवार एक सम्पन्न जैन परिवार था। इनके पिता अम्बालाल साराभाई एक उद्योगपति थे। कई मिलों के मालिक थे। आठवें पुत्र विक्रम को विज्ञान की पढ़ाई के लिए इनके पिता कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के सेंट जान कालेज में भेज दिये। 1940 में प्राकृतिक विज्ञान में

ट्राईपास हासिल कर द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारत लौट आये। भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलोर में नोबेल पुरस्कार विजेता सी.वी. रमन के मार्गदर्शन में ब्रम्हांडीय किरणों में अनुसंस्थान शुरु किया। विश्वयुद्ध के बाद 1945 में फिर कैम्ब्रिज लौटे और 1947 में उन्हें उष्णकटिबंधीय अक्षांश में कॉस्मिक किरणों की खोज पर शोध में पीएचडी की डिग्री से सम्मानित किया गया। इन्होंने भारत को अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। इन्हें अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक भी कहा जाता है। इसरो की स्थापना इसमें से एक है। इनको सरकार ने शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार (1962), पद्मभूषण (1966), पद्मविभूषण (1972) मरणोपरान्त प्रदान किया था। इनका निधन 30 दिसम्बर 1971 को कोवलम तिरुअन्तपुरम केरल में हुआ था। देश में इनके नाम से संस्थानों के नामकरण भी किये गये हैं। इनके सम्मान में तिरुवनंतपुरम में स्थापित थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लाँचिंग स्टेशन और सम्बद्ध अंतरिक्ष संस्थाओं का नाम बदलकर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र रखा गया।

बादलों का घर मेघालय

नॉर्थ-ईस्ट राज्य प्राकृति और सुंदर वादियों के लिए जाना जाता है। अगर आप मेघालय जाने का प्लान बना रहे हैं, तो यह लेख आपके लिए है। मेघालय को बादलों का घर कहा जाता है। यहां की सुंदरता दुनियाभर में फेमस है। मेघायलय में पानी भी शीशे की तरह चमकता है और घने जंगल की सुंदरता देखकर आप कहीं न कहीं खो जाएंगे। जो एक बार मेघालय घूमने जाएगा वो वही का होकर रह गया है। मेघालय में आपको पहाड़, झरने, नदियां, झील, हरे जंगल सबकुछ देखने को मिलेगा। आइए आपको बताते हैं आप किन जगहों पर जरुर घूमने जाएं।

शिलॉन्ग

मेघालय की राजधानी शिलॉन्ग घूमने जरुर जाएं। यह शहर बेहद ही खूबसूरत और हरियाली से घिरा हुआ है। मेघालय पूर्वी हिमालय की पहाड़ियों में बसा हुआ है शिलॉन्ग। इसे मिनी स्कॉटलैंड भी कहा जाता है। शिलॉन्ग में आप व्यू पॉइंट, लैत्कोर पीक, स्प्रेअद ईगल फॉल्स, लेडी ह्यदारी पार्क और एलिफेंट फॉल्स को जरुर देखें।

डॉकी झील

डॉकी झील भारत-बांग्लादेश सीमा पर एक छोटा-सा शहर बसा है। डॉकी झील को उमंगोट नदी भी बोला जाता है, जो कि भारत से बांग्लादेश तक बहती है। इसका पानी एकदम क्रिस्टल क्लियर है। इधर नाव पर सफर करने से ऐसा फील होता है कि जैसे नाव हवा में है।

दावकी

अगर आप मेघालय जा रहे हैं, तो पश्चिम जयंतिया हिल्स जिले में स्थित दावकी छोटा सा टाउन है, यहां पर घूमने के लिए कई सारी जगहें हैं। इधर आपको सुंदर झरने देखने को मिलेंगे। दावकी में जाफलोंग जोरी पॉइंट, बुरहिल झरने, मावल्यान्नॉग, रिवाई जैसी खूबसूरत जगहों को एक्सप्लोर कर सकती हैं।

मौसिनराम

मेघालय के खासी हिल्स में मौसिनराम एक सुंदर बस्ती है, यह अपनी प्राकृतिक स्टैलेग्माइट शिवलिंग जैसी संरचनाओं के लिए जाना जाता है। यहां पर मावजिम्बुइन गुफा देखने को लायक मिलती है। इस गुफा में शिवलिंग भी रखी है, जो कि स्टैलेग्माइट के लिए जानी जाती है। यहां का वातावरण एकदम शांत और सुकून से भरा हुआ है। कलकल करता हुआ पानी की आवाज आपके मन को शांति प्रदान करेगा।

मावफलांग पवित्र वन

मेघालय में मावफलांग वन एक प्रचीन जंगल है, जो काफी शुद्ध व पवित्र माना जाता है। इस जंगल से एक भी पत्ती बाहर लेकर जाना माना है और इस जंगल में आपको रुद्राक्ष के पेड़ मिलेंगे, हर मुख वाली रुद्राक्ष पेड़ में लगी होती है। ●

सर्दियों में बालों को झड़ने से बचाएं

विंटर सीजन अपने साथ ठंड, ड्राई स्किन और बालों में रुखापन और कई हेल्थ प्रॉब्लम लेकर आता है। सर्दियों में शरीर और बालों पोषण देने के साथ-साथ अंदर से भी गर्माहट देना बहुत जरुरी होता है। स्कैल्प ड्राई होने के कारण डेंड्रफ, ड्राईनेस और रुखेपन की समस्या बढ़ जाती है, जिससे हेयर फॉल भी बढ़ने लगता है। आयुर्वेद में सर्दियों में तेल का इस्तेमाल सिर्फ शरीर की मालिश के लिए नहीं, बल्कि बालों और स्कैल्प को पोषण देने के लिए बेहद जरुरी है। आयुर्वेद के अनुसार सर्दियों में बालों के लिए सही तेल का इस्तेमाल सिर में करना बेहद जरुरी है। आइए आपको बताते हैं विंटर में बालों के लिए सहीं तेल लगाने का आयुर्वेद में नियम क्या है?

सर्दियों में बालों के लिए तेल चुनने का आयुर्वेदिक नियम

उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड पड़ती है, जिससे हवा भी काफी रुखी हो जाती है। जिस वजह से बाल बेजान, बिखरे हुए और टूटने वाले होने लगते हैं। स्कैल्प की स्किन पर सफेद परत, डेंड्रफ और खुजली भी बढ़ जाती है। इस स्थिति में नारियल तेल बालों को नेचुरल नमी प्रदान करता है। आयुर्वेद में बताया है कि नारियल तेल का नेचर मृदु होता है, जो वात दोष को शांत करता है। यह बालों की जड़ों को नमी प्रदान देता है, यह डैंड्रफ को कंट्रोल करता है, बाल टूटने, दोमुंहे होने और फ्रिजी होने से बचाता है।

नारियल तेल बालों में कैसे लगाएं

विंटर में नारियल का तेल जम जाता है। इसके लिए इसे आप थोड़ा गुनगुना करके स्कैल्प में अच्छी तरह मालिश करना चाहिए। रात भर इसे अपने बालों में लगा रहने दें और अगली सुबह बालों को धो लें।

डेली केयर के लिए सरसों का तेल

आयुर्वेद में सरसों का तेल को गर्म गुणों वाला माना गया है। सर्दियों में सरसो का तेल शरीर और सिर दोनों को गर्माहट देने के लिए जरुरी होता है। यदि आप बालों को रुटीन में मसाज करना चाहते है और पोषण देना चाहते हैं तो सरसों का तेल आपके लिए सबसे बेहतरीन विकल्प है। स्कैल्प में सरसों का तेल लागने से ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है, यह बालों की जड़ों को मजबूत बनाता है। सिर की नसों को गर्माहट मिलती है, बालों की ग्रोथ बढ़ते हैं, डैंड्रफ और स्कैल्प की खुजली से राहत मिलती है।

कैसे लगाएं सरसों का तेल?

हल्का सा गुनगुना सरसों का तेल करके बालों में लगाएं। आप इसे हफ्ते में 1 या 2 बार सरसों के तेल से स्कैल्प की मालिश कर सकते हैं।

बालों में तेल कैसे लगाएं आयुर्वेदिक टिप्स

- सबसे पहले गुनगुना तेल अपने स्कैल्प में लगाने से तेल जड़ों तक पहुंचाता है।

- तेल लगाने के बाद 10 से 15 मिनट धूप में बैठें।

- बहुत तेज ठंड में तेल लगाकर तुरंत बाहर नहीं जाना चाहिए।

- हफ्ते में कम से कम 3 बार तेल जरुर लगाएं।

- डैंड्रफ ज्यादा हो तो नारियल तेल में कपूर मिलाकर लगाएं।

मधुमक्खी इकाई की स्थापना एवं मौसम के अनुरूप प्रबन्धन

-चंचल सिंह

हमारे देश का एक बहुत बड़ा भू-भाग विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों से आच्छादित रहता है, जो एक निश्चित समय के पश्चात अपने प्रजनन के समय विभिन्न प्रकार के पुष्प धारण करते है। जिसमें मकरंद एवं पराग प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहतें है, जो फल/बीज बनाने के साथ ही प्रकृति में ही विलुप्त हो जाते है। यदि हम समय रहते इन्हे एकत्रित कर लें, तो इसे विभिन्न उपयोग में ला सकते है। वनस्पतियों में उपलब्ध मकरंद एवं पराग एकत्र करने का एक मात्र सुलभ साधन मधुमक्खी ही है, जो बड़ी ही कुशलता इन्हे एकत्रित करके अपने घर में भण्डारित करती है। मधुमक्खी पालक अथवा किसान यह व्यवसाय 5 - 100 परिवारों के साथ प्रारम्भ कर सकते है। एक मधुमक्खी के पेटिका में क्रमशः तलपट, शिशु खण्ड, रानी प्रतिरोधक जाली, शहद खण्ड, भीतरी ढक्कन, ऊपरी ढक्कन एवं 20 मोमी आधारीय छत्ता (Wax Foundation Sheet) लगे हुये चौखट (फ्रेम) होते है।

एक मधुमक्खी परिवार में 8 फ्रेम की मधुमक्खी, एक रानी तथा फ्रेमों के कोष्ठकों में अण्डा, लार्वा, एवं प्यूपा अपेक्षित मात्रा में उपलब्ध होने चाहिए। मधुमक्खी के अच्छे परिवार में प्यूपा की मात्रा अधिक होनी चाहिए। वैसे तो एक मधुमक्खी परिवार में 20 फ्रेम की मधुमक्खियाँ होनी चाहिए। परन्तु व्यवसाय आरम्भ करने के लिए हमे 8 फ्रेम की ही मक्खियाँ क्रय करनी चाहिए। अनुकूल मौसम में जिनकी संख्या बढ़कर 20 फ्रेम तक हो जाएंगी। यदि हम 20 फ्रेम की मधुमक्खी खरीदेंगे तो लागत अधिक आएगी, साथ ही साथ इनके परिवहन में भी कठिनाई होगी। नए मधुमक्खी पालक को शुरुआती एक वर्ष तक अपने मधुमक्खी परिवारों को मजबूत करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। एक मजबूत मधुमक्खी परिवार से प्रतिवर्ष औसतन 60-80 किलोग्राम शहद प्राप्त हो सकता हैं। यदि मधुमक्खी पालक स्थानांतरण पद्धति द्वारा मधुमक्खी पालन करना चाहता है, तो उसे 10-50 मधुमक्खी परिवारों से शुरुआत करना चाहिए। साथ ही प्रयत्न करना चाहिए कि एक गाँव या क्षेत्र में समूहिक रूप से औसतन 150 मधुमक्खी परिवारों का ही स्थानांतरण एक स्थान से दूसरे स्थान पर करने की सहमति बनानी चाहिए। जिससे स्थानांतरण में प्रतिव्यक्ति व्यय कम से कम किया जा सके।

मधुमक्खी पालन में ध्यान देने योग्य प्रमुख बातें

1) मधुमक्खियों को किसी प्रमाणित संस्था से ही क्रय करना चाहिए।

2) इकाई की स्थापना ऐसे स्थान पर की जानी चाहिए, जहाँ आस-पास पुष्पीय पौधे प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो। जहाँ से मधुमक्खियाँ पुष्प-रस एवं पराग एकत्रित कर सकें।

3) मधुमक्खियों को पुष्प-रस एवं पराग नियमित मिलते रहना चाहिए, जिनका उपयोग ये अपने भोजन के रूप में कर सकें।

4) इकाई स्थापना के लिए शान्त एवं छाएदार स्थान का चुनाव किया जाना चाहिए, जो बिजली के तार, मोबाईल टावर से दूर हो।

5) जब कभी प्रकृति में इनके प्राकृतिक भोजन की कमी परिलक्षित हो तो इनके जीवन निर्वाह के लिए कृत्रिम भोजन चीनी के घोल के रूप में दिया जाना चाहिए।

6) कृत्रिम भोजन के रूप में चीनी का घोल 1:1 के अनुपात में बनाया जाना चाहिए।

7) मधुमक्खियों को कृत्रिम रूप से शाम के समय इनके फीडर में घोल दिया जाना चाहिए, अन्य परम्परागत विधियों में मधुमक्खी परिवारों को अधिक क्षति होती हैं।

8) समान्यतया एक मधुमक्खी के पेटिका में 40-50 हजार मधुमक्खियों का आवास होता हैं, जिनसे लगभग 8-10 किलोग्राम शहद प्राप्त होता है।

9) मानकों के अनुसार प्रति हेक्टेयर क्षेत्रफल में 12-15 मधुमक्खी पेटिकाएँ रखी जा सकती हैं।

10) मधुमक्खी पालन का सबसे उत्तम समय माह नवम्बर से फरवरी का होता है, इसी मौसम में रानी मक्खी अपनी पूरी क्षमता से साथ अण्डे रखने का कार्य करती हैं।

11) मधुमक्खी इकाई के आस-पास साफ-सफाई का विशेष प्रबन्धन होना चाहिए तथा इनको क्षति पहुँचाने वाले जीवों को

इकाई से दूर रखने की व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए।

मधुमक्खी इकाई का मौसमी प्रबन्धनः-

अन्य जीवों की भाँति मधुमक्खी के स्वास्थ्य पर भी मौसम का प्रभाव पड़ता हैं। अतः वर्ष के विभिन्न मौसमों में मधुमक्खी इकाई का विशेष प्रबन्धन की आवश्यकता होती है। हमे ज्ञात है कि मधुमक्खियाँ 25-320 सेल्सियस तापक्रम पर अपनी विशेष क्षमता के साथ कार्य सम्पादित करती हैं। उक्त से कम अथवा अधिक तापक्रम पर इनकी कार्य क्षमता प्रभावित होती हैं। इनकी कार्यशीलता को एक निश्चित स्तर पर बनाए रखने के लिए विभिन्न मौसमों मे विशेष ध्यान देने योग्य बातें निम्नवत हैं।

शीत ऋतु

अपने देश कुछ प्रभागों में शीत (शरद) ऋतु में तापक्रम कभी-कभी घटकर 100 सेल्सियस के नीचे चला जाता हैं। इन परिस्थितियों में मधुमक्खियाँ बाहर नहीं निकलतीं हैं, परिणामस्वरूप धीरे-धीरे इनके भोजन का आभाव होने लगता हैं। जैसे ही बाहर का तापमान 100 सेल्सियस से ऊपर होता है, साथ ही साथ प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता बढ़ने लगती है, तब इनके परिवार में वृद्धि प्रारम्भ हो जाती हैं। इस मौसम में जिन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए, वह इस प्रकार हैंः-

1) मौनगृहों के आन्तरिक ढक्कन के नीचे जूट के बोरी की एक पट्टी बिछा देना चाहिए।

2) यदि सम्भव हो तो प्रवेश द्वार को छोड़कर मौनगृह को पोलिथीन से ढ़क देना चाहिए।

3) मौनगृह के ऊपरी भाग पर सूखे घास-फूस अथवा पुआल की छप्पर या टाटी बनाकर रख देना चाहिए।

4) मौनगृह ऐसे स्थान पर रखना चाहिए, जहाँ की जमीन सूखी हो तथा दिनभर धूप रह सके।

5) यदि परिवार की रानी एक साल से ज्यादा पुरानी हो तो नई रानी देने का प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

6) जिन क्षेत्रों में शीतलहर की सम्भावना रहती हो ऐसे स्थानों पर आवश्यकतानुसार कृत्रिम भोजन की व्यवस्था की जानी चाहिए।

7) यदि मौनगृह पुराने अथवा जर्जर हो चुके हो तो इन्हे मरम्मत करना चाहिए अथवा बादल देना चाहिए।

8) यदि ठण्ड अधिक अथवा बादल युक्त मौसम हो तो मौनगृहों को नहीं खोलना चाहिए।

9) यदि मधुमक्खियों की संख्या बढ़ रही हो तो नए फ्रेम देकर इनको समुचित स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।

10) यदि भोजन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो तो शहद एवं पराग को वैज्ञानिक विधि से एकत्रित किया जाना चाहिए।

बसन्त ऋतु

मधुमक्खियों के लिए यह मौसम सबसे अनुकूल मानी जाती हैं, इस मौसम में इनका भोजन प्रकृति में प्रचुर मात्र में उपलब्ध रहता हैं। इस मौसम में इनकी वंश वृद्धि भी बहुत तीब्र गति से होती हैं, फलस्वरूप इनके उत्पादों का उत्पादन भी बढ़ जाता हैं। इस मौसम में मधुमक्खियों को देख-रेख की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती हैं। बसन्त ऋतु में इकाई प्रबन्धन के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैंः

1) शीत ऋतु के समाप्त होने पर धीरे-धीरे मौनगृहों पर रखी हुई सूखी घास-फूस अथवा पुआल की छप्पर या टाटी हटा देना चाहिए।

2) मौनगृहो की साफ-सफाई सुनिश्चित की जानी चाहिए।

3) यदि सम्भव हो तो मौनगृहों के आन्तरिक दरारों को बन्द किया जाना चाहिए।

4) यदि भोजन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो तो शहद एवं पराग को वैज्ञानिक विधि से एकत्रित किया जाना चाहिए।

5) यदि परिवार में नर सदस्यों की संख्या मानक से अधिक हो गयी हो तो इन्हे आकर्षित करके निकाल देना चाहिए।

6) मधुमक्खियों की कार्यशीलता को बनाए रखने के लिए मौनगृहों में समुचित खाली स्थान का प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

7) आवश्यकतानुसार नए-नए फ्रेम इनके परिवारों को दिया जाना चाहिए।

मधुमक्खी परिवार का विभाजन

जब मौसम मधुमक्खियों के लिए अनुकूल होता है, तब इनके परिवार में वंश वृद्धि बहुत तीब्र गति से होती है। फलस्वरूप मौनगृहों में स्थान की कमी होने लगती है। इस समय इनके परिवार में प्राकृतिक रूप से विभाजन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। जिसके क्रम फ्रेम के निचले भाग पर रानी के कोष का निर्माण किया जाता है, जिसमे रानी निषेचित अण्डे रख देती हैं। अण्डे से लार्वा बाहर निकलता है, जिसके बाद इन्हे भोजन के रूप में रॉयल जेली देना प्रारम्भ कर दिया जाता हैं। जब ये अपनी लारवल अवस्था पूर्ण कर लेते हैं, तो अपने चारों तरफ एक परत चढ़ाकर सुसुप्तावस्था में चले जाते हैं। जिसे प्यूपा कहा जाता हैं, इसी अवस्था में इनके कोष को ऊपर से बन्द कर दिया जाता है। इसके बाद रानी परिवार के आधे सदस्यों के साथ मौनगृह को छोड़कर चली जाती है, जिसे घरछुट (Swarming) कहते हैं। रानी सहित इनके सम्पूर्ण समूह को स्वार्म (Swarm) कहते हैं, इन्हे पकड़कर इनका एक नया परिवार स्थापित किया जा सकता हैं। नया स्थापित यह परिवार बहुत ही तेज गति से अपनी वंश वृद्धि करता है, बस इन्हे शुरुआती भोजन एवं समुचित स्थान देने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

जो मधुमक्खी पालक स्वार्म पकड़ने में हिचकते है अथवा कुशलता पूर्वक पकड़ने में असमर्थ रहते हैं। वे कृत्रिम रूप से मधुमक्खी परिवार का विभाजन करते है। जिसके लिए एक नया मौनगृह (फ्रेमों से भरा हुआ) लिया जाता है, जिसके फ्रेमों को निकाल कर एक स्थान पर रख दिया जाता हैं। अब जिस परिवार का विभाजन करना हो उसके पास नए मौनगृह को रखकर, पुराने मौनगृह के आधे फ्रेमों को, जिसमे शहद, पराग,

अण्डे-बच्चे हों को नए मौनगृह में स्थानान्तरित किया जाता हैं। फ्रेमों को स्थानान्तरित करते समय इस बात का ध्यान दिया जाता है कि रानी का फ्रेम नए मौनगृह में रहे तथा एक से दो अण्डे युक्त फ्रेम पुराने मौनगृह में रहे, जिससे नए रानी कोष का निर्माण हो सके। इस प्रकार के कृत्रिम विभाजन के 14-15 दिनों पश्चात नई रानी बन जाती हैं। अब दोनों मौनगृहों को धीरे-धीरे दूर करके, इनके बीच मानक के अनुसार दूरी बना ली जाती हैं। इस प्रकार भी एक परिवार से दो परिवार बनाए जा सकते हैं, परन्तु प्राकृतिक रूप से विभाजित परिवार अपेक्षाकृत अधिक कुशलता से अपने कार्यों को सम्पादित करते हैं।

ग्रीष्म ऋतु

जिस प्रकार हमने देखा की अधिक ठण्ड से मधुमक्खियों की कार्यशीलता प्रभावित होती है, उसी प्रकार 35-400 सेल्सियस तापक्रम पहुँचने पर भी मधुमक्खियों की कार्य क्षमता प्रभावित होती हैं। ठण्ड में हम मौनगृहों के तापक्रम को बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे, वहीं इस मौसम मौसम में हम इनके तापक्रम को कम रखने का प्रयास करेंगे। इस मौसम में प्राकृतिक भोजन के साथ ही साथ स्वच्छ जल का भी अभाव रहता हैं। जिसको दृष्टिगत रखते हुये हमे निम्नवत बिन्दुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिएः-

1) एकत्रित किए गए शहद एवं पराग को प्रसंस्कृत करके बाजार में विक्रय हेतु उपलब्ध कराना चाहिए।

2) मधुमक्खी इकाई को किसी छाएदार स्थान पर रखने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

3) यदि स्वच्छ पानी का प्राकृतिक श्रोत उपलब्ध नहीं हो तो इसकी कृत्रिम व्यवस्था की जानी चाहिए।

4) यदि प्राकृतिक भोजन का अभाव हो तो कृत्रिम भोजन (1:1 के अनुपात का चीनी का पानी के साथ घोल) की व्यवस्था की जानी चाहिए।

5) मौनगृहों के तापक्रम को अनुकूल बनाए रखने के लिए, इनके ऊपर जूट के भीगे हुए बोरियों को रखा जाना चाहिए। आवश्यकतानुसार दिन में कम से कम दो बार बोरी को भीगाना भी चाहिए।

6) यदि सम्भव हो तो इकाई के आस-पास अधिक मकरंद एवं पराग उत्पन्न करने वाले फसलों बरसीम, सूर्यमुखी, मक्का, करंज, अमलतास, अर्जुन इत्यादि को लगाया जाना चाहिए।

7) ग्रीष्मकाल में चलने वाली तेज गर्म हवाओं से मधुमक्खियों को बचाने हेतु वायु-वाड़ (ॅर्ह्ी७) की व्यवस्था की जानी चाहिए।

8) इस मौसम में मधुमक्खियों की संख्या धीरे-धीरे कम होने लगती है, अतः मौनगृहों के खाली हो रहे फ्रेमों को निकालकर सुरक्षित रखने का भी प्रबन्ध किया जाना चाहिए। जिससे मोमी पतंगा के प्रकोप को कम किया जा सके।

9) इकाई को चींटियों के प्रकोप से बचाने के लिए स्टैण्ड के पैरों को पानी से भरे कटोरी में रखना चाहिए, जिससे ये मधुमक्खियों तक नहीं पहुँच सकें।

मधुमक्खी परिवारों को जोड़ना

कभी-कभी ऐसी भी परिस्थितियाँ बनतीं हैं कि प्रतिकूल मौसम एवं प्राकृतिक भोजन के आभाव मधुमक्खी परिवारों की संख्या मानक से कम रह जाती है। ऐसे परिववारों को कमजोर परिवार कहते हैं, इन्हे दो विधियों द्वारा मजबूत बनाया जा सकता हैः

1) मजबूत परिवार से अण्डों-बच्चों (Brood) का एक या दो फ्रेम निकालकर कमजोर परिवार में डाला दिया जाता है तथा कमजोर परिवार का खाली फ्रेम मजबूत परिवारों को दिया जाता है। ध्यान इस बात का रखा जाता है कि किसी एक परिवार की वयस्क मधुमक्खी दूसरे परिवार में नहीं जा सके।

2) दो कमजोर परिवार की मधुमक्खियों को एक परिवार बनाकर जोड़ दिया जाय। जिसके लिए सबसे उपयुक्त विधि समाचार पत्र विधि है, जिसका विवरण इस प्रकार हैंः

वर्षा ऋतु

मधुमक्खियों के लिए वर्षा ऋतु बहुत ही कष्टकारी एवं समस्याओं से भरी होती है। इस मौसम में इनके विशेष देख-भाल की आवश्यकता होती है। जबकि मौसम खराब होने के कारण हम बार-बार इनकी निगरानी नहीं कर पाते हैं, परिणामस्वरूप इनके शत्रुओं का प्रकोप बढ़ जाता है। वर्षा ऋतु में मधुमक्खियों के प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पड़ती हैः

1) मौनगृहों को तेज वर्षा एवं हवा से बचाव का समुचित प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

2) स्टैण्ड के पैरों में लगे कटोरियों को पानी से भरकर रखना चाहिए।

3) समय-समय पर मौनगृहों का निरीक्षण एवं साफ-सफाई किया जाना चाहिए।

4) खाली हो रहे फ्रेमों को मौनगृहों से निकालकर सुरक्षित रखते रहना चाहिए।

5) संक्रमित फ्रेमों को निकाल कर नष्ट किया जाना चाहिए।

6) संभव हो तो प्रवेश द्वार को छोडकर सम्पूर्ण मौनगृह को पोलिथिन से ढ़क कर रखना चाहिए।

7) यदि किसी मौनगृह में नमी की अधिकता हो तो इन्हे बदल देना चाहिए तथा धूप में रखकर सूखा लेना चाहिए।

8) यदि प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता नहीं हो तो कृत्रिम भोजन की व्यवस्था की जानी चाहिए।

9) यदि सम्भव हो तो इन्हे ऐसे स्थान पर स्थानान्तरित किया जाना चाहिए, जहाँ इनके प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता हो।

10) यदि स्थानांतरण सम्भव नहीं हो तो इकाई के आस-पास ऐसे फसलों (कद्दूवर्गीय सब्जियाँ, तिल, ज्वार, बाजरा, मक्का इत्यादि) की खेती की जानी चाहिए, जिनमें मकरंद व पराग प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों।

बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत

दिसम्बर मास का राशिफल

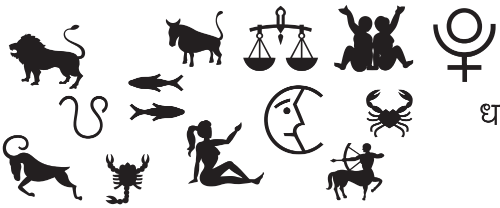

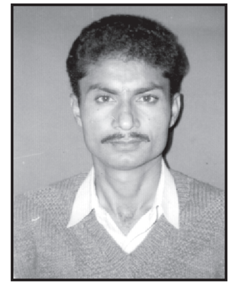

पं0 राम कृपाल शुक्ल

धर्मशास्त्राचार्य, पुराणेतिहासाचार्य एवं कर्मकाण्ड कोविद

मो. 9415820597

मेष- यह माह आपके अनुकूल नहीं रह सकता है। अंतर्द्वन्द बना रहेगा जो आपके निर्णय को प्रभावित करेगा। अनावश्यक भागदौड़ बनी रहेगी। पारिवरिक उलझनें बढ़ सकती हैं। सरकारी कार्यों में अड़चनें आ सकती हैं। स्वास्थ्य बाधा का भी अनुभव करेंगे। खानपान में सावधानी रखनी चाहिए। दिनांक 6, 7, 16, 24 नेष्ट हैं।

वृषभ- यह माह आपके मनोनुकूल नहीं है। कार्यों में गतिरोध आएगा। निरर्थक भागदौड़ करेंगे। अनेक तरह के व्यतिक्रम बने रहेंगे। आर्थिक असंतुलन बना रहेगा। स्वास्थ्य बाधा की भी सम्भावना है। परिवार से सहयोग मिलता रहेगा। माह के उत्तरार्ध में स्थितियां सुधरेंगी। भोजन समय से करने की कोशिश करें। दिनांक 8, 17, 26, 27 नेष्ट हैं।

मिथुन- यह माह मिलाजुला परिणाम देने वाला है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। पीछे से चली आ रही परेशानियां बढ़ती जायेंगी। सफलता पाने के लिए वैचारिक संकीर्णता से निकलना होगा। साधु समागम का योग है। घर-परिवार को लेकर चिन्ता बनी रहेगी। कृषि और व्यापार दोनों में वृद्धि हो सकती है। दिनांक 1, 10, 19, 20 नेष्ट हैं।

कर्क- यह माह मिश्रित प्रभाव वाला रहेगा। रुके हुए कार्यों के बनने से खुशी होगी। आर्थिक असंतुलन से चिन्ता बढ़ेगी। रोजी-रोजगार चलता रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सन्तान पक्ष से सहयोग मिलेगा और सुख का अनुभव करेंगे। माह के अंत में समस्याओं का निराकरण करने वाला परिवर्तन दिखेगा। दिनांक 3, 13, 21, 22 नेष्ट हैं।

सिंह- आपके लिए ग्रहों का परिवर्तन सुखद है। आर्थिक मजबूती मिल सकती है। जीवन के हर क्षेत्र में विकास होने का योग दिख रहा है। गुरु के स्थान परिवर्तन से ऐसा संयोग बन सकता है। संतान-पक्ष की दिक्कतें दूर हो सकती हैं। शेयर आदि से आर्थिक लाभ हो सकता है। छात्रों की पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। दिनांक 2, 15, 23, 24 नेष्ट हैं।

कन्या- यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा है। मित्र सहायक रहेंगे। सरकारी कामकाज में अनुकूलता रहेगी। दाम्पत्य सुख सामान्य रहेगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।गाड़ी-घोड़ा खरीदने का समय है। माह के अंत में ग्रह परिवर्तन हो रहा है जो शुभ है। दिनांक 8, 17, 26, 27 नेष्ट हैं।

तुला- यह माह रचनात्मक कार्यों में रुचि-सम्पन्न रखेगा। आत्मीयजनों का सहयोग मिलेगा जिससे सफलता की ओर अग्रसर होंगे। लाभ के अवसरों के मूल्यांकन में आपसे चूक होती है। माह के उत्तरार्ध में यह ठीक हो सकती है। यह माह अतिरिक्त आय देने वाला है। ग्रहों का परिवर्तन शुभ है। सामाजिक विकास हो सकता है। दिनांक 1, 10, 19, 28 नेष्ट हैं।

वृश्चिक- यह माह शारीरिक सुख की दृष्टि से ठीक नहीं रहने वाला हो सकता है। आपका आत्मबल उत्तम रहेगा जिससे सारा काम चला लेंगे। निर्णय लेने में शीघ्रता करने से हानि हो सकती है। गृह, भूमि और कृषि सम्बन्धी कार्यों का सामान्य समय है। सन्तान पक्ष से सुख मिलेगा। मास का उत्तर भाग अधिक लाभकारी हो सकेगा। दिनांक 4, 13, 21, 23 नेष्ट हैं।

धनु- आपके लिए यह माह अन्तर्द्वन्द वाला है। उलझनें बढ़ सकती हैं। खान-पान में सावधानी बरतें। सरकारी पक्ष से भी परेशानी बढ़ सकती है। पारिवारिक सुख में कमी रहेगी और नयी-नयी उलझनें आएंगी। माह के उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन हो रहा है जो आपके लिए अच्छा है। समस्याएं कम होंगी। दिनांक 6, 15, 23, 25 नेष्ट हैं।

मकर- यह माह मस्तिष्क में उधेड़बुन लाने वाला है। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रह सकता है। निरर्थक भागदौड़ बनी रहेगी। मनोकूलता में कमी आती जाएगी। कार्यों में रुकावट आने से परेशान रहेंगे। व्यतिक्रम बना रहेगा जिससे दिनचर्या प्रभावित होगी। परिवार के लोग सहयोग करेंगे जिससे राहत बनी रहेगी। दिनांक 8, 17, 26, 27 नेष्ट हैं।

कुम्भ- यह माह मिलाजुला प्रभाववाला है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। जीवन अपनी गति से चलता रहेगा। सफलता के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। विरोधियों को प्रभावित कर सकेंगे। आर्थिक असंतुलन से परेशानी बढ़ेगी। माह के उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन हो रहा है जो आपके लिए अच्छा नहीं है। दिनांक 2, 10, 19, 20 नेष्ट हैं।

मीन- यह माह मिलाजुला प्रभाव वाला रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सरकारी पक्ष से कोई बाधा नहीं है। संतान सुख भी ठीक है। रोजी-रोजगार से जुड़े कार्य सामान्य गति से चलते रहेंगे। आर्थिक असंतुलन से परेशानी होगी। परिजनों के व्यवहार से चिन्ता होगी। माह के उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन आपको राहत देगा। दिनांक 4, 13, 14, 22 नेष्ट हैं।

डिजिटल युग में पशु चिकित्सा का नया स्वरूप

डॉ. अवन्तिका श्रीवास्तव

डिजिटल युग ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं, और पशु चिकित्सा विज्ञान भी इसका अपवाद नहीं है। पहले पशु चिकित्सक गांव-गांव घूमकर उपचार करते थे, जिससे समय, संसाधन और श्रम अधिक लगता था। आज मोबाइल, इंटरनेट, सेंसर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा तकनीक के आने से पशु चिकित्सा सुविधाएँ अधिक सुलभ, तेज़ और वैज्ञानिक हो चुकी हैं। ग्रामीण भारत में जहाँ डॉक्टर की उपलब्धता कम होती है, डिजिटल तकनीक ने पशुपालकों को आश्चर्यजनक रूप से सक्षम बनाया है। इससे न केवल रोगों की पहचान आसान हुई है, बल्कि पशुमालिकों की आय में भी वृद्धि होने लगी है। डिजिटल उपकरणों ने पशु स्वास्थ्य प्रबंधन को एक नए स्तर पर पहुँचाकर इसे आधुनिक, व्यवस्थित और प्रभावी बना दिया है।

टेली-वेटरनरी सेवाएँ

टेली-वेटरनरी सेवाएँ डिजिटल युग का सबसे बड़ा उपहार हैं। आज किसान अपने मोबाइल फोन से वीडियो कॉल, व्हाट्सऐप, फोटो और वॉइस कॉल के माध्यम से सीधे पशु चिकित्सक से संपर्क कर सकते हैं। डॉक्टर बिना मौके पर गए भी पशु की स्थिति का आकलन कर लेते हैं और उचित सलाह दे देते हैं। यह सुविधा उन क्षेत्रों में बेहद सहायक है जहाँ क्लिनिक पहुँचने में कई घंटे लगते हैं या डॉक्टर उपलब्ध नहीं होते। इससे आपातकालीन स्थिति में तुरंत प्राथमिक उपचार मिल जाता है, जिससे गंभीर नुकसान होने से बच जाता है।

मोबाइल एप्सः पशुपालन अब स्मार्टफोन से नियंत्रित

आज कई मोबाइल एप्स उपलब्ध हैं जो पशुपालकों को वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करते हैं। ये ऐप टीकाकरण शेड्यूल, दवाओं की सूची, आहार प्रबंधन, हीट डिटेक्शन, दुग्ध उत्पादन रिकॉर्ड और बीमारी के प्रारंभिक लक्षणों की जानकारी देते हैं। कुछ ऐप्स किसानों के डेटा से सीखकर उन्हें व्यक्तिगत सुझाव भी देते हैं। इससे पशुपालक पहले से अधिक जागरूक हो रहे हैं और वैज्ञानिक प्रबंधन के कारण उत्पादन बढ़ रहा है। कई राज्यों ने सरकारी पशु सेवा एप्स शुरू किए हैं, जिनसे शिविर, स्वास्थ्य योजनाओं और उपचार सुविधाओं की सूचना तुरंत मिल जाती है।

डिजिटल रिकॉर्ड-कीपिंगः हर पशु का पूरा जीवन-इतिहास

आर.एफ.आई.डी. टैग , क्यू.आर. कोड और डिजिटल हेल्थ कार्ड आधुनिक पशुपालन की नई पहचान बन गए हैं। इन तकनीकों के माध्यम से हर पशु का पूरा रिकॉर्ड सुरक्षित रहता है–जैसे टीकाकरण तिथि, बीमारी का इतिहास, उपचार, दूध उत्पादन, प्रजनन चक्र और गर्भधारण संबंधी जानकारी। इससे किसान को अपने पशुओं की स्थिति समझने में आसानी होती है और डॉक्टर भी सटीक उपचार प्रदान कर पाते हैं। बड़े डेयरी फार्मों में ये तकनीकें प्रबंधन को स्वचालित और डेटा-आधारित बना रही हैं।

ड्रोन और जी.आई.एस. (भौगोलिक सूचना प्रणाली) तकनीकः आधुनिक निगरानी की नई उड़ान

ड्रोन तकनीक अब चरागाहों की निगरानी, पशुओं की लोकेशन ट्रैकिंग, आपदा प्रभावित क्षेत्रों का सर्वेक्षण और बीमारी फैलने वाले क्षेत्रों की पहचान में उपयोग की जा रही है। जी.आई.एस. तकनीक की मदद से रोग-प्रभावित क्षेत्रों का मानचित्र बनाना, महामारी की गति को समझना और समय पर नियंत्रण योजना तैयार करना आसान हो गया है। यह तकनीक पशुधन संरक्षण और प्रबंधन में अभूतपूर्व बदलाव लाने में सक्षम है।

सेंसर और स्मार्ट कॉलरः रियल-टाइम स्वास्थ्य निगरानी

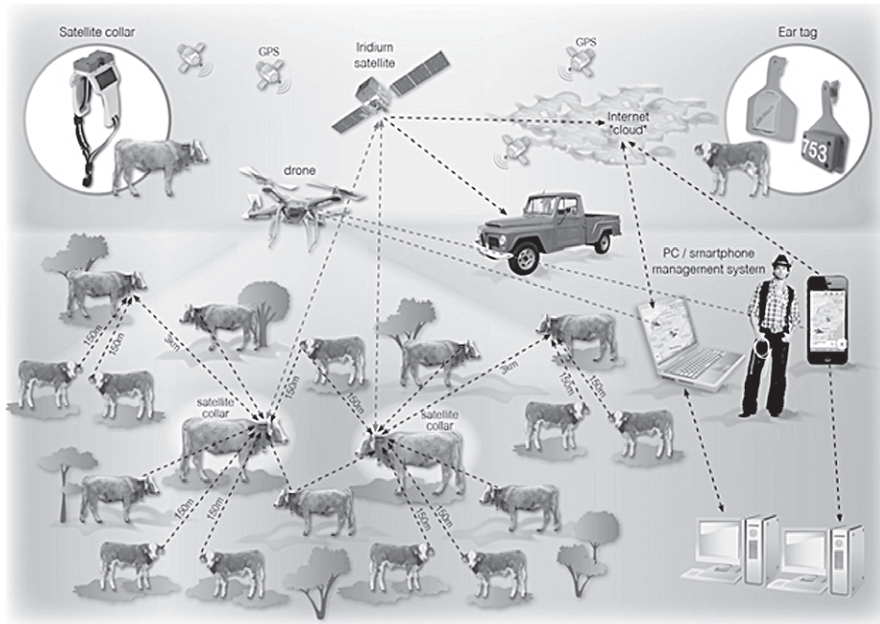

आजकल पशुओं के लिए स्मार्ट कॉलर, थर्मल सेंसर और एक्टिविटी मॉनिटरिंग डिवाइस उपलब्ध हैं। ये उपकरण पशु का तापमान, चलने-फिरने की गतिविधि, आहार, हीट साइकिल और व्यवहार में होने वाले बदलाव को तुरंत रिकॉर्ड करते हैं। यदि कोई असामान्यता होती है, तो सिस्टम किसान को तुरंत अलर्ट भेज देता है। इससे बीमारियों का पता प्रारंभिक अवस्था में ही चल जाता है, जिससे इलाज सरल और कम खर्चीला हो जाता है।

ए.आई. और मशीन लर्निंगः डिजिटल बुद्धिमानी से रोगों का पूर्वानुमान

ए.आई. (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) पशु चिकित्सा के भविष्य की सबसे शक्तिशाली तकनीक बन रही है। ए.आई. मॉडल पशुओं के लक्षण, तापमान, दूध उत्पादन, गतिविधि और पर्यावरणीय कारकों का विश्लेषण कर संभावित रोगों का अनुमान लगा सकते हैं। इससे किसान पहले से तैयार हो जाते हैं और गंभीर रोगों को फैलने से रोका जा सकता है। बड़े फार्मों में ए.आई. आधारित मिल्किंग सिस्टम और ऑटोमेशन फार्मिंग को अधिक आधुनिक और कुशल बना रहे हैं।

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मः दवाएँ और उपकरण अब घर बैठे

आज पशु चिकित्सा दवाएँ, सप्लीमेंट, फ़ीड, मिल्क बूस्टर, उपकरण और टैग ऑनलाइन उपलब्ध हैं। किसान घर बैठे विश्वसनीय कंपनियों के उत्पाद खरीद सकते हैं, जिससे नकली दवाओं का खतरा कम हो गया है। ऑनलाइन खरीदारी से लागत भी कम होती है और आवश्यक सामग्री समय पर उपलब्ध हो जाती है। इससे पशुपालन अधिक व्यवस्थित, सुरक्षित और आर्थिक बनता जा रहा है।

बुंदेलखंड जैसे क्षेत्रों में डिजिटल पशु चिकित्सा की विशेष उपयोगिता

बुंदेलखंड जैसे जल-संकट और संसाधन-कमी वाले क्षेत्रों में डिजिटल तकनीक विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यहाँ पशुपालक पहले कई कठिनाइयों का सामना करते थे–जैसे डॉक्टरों की कमी, दूर-दराज़ के गाँव, और अपर्याप्त उपचार सुविधाएँ। डिजिटल तकनीक ने इन चुनौतियों को काफी हद तक हल किया है। अब किसान आसानी से डॉक्टरों से संपर्क कर सकते हैं, ऑनलाइन रिकॉर्ड रख सकते हैं और वैज्ञानिक सलाह प्राप्त कर सकते हैं। इससे पशुपालन इस क्षेत्र में स्थायी आय का स्रोत बन रहा है।

भविष्य की दिशाः स्मार्ट फार्मिंग का विस्तार

आने वाले वर्षों में पशु चिकित्सा और अधिक आधुनिक होने वाली है। रोबोटिक मिल्किंग सिस्टम, ऑटोमेटेड फ़ीडिंग मशीनें, ए.आई. आधारित रोग पूर्वानुमान, क्लाउड आधारित डेटा बैंक, डिजिटल प्रजनन प्रबंधन और स्मार्ट डेयरी फार्म पशुपालन को पूरी तरह बदल देंगे। इस डिजिटल भविष्य में किसान केवल निगरानी करेंगे, जबकि अधिकतर काम मशीनें और सॉफ्टवेयर संभालेंगे।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने पशु चिकित्सा सेवाओं को नया रूप, नई ऊर्जा और नई गति दी है। आज उपचार तेज़, सुलभ और वैज्ञानिक हो चुका है। डिजिटल उपकरण न सिर्फ पशुओं को स्वस्थ रख रहे हैं, बल्कि किसानों की आय बढ़ा रहे हैं और ग्रामीण विकास को एक नई दिशा दे रहे हैं। आने वाले समय में पूरी तरह डिजिटल वेटरनरी हेल्थ सिस्टम की उम्मीद की जा रही है–जो आधुनिक, सटीक और भविष्यवादी पशुपालन की मजबूत नींव बनेगा।

बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

ब्लाइंड टी20 विश्व कप जीतने वाली भारतीय महिला टीम से पीएम मोदी ने की मुलाकात

भारतीय महिला दृष्टिबाधित टीम ने नेपाल को हराकर पहला ब्लाइंड टी20 विश्व कप जीता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व कप जीतने वाली खिलाड़ियों से मुलाकात की और उन्हें उनकी जीत की बधाई दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी खिलाड़ियों और विश्व कप की ट्रॉफी के साथ तस्वीर खिंचवाई। प्रधानमंत्री को खिलाड़ियों ने अपना हस्ताक्षरित बल्ला सौंपा। पीएम ने गेंद पर अपना हस्ताक्षर भी किया। प्रधानमंत्री ने एक-एक कर सभी खिलाड़ियों के साथ मुलाकात की और उनके साथ विश्व कप से जुड़े किस्सों को सुना। सभी खिलाड़ी पीएम के साथ बेहद सहज नजर आईं।मुलाकात के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने सभी खिलाड़ियों को अपने हाथ से मिठाई खिलाई।

भारतीय महिला दृष्टिबाधित क्रिकेट टीम ने कोलंबो में खेले गए मुकाबले में नेपाल को 7 विकेट से हराया। टॉस जीतकर भारतीय टीम ने पहले फिल्डिंग करने का फैसला किया था। नेपाल ने 20 ओवर में 5 विकेट पर 114 रन बनाए थे। भारतीय टीम ने 12.1 ओवर में लक्ष्य हासिल कर लिया और ऐतिहासिक जीत हासिल की।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने इसी महीने 2 नवंबर को दक्षिण अफ्रीका को हराकर पहली बार वनडे विश्व कप का खिताब जीता था। उस जीत के ठीक 21 दिन बाद दृष्टिबाधित महिला क्रिकेट टीम का खिताब जीतना क्रिकेट की हर श्रेणी में भारत के बढ़ते दबदबे को दिखाता है।

भारतीय दृष्टिबाधित टीम ने सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हराया था। नेपाल की टीम पाकिस्तान को हराकर फाइनल में पहुंची थी। भारतीय टीम ने इस टूर्नामेंट में एक भी मैच नहीं हारा। भारत ने लीग मैचों में श्रीलंका को 10 विकेट से, ऑस्ट्रेलिया को 209 रन से, नेपाल को 85 रन से, अमेरिका को 10 विकेट से, पाकिस्तान को 8 विकेट से हराया। इसके बाद सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया को 9 विकेट से और फाइनल में नेपाल को 7 विकेट से हराकर खिताब जीता। ●

छत्तीसगढ़ की संजू ने संघर्षों से निकलकर रचा इतिहास

केराकछार गांव की शांत गलियों से उठी एक लड़की ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का परचम लहराया है। मौजूद जानकारी के अनुसार, छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले की संजू देवी ने केवल अपने खेल कौशल से ही नहीं, बल्कि संघर्षों के बीच उठाए गए फैसलों से भी दुनिया का ध्यान खींचा है। हाल ही में ढाका में संपन्न हुए महिला कबड्डी वर्ल्ड कप 2025 के फाइनल में भारत की जीत के साथ संजू को 'मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर' के खिताब से सम्मानित किया गया है।गौरतलब है कि भारत ने इस टूर्नामेंट का पहला संस्करण भी 13 साल पहले जीता था, लेकिन इस बार टीम में शामिल युवा खिलाड़ियों की चमक अलग ही दिखाई दी है। संजू ने 17 साल की उम्र में खेती करने वाले परिवार की आर्थिक मुश्किलों के बीच पढ़ाई और कबड्डी के बीच चुनाव करना पड़ा था। वह बताती हैं कि परिवार की उम्मीदें और खेल के प्रति दिलचस्पी दोनों साथ चलते रहे, लेकिन फैसला आसान नहीं था। ●

नहीं रहे हिन्दी सिनेमा के 'ही-मैन'

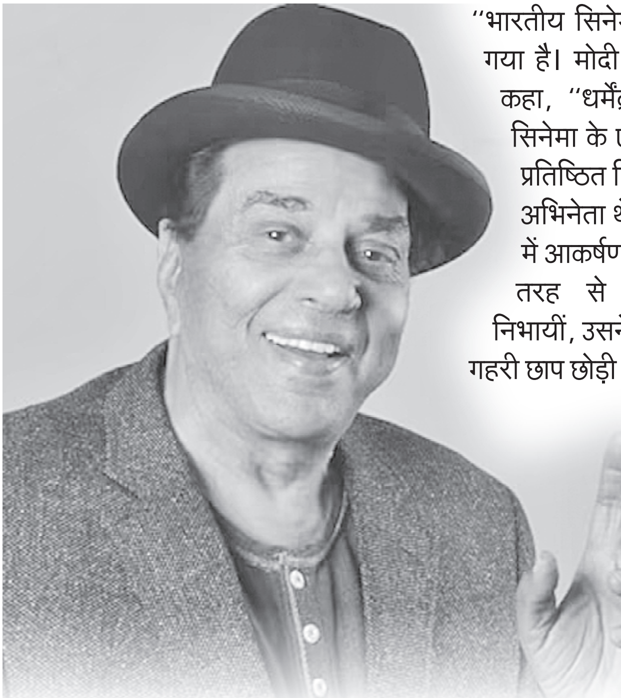

बॉलीवुड के ही-मैन कहे जाने वाले मशहूर एक्टर धर्मेंद्र का 24 नवंबर को 89 साल की उम्र में निधन हो गया। एक्टर के परिवार के एक स्पोक्सपर्सन ने इस खबर को कन्फर्म किया। शोले एक्टर को इस महीने की शुरुआत में 10 दिनों से ज़्यादा समय तक मुंबई के ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। हालांकि, उनकी सेहत में सुधार हुआ था, और उन्हें इलाज के लिए घर वापस ले जाया गया था।

धर्मेंद्र के निधन से जुड़ी खबर की जानकारी मुंबई में पुलिस ने दी। उनके परिवार की ओर से अभी तक इसकी पुष्टि नहीं की गयी है। धर्मेंद्र पिछले कुछ वक्त से बीमार थे और मुंबई के एक अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। परिवार ने इस महीने की शुरुआत में घर पर ही उनका इलाज जारी रखने का निर्णय लिया था। वह आठ दिसंबर को 90 वर्ष के हो जाते। उनका फिल्मी करियर 65 वर्षों का रहा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने धर्मेंद्र को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनके निधन से ''भारतीय सिनेमा में एक युग का अंत'' हो गया है। मोदी ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''धर्मेंद्र जी का निधन भारतीय सिनेमा के एक युग का अंत है। वह एक प्रतिष्ठित फिल्मी शख्सियत और अद्भुत अभिनेता थे जिन्होंने अपने हर किरदार में आकर्षण और गहराई पैदा की। जिस तरह से उन्होंने विविध भूमिकाएं निभायीं, उसने अनगिनत लोगों के दिलों में गहरी छाप छोड़ी।''

सलमान खान और उनके पिता एवं पटकथा लेखक सलीम खान भी श्मशान घाट पर देखे गए। धर्मेंद्र के परिवार ने अभी तक इस खबर पर कोई बयान नहीं दिया है। उन्होंने इस महीने की शुरुआत में धर्मेंद्र के निधन की खबर देने के लिए मीडिया की आलोचना की थी और उनकी निजता का सम्मान करने का अनुरोध किया था। कई मीडिया संस्थानों ने खबर दी थी कि धर्मेंद्र का 11 नवंबर को निधन हो गया था लेकिन अभिनेता को अगले दिन अस्पताल से छुट्टी दे दी गई थी और तब से उनका घर पर ही इलाज चल रहा था।

पंजाब में 1935 में जन्मे धर्मेंद्र का असली नाम धरम सिंह देओल था और उनका फिल्मी करियर छह दशक से ज्यादा का रहा, जिसमें उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में काम किया। उन्होंने ''शोले'', चुपके-चुपके , सत्यकाम , अनुपमा , सीता और गीता जैसी कई हिट फ़िल्मों में मुख्य भूमिकाएं निभाईं।

एक्शन, रोमांस और हास्य में अपनी बहुमुखी प्रतिभा के लिए उन्हें व्यापक रूप से सराहा गया। धर्मेंद्र के परिवार में उनकी पत्नी प्रकाश कौर, हेमा मालिनी, बेटे सनी और बॉबी देओल तथा बेटियां विजेता, अजीता, एशा और अहाना हैं।

आईएएस का सपना छोड़ यामी ने अपनाया एक्टिंग

यामी गौतम आज बड़े पर्दे की जानी-मानी अभिनेत्री हैं। उनकी दमदार अदाकारी लाखों लोगों को अपना दीवाना बना देती है, लेकिन बहुत कम लोग ही जानते होंगे कि उन्होंने एक्टिंग को कभी भी अपने करियर के तौर पर नहीं देखा था। छोटे से शहर हिमाचल प्रदेश से निकलकर, पढ़ाई और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच यामी ने एक समय आईएएस अधिकारी बनने का सपना देखा था। लेकिन, जिस तरह से वह बॉलीवुड की स्टार बन गईं, यह कहानी बेहद प्रेरणादायक है। यामी गौतम का जन्म 28 नवंबर 1988 को हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में हुआ था। उनका परिवार कुछ सालों बाद चंडीगढ़ आ गया, जहां यामी ने अपनी स्कूल की पढ़ाई पूरी की। यामी के पिता, मुकेश गौतम, पंजाबी फिल्म डायरेक्टर थे, और उनके घर में फिल्मों और कला के प्रति रुचि स्वाभाविक रूप से थी। यामी की मां, अंजली गौतम, ने हमेशा पढ़ाई और करियर को लेकर प्रोत्साहित किया। यामी हमेशा से पढ़ाई में अच्छी थीं और उनका सपना बड़ा अफसर बनने का था। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद यामी ने लॉ में एडमिशन लिया और एक समय तक उनका लक्ष्य आईएएस बनना था। वह इस सपने के लिए पूरी मेहनत कर रही थीं और यही सोच कर उन्होंने लॉ की पढ़ाई भी शुरू की। 20 साल की उम्र में यामी के जीवन में एक बड़ा बदलाव आया। दोस्तों के कहने पर उन्होंने परिवार के सामने बड़े अफसर बनने का सपना बदलकर फिल्मों और अभिनय की दुनिया में काम करने की इच्छा जताई। इसके बाद, उन्होंने मुंबई में एक्टिंग सीखना शुरू किया और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगीं।

UPI

UNIVERSAL

Plasto Industries

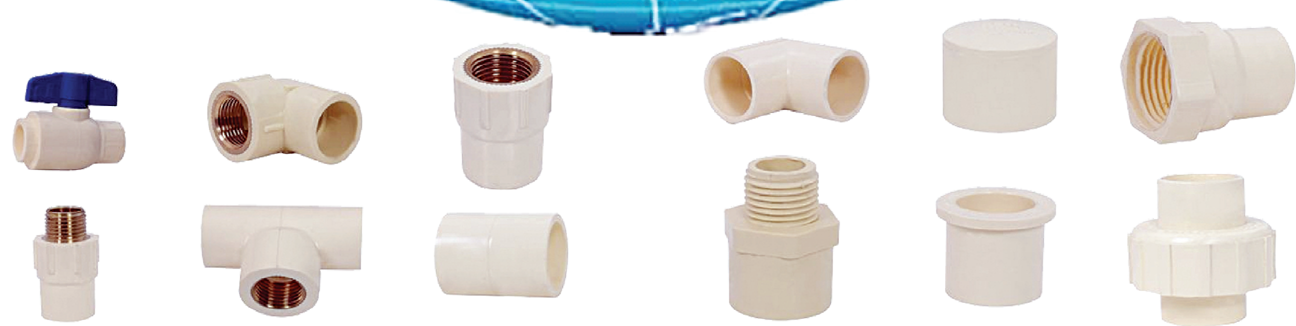

सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309 मो0 - 9811191394

Quality through Technology & Innovation

D.K. Singh
Managing Director

Kamlesh Tiwari
Manager

Mr. D.K. Singh **Mob. 9793566999**

Excel Pharmaceuticals

B.O. Plot No. 147, Phase-1, Chandigarh
E-mail : excelpharma.singh@gmail.com, www.excelpharmaceuticals.com